आस्तिकता और उपासना

इस सृष्टि का अधिपति भगवान् है। उसने हर वस्तु को बनाकर उसकी सीमा, मर्यादाएँ बना दी हैं। सृष्टि का हर पदार्थ एवं प्राणी अपनी नियत मर्यादाओं में रहकर, ईश्वरीय प्रयोजन को पूरा करता रहता है। एक मनुष्य ही है, जो अपनी बुद्धि और प्रकृति का दुरुपयोग करता है। कुमार्गगामिता अपनाकर अपने तथा दूसरों के लिए संकट उत्पन्न करता है। इस पथ-भ्रष्टता से बचने के लिए धर्म की रचना आवश्यक हुई। ऋषियों ने बड़ी दूरदर्शिता के साथ धर्म का कलेवर खड़ा किया, ताकि उस पुण्य चेतना द्वारा मनुष्य को दुर्बुद्धि एवं दुष्प्रवृत्तियों से बचाया जा सके। धर्म का सारा ढाँचा, सारी प्रथा-परंपराएँ, मान्यताएँ, आस्थाएँ केवल इसी प्रयोजन के लिए हैं कि मनुष्य अपनी नियत निर्धारित मर्यादाओं के भीतर रहकर जीवनयापन करे।

धर्म का प्रथम आधार है-आस्तिकता, ईश्वर विश्वास। परमात्मा की सर्वव्यापकता, समदर्शिता और न्यायशीलता पर आस्था रखना, आस्तिकता की पृष्ठभूमि है। यह मान्यता मनुष्य की दुष्प्रवृत्तियों पर अंकुश रख सकने में पूर्णतया समर्थ होती है। सर्वव्यापी ईश्वर की दृष्टि में हमारा गुप्त-प्रकट कोई आचरण अथवा भाव छिप नहीं सकता। समाज की, पुलिस की आँखों में धूल झौंकी जा सकती है, पर घट-घटवासी परमेश्वर से तो कुछ छिपाया ही नहीं जा सकता। समदर्शी परमेश्वर न्यायकारी भी है, उसकी न्यायव्यवस्था हर किसी के लिए है। हर अपराधी को बिना राग-द्वेष के उचित दंड देती है। ईश्वर को हमारा हर पाप, अपराध विदित होता है और वह आज या कल हमारे पापों का दंड भी देकर रहेगा। अदालत और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुलिस से बच सकते हैं, परमेश्वर से नहीं। यह मान्यता हमें पापों से बचाती है। हमारी अधिकांश दुष्प्रवृत्तियाँ इसलिए चलती रहती हैं कि राजदंड या समाजदंड से चतुरता के आधार पर बच जाते हैं। ऐसी चतुरता सर्वव्यापी और न्यायकारी ईश्वर के सामने नहीं चल सकती। इस तथ्य पर जो भी विश्वास करेगा, वह पाप से डरेगा और मर्यादाओं से रहने के लिए, सज्जनोचित, सभ्य-जीवन जीने के लिए विवश होगा।

एक बार कबीर से किसी ने पूछा-आप स्कूल तक नहीं गए, कलम तक नहीं छुई, फिर इस असाधारण बौद्धिक प्रतिभा का कारण क्या है? कबीर बोले-आस्तिकता, ईश्वर में विश्वास। मनुष्य में आत्मिक क्षमता के साथ बौद्धिक प्रतिभा का विकास भी अनिवार्य है।

आस्तिकता धर्म का इसलिए प्रथम आवश्यक एवं अनिवार्य अंग माना गया है कि उससे हमारा सदाचरण अक्षुण्ण बना रह सकता है। सत्कर्मों का सत्परिणाम या दुष्कर्मों का दुष्परिणाम आज नहीं, तो कल मिलेगा ही, यह मान्यता वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन में नीति और कर्त्तव्य का पालन करते रहने की प्रेरणा देती है। सत्कर्म करने वाले को आज यदि प्रशंसा, मान्यता या सफलता नहीं मिली है, तो ईश्वर भविष्य में देगा ही, यह आस्था उसे निराश नहीं होने देती और असफलताएँ मिलने पर भी वह सदाचरण के पथ पर आरूढ़ बना रहता है। इसी प्रकार कुकर्मी निर्भय नहीं हो पाता। उसे राजदंड से बच जाने पर भी यह भय बना रहता है कि यहाँ नहीं तो वहाँ नरक की असह्य यंत्रणाएँ सहने के लिए विवश होना पड़ेगा। ईश्वर के दरबार में किसी के साथ रियायत नहीं बरती जाती। वह समदर्शी है। सभी उसके अपने और सभी बिराने हैं। जो आचरण की कसौटी पर खरा सो परमप्रिय, जो उस कसौटी पर खोटा सो घोर शत्रु। समदर्शी ऐसे ही होते हैं। वे खुशामद या रिश्वत से विचलित नहीं होते। उन्हें कोई व्यक्ति प्रिय-अप्रिय, नीति और अनीति के कारण ही होते हैं। यह मान्यताएँ यदि ठीक तरह जनमानस में प्रवेश कर सकें, तो निश्चय ही व्यक्ति दुराचरण से विरत रहेगा और नीति एवं सदाचरण का ही अवलंबन ग्रहण करेगा। आस्तिकता की सबसे बड़ी देन यही है। इसलिए उसे धर्म का प्रधान अंग माना गया है। व्यक्ति की उन्नति एवं समाज की शांति, सज्जनता एवं मर्यादा पालन पर निर्भर है, यह दोनों ही प्रेरणाएँ आस्तिकता में सन्निहित हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संसार बुराई में जल रहा है और आप राम नाम का उपदेश दे रहे हैं, एक नास्तिक ने गाँधी जी से कहा। गाँधी जी ने उत्तर दिया-सोचो, जब थोड़ी आस्तिकता शेष है, तब तो लोगों का यह हाल है, जब आस्तिकता बिलकुल न रहेगी, तब क्या होगा?

आज हर दिशा में विकृतियों की भरमार है। आस्तिकता भी विकृत हो गई है। लोग मान बैठे हैं कि थोड़ी सी चापलूसी करने या भेंट-पूजा की छोटी-मोटी रिश्वत देकर ईश्वर को अपना पक्षपाती बनाया जा सकता है और फिर उससे अयोग्य होते हुए भी बड़ी-बड़ी उपलब्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं, तथा पापों के दंड से बचने की छूट पाई जा सकती है। अनेक तरह के कर्मकांडों का प्रचलन उपरोक्त दो कल्पनाओं के आधार पर ही चल पड़ा है। यदि यह कल्पना सही हो, तो फिर ईश्वर का मूलस्वरूप ही विकृत हो जाएगा, फिर उसे पक्षपाती, रिश्वतखोर, खुशामद पसंद, अव्यवस्था और अंधेर फैलाने वाला कहा जाएगा। ऐसी आस्तिकता विघातक सिद्ध होगी, हो भी रही है। लोग प्रसाद या बकरी, मुर्गी भगवान पर चढ़ाते हैं, स्तुति गान इसलिए करते हैं कि इनसे प्रसन्न होकर हमें अनेक तरह के वरदान मिल जाएँ। भले ही हम उन्हें प्राप्त करने के अयोग्य हों अथवा कर्मफल के कारण उन सफलताओं से वंचित रहने की स्थिति में हो, तो भी अपनी पूजा-पत्री उन अवरोधों को हटाकर हर प्रकार की मनोवांछनाएँ तुर्त-फुर्त पूरी करने की व्यवस्था बना दे। आज की विकृत आस्तिकता इसी रूप में फैली पड़ी है। लोग इसी आधार पर पूजा-पाठ का आडंबर चलाते हैं। यदि अभीष्ट मनोरथ सफल नहीं होता या देर लगती दीखती है, तो झल्लाकर पूजा उपकरणों को ही फेंक देते हैं और हजारों गालियाँ सुनाते हैं। बाल-बुद्धि से प्रेरित इस आस्तिकता का न कोई आधार है न कोई आदर्श।

वाल्मीकि डाकू थे। प्रतिदिन पाँच व्यक्तियों का वध कर लूटना उनके लिए आवश्यक था। एक दिन महर्षि नारद वहाँ आए और उन्होंने कहा-तुम्हारी पाप की कमाई सभी खाते हैं, पर वे पाप के भागीदार भी होंगे या नहीं ? वाल्मीकि पूछने गए, तो परिवार वालों ने मना कर दिया। इससे उन्हें संसार की असारता का पता चल गया। वे संत हो गए और रामायण जैसे आस्तिकता के महान् ग्रंथ के प्रणेता बने।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आस्तिकता की आस्था को परिपक्व करने के लिए उपासना का आश्रय लिया जाता है। पूजा, ध्यान, जप, देव-दर्शन, भगवत् गुणगान, तत्त्व-चर्चा, आत्मचिंतन, कीर्तन एवं अनेक कर्मकांडों द्वारा इस का प्रयत्न किया जाता है कि ईश्वर को भूले रहने की चूक से बचा जा सके। भगवान की स्मृति मस्तिष्क में बनी रहे, तो इस बात पर भी विचार उठना ही चाहिए कि आत्मा का परमात्मा से क्या संबंध है, उसने हमें किस काम के लिए संसार में भेजा है? जीवन का उद्देश्य क्या है? शांति और प्रगति के लिए ईश्वरीय आज्ञाओं के पालन और मर्यादापरक अनुशासन हमारे लिए क्यों अनिवार्य है? ईश्वर को भूले रहने पर इनमें से एक भी प्रश्न नहीं उठता और मनुष्य, जीवन बर्बाद कर देता है। यह एक बहुत बड़ी क्षति है। इसलिए नास्तिकता को, ईश्वरीय सत्ता अमान्य करने को एक पाप बताया गया है।

एक व्यक्ति एक दिन एक साधु के पास जाकर बोला-भगवन्! मुझे भगवान की अनुभूति क्यों नहीं होती? साधु ने उत्तर दिया, बोला-बेटा ! यह पाँच-सात पत्थर लेकर मेरे साथ पहाड़ी पर ऊपर आओ, वहीं तुम्हारी बात का उत्तर देंगे। वह आदमी सिर पर पत्थर रखकर साधु के साथ चल पड़ा, पर थोड़ी ही दूर चढ़कर वह हाँफने लगा। साधु ने एक पत्थर फेंक दिया। वजन कुछ हल्का हो जाने से वह थोड़ा और चढ़ गया, पर फिर थकान के मारे उसका चढ़ना मुश्किल हो गया। इसी तरह करते-करते ऊपर तक पहुँचने में सारे पत्थर फेंकने पड़े। ऊपर जाकर साधु बोला-बेटा ! जिस तरह पत्थरों के भार के कारण तुम ऊपर नहीं चढ़ सके, उसी तरह काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि सांसारिक आकर्षणों के रहते कोई ईश्वर अनुभूति नहीं कर सकता।

उपासना का अर्थ है-समीप बैठना, हर आस्तिक को थोड़ा समय उपासना के लिए लगाना चाहिए। इन क्षणों में अनुभव करना चाहिए कि जो कुछ शरीर, मन, धन, वर्चस्व-वैभव हमारे पास है, वह सब ईश्वर का है। उसका न्यूनतम अंश निर्वाह के लिए लेकर, शेष सभी भगवान के लिए अर्पित करना है। भक्ति का अर्थ है-प्रेम और प्रेम का अर्थ है-सेवा या अनुदान। सच्चा भक्त ईश्वर-प्रदत्त उपहारों में से न्यूनतम ही अपने लिए लेता है और शेष उसी के चरणों में अर्पित कर देता है। आत्मा अर्थात् एक परम आत्मा, अर्थात् शाश्वत आत्मा की समग्र सत्ता। इसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को विश्वास भी कहते हैं। विश्वात्मा के प्रति आत्मसमर्पण का नाम उपासना है। इसकी प्रतिक्रिया यह होनी चाहिए कि हम केवल अपने लिए नहीं, समस्त विश्व के लिए, प्राणी मात्र के हित के लिए, समाज की सुख-सुविधाएँ बढ़ाने के लिए जिएँ और विचारणा तथा कार्यपद्धति ऐसी रखें, जिससे परमात्मा को ही नहीं समस्त आत्माओं को प्रसन्नता एवं संतुष्टि प्राप्त हो।

संत एकनाथ दो घड़ों में गंगाजल लिए रामेश्वरम् जा रहे थे। मार्ग में बीमार और प्यास से तड़पता एक गधा पड़ा था, उसने एकनाथ की ओर देखकर कहा-महाराज ! प्यास के मारे मरा जा रहा हूँ, पानी पिला दो। एकनाथ ने एक-एक कर दोनों घड़े गंगाजल पीड़ा से छटपटाते गधे को पिला दिए। गंगा जल पीकर गधा बोला-एकनाथ ! मैं गधा नहीं रामेश्वरम् हूँ। यहाँ पड़ा-पड़ा लोगों की परीक्षा कर रहा था कि लोग मेरे पत्थर के शरीर पर पानी चढ़ाते हैं या प्राणिमात्र की चेतना में समाए मुझ चेतन आत्मा के प्रति भी श्रद्धा रखते हैं।

उपासना करते समय हम भगवान से प्रकाश, अमृत और सत् की याचना करते हैं, यह तीनों ही शब्द सद्ज्ञान के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। ईश्वर हमें ऐसी प्रेरणा, शक्ति एवं उमंग प्रदान करें, जिनसे प्रेरित होकर हम महामानवों जैसे विचार एवं कर्म अपनाकर मनुष्य जीवन की सार्थकता सिद्ध कर सकें। भगवान की निकटता अनुभव करने के लिए की गई उपासना हमें दैवी गुणों से विभूषित होने की प्रेरणा देती है। ईश्वर उदारता, करुणा, सदाशयता, पवित्रता, न्यायनिष्ठा आदि विशेषताओं का सागर है। उसकी समीपता हममें वैसी ही विभूतियाँ उत्पन्न करें, यही कामना और मान्यता उपासना के समय में की जा सकती है। अपने साथ ईश्वर है, यह मानकर कोई भी व्यक्ति हर घड़ी निर्भय रह सकता है।

हमें आस्तिक होना चाहिए और प्रतिदिन थोड़ा समय निकालकर नियमित रूप से उपासना करनी चाहिए, ताकि ईश्वर और उसके निर्देशों को भलीभाँति हृदयंगम किए रह सकें। फलस्वरूप व्यक्तिगत सदाचरण एवं सामाजिक कर्त्तव्य-पालन की प्रवृत्ति निरंतर बढ़ती रहे और सर्वत्र श्री, समृद्धि, प्रगति एवं शांति की परिस्थितियाँ उत्पन्न होती रहें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रश्न

१. ऋषि-मुनियों द्वारा धर्म की परिभाषा क्या बताई है ?
२. धर्म का प्रथम आधार क्या है ? इसकी पृष्ठभूमि बताएँ ?
३. ईश्वर के सामने हमारी चतुरता क्यों नहीं चल सकती ?
४. आस्तिक को ही धर्म का प्रथम आधार क्यों माना गया है ?
५. आज के युग में आस्तिकता किस तरह विकृत हो गई है ?
६. भगवान की उपासना व्यक्ति किस कारण करते हैं ?
७. आस्तिक की आस्तिकता को परिपक्व करने के लिए किन-किन बातों का आश्रय लिया जाता है ?
८. उपासना का क्या अर्थ होता है ? उस समय हमें मन में क्या अनुभव करना चाहिए ?
९. उपासना करते समय हम भगवान से क्या प्रार्थना करें ?
१०. सर्वत्र श्री, समृद्धि, प्रगति एवं शांति की परिस्थितियाँ उत्पन्न करते रहने के लिए हमें क्या करते रहना चाहिए ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देववाद और पूजा-अर्चा

भारतीय संस्कृति एक ही ब्रह्म को मानती है। वस्तुत: भगवान एक ही है। नाम उसके अनेक हैं। रूपों की कल्पना अलग-अलग मतानुसार अलग-अलग प्रकार की गई है, पर इससे ब्रह्म की एकता में कोई अंतर नहीं आता। अनेक देवता अनेक सत्ताएँ नहीं हैं, वरन् एक ही परमात्मा की शक्तियाँ भर हैं। अगर अनेक देवताओं के स्वतंत्र अस्तित्व होते, तो वे आपस में लड़ मरते और उनके अनुयायी परस्पर कभी एक न रह सकते। जिन लोगों ने भ्रमवश एक ब्रह्म को अनेक ब्रह्मों के रूप में समझा, उन्हीं ने देवताओं के स्वतंत्र अस्तित्व माने हैं और अनेक मत, संप्रदाय तथा पंथों को जन्म दिया है। इससे संस्कृति को भारी क्षति पहुँची है और अपना समाज अनेक संप्रदायों और मत-मतांतरों के रूप में बिखर कर दुर्बल हो गया। हमें वस्तुस्थिति समझनी चाहिए और एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति के श्रुति वचन को ध्यान के रखते हुए बहुदेववाद के भ्रम जंजाल से ऊपर सर्व शक्तिमान, सर्वव्यापी, न्यायकारी परब्रह्म परमेश्वर को एक सत्ता के रूप में जानना-मानना चाहिए।

सभी इंद्रियाँ आपस में झगड़ रही थीं और अपनी-अपनी श्रेष्ठता सिद्ध कर रही थीं। तब आत्मा बोली-तुम सब मेरे शरीर की अंग हो। लड़ने की अपेक्षा परस्पर हित की बात सोचो, तो मंगल होगा। शरीर की यह कहानी सुनाकर गुरु ने कहा-सभी देवता परमात्मा की ही शक्तियाँ हैं, उनके छोटे-बड़े के झगड़े में न पड़कर, जो उसके आदर्श अपने जीवन में धारण करते हैं, उन्हीं का देवाराधन सार्थक होता है।

अनेक देवताओं की अंलकारिक कल्पना परोक्ष रूप में सद्गुणों और सत्प्रवृत्तियों की प्रतिष्ठापना के लिए है। उनके स्वरूप, वाहन, आयुध आदि के पीछे पहले की तरह अनेक रहस्य और अर्थ छिपे पड़े हैं, जिन्हें चर्चा का विषय बनाकर हम सब उस देवता के भक्त, अनुयायी बनकर वैसा ही आचरण करने की प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं। हर देवता इसी प्रकार की प्रेरणा, शिक्षा एवं अभिव्यंजना का रहस्यवाद अपने भीतर छिपाए हुए हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शंकर जी को लीजिए। उनके सिर में से निकलती गंगा पवित्रता से परिपूर्ण गंगा का प्रतिनिधित्व करती है। मस्तक पर चंद्रमा शांति-शीतलता और प्रकाश का प्रतीक है। हमारा मस्तिष्क ज्ञान गंगा की तरंगें प्रवाहित करें, संतुलित शांत, शीतल और प्रकाशपूर्ण रहे, तो समझना चाहिए कि शंकर जी की भक्ति एक दिव्य अनुभूति के रूप में हमारे में उत्पन्न हो चली। विष संसार में बिखरा पड़ा है। अपने को भी उस विष से संपर्क रहेगा ही। उसे उगलें, तो कटुता और विद्वेष बढ़ेगा। पेट में पीते हैं, तो आत्मघात होता है। इसलिए उचित यही है कि इसे गले में ही अधर टाँगे रखा जाए। अपने को न घृणा की आग में जलाएँ और न क्रोध से दूसरों को संतप्त करें। शंकर जी इसी तत्त्वज्ञान के प्रतीक हैं। विष उनके कंठ में स्थापित है। समुद्र मंथन से निकले विष से संसार को बचाने के लिए उन्होंने विष को अपने कंठ में धारण किया और नीलकंठ कहलाए। विश्वशांति के लिए हमें ऐसा ही दुस्साहस कर सकने की हिम्मत बँधे, तो समझना चाहिए कि शंकर जी की भक्ति का उदय अपने अंत:करण में हो रहा है।

सर्प शंकर जी के सहचर हैं, उनके गले से लिपटे रहते हैं। दुष्ट और दुर्गुणी व्यक्तियों को प्रेम, सहानुभूति, करुणा और समीपता से ही सुधारा जा सकता है। यह निष्कर्ष शिवजी की सर्प-समीपता से निकाला जा सकता है। उनके साथी, सहचर, भूत-प्रेत, तनु छीन कोउ अतिपीन, पावन कोउ अपावन तन धरे, जैसे थे। पिछड़े हुए, उलझे हुए टूटे हुए, निराश और गिरे हुए लोगों को उपेक्षा के गर्त में नहीं फेंका जाना चाहिए। शिवजी अपनी बारात में इन्हीं चित्र-विचित्र नंदी गणों को लेकर गए थे। पिछड़ेपन को दूर करने के लिए हमारी गतिविधियाँ भी ऐसी ही होनी चाहिए। मरघट में निवास, शरीर पर भस्म लेपन, गले में मुंडमाला यह बताती है कि मृत्यु को भुलाया न जाए। जीवन की नश्वरता को ध्यान में रखा जाए और मरणोत्तर जीवन में अपनी क्षुद्रताएँ कितना संकट खड़ा कर सकती है, उसे बार-बार विचारता रहा जाए। मृत्यु की तैयारी में जीवन का सदुपयोग यही तत्त्व ज्ञान है, जिसके आधार पर व्यक्ति धार्मिकता और आध्यात्मिकता को सच्चे मन से अपना सकता है। शंकर जी का अनुगमन करने वाला भक्त मरघट में निवास भले ही न करे, भस्म लेपन भले ही न करे, पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन की तरह मृत्यु को भी स्वागत योग्य बनाने की तैयारी जरूर करता होगा।

शंकर जी सिंह चर्म पहनते है और उनका वाहन वृषभ है। सिंह के समान निर्भीक, साहसी और शूरवीर ही अपने कलेवर को भगवान का परमप्रिय आवरण बना सकने में सफल होते हैं। वृषभ के समान परिश्रमी, संतुलित और उत्तरदायित्वों का भार कंधे पर प्रसन्नतापूर्वक वहन करने वाले लोग ही भगवान के वाहन, पार्षद, निकटवर्ती हो सकते हैं। सद्गुणों के साथ परमेश्वर का अनुग्रह, प्रेम, प्रकाश और सान्निध्य जुड़ा हुआ है। यह तथ्य उसके शरीर पर धारण किए हुए व्याघ्रचर्म और वाहन वृषभ के अलंकार से स्पष्ट होता है। रामायण के मंगलाचरण में तुलसीदास जी ने 'भवानी शंकरौवंदे श्रद्धा विश्वास रूपिणौ' की अभिव्यक्ति में भवानी को श्रद्धा और शंकर को विश्वास के रूप में प्रतिपादित किया है।

इसी प्रकार अन्यान्य देवताओं के पीछे अलंकारिक रहस्यवाद छिपा पड़ा है। ब्रह्माजी ने परास्त देवताओं को इकट्ठे कर उनकी थोड़ी-थोड़ी शक्ति इकट्ठी करके उससे दुर्गा का सृजन किया और जिसके द्वारा असुरों का पराभव और देवताओं का उत्कर्ष संभव हुआ। इस पौराणिक उपाख्यान में सज्जनों को अपनी संघशक्ति विकसित करने और उसके द्वारा अगणित आपत्तियों से छुटकारा पाने का निर्देश है। रामभक्ति के लिए ईश्वरीय आदर्शों और कर्तव्यों के लिए सर्वतोभावेन समर्पण करने वाले हनुमान वानर जैसी क्षुद्र स्थिति के होते हुए भी भगवान के परमप्रिय बने। यह रहस्य उन्हें कान खोलकर सुनना और आँख खोलकर देखना चाहिए, जो थोड़ा-सा नाम, जप, पूजा, प्रसाद या स्तुति प्रशंसा की लकीर पीटकर ईश्वरीय अनुग्रह जैसे महान् अनुदान की कल्पना-जल्पना करते रहते हैं।

सोमनाथ लुटा तब भी भगवान कुछ न कर सके, फिर भी आप मूर्ति पूजा को महत्त्व देते हैं? एक आदमी ने मदनमोहन मालवीय से प्रश्न किया। मालवीय जी बोले-'क' के माने कबूतर और 'ख' के माने खरगोश भी तो नहीं होता, फिर भी बच्चों को यही क्यों पढ़ाया जाता है। यह तो प्रारंभिक शिक्षण की विधि है। अल्पबुद्धि बच्चे इसी से शिक्षा की ओर आकर्षित होते हैं। मालवीय जी बोले-उपासना और ध्यान की उच्चस्तरीय साधना के लिए इसी प्रकार मूर्ति-पूजा भी प्रारंभिक अनिवार्य आवश्यकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देवपूजा में प्रयुक्त होने वाले पदार्थ और कर्मकांडों के पीछे भी धर्म और अध्यात्म के पथ पर चलने वाले साधकों को बहुत ही महत्त्वपूर्ण शिक्षण मिलेगा। भगवान के चरणों पर पुष्प ही चढ़ते हैं और उनके गले में पुष्पमाला ही पहनाई जाती है। पुष्प अर्थात् सुगंधित, हँसता, खिलता, सत्यं, शिवं, सुंदरम् पर आधारित आत्मिक सौंदर्यसंपन्न व्यक्ति। उस स्तर का व्यक्ति जो अपने पेट का मोह छोड़कर अपनी गरदन नुचवाता हुआ, सुई धागों से पेट छिदवाता हुआ त्याग बलिदान के मार्ग पर अग्रसर होता है, तो वह ईश्वर के चरणों में स्थान पाने तथा छाती से लगने में समर्थ होता है। पूजा में प्रयुक्त होने वाले पुष्प यही शिक्षण उपासक को देते हैं।

चंदन अर्थात् समीपवर्ती झाड़ियों को अपने समान सुगंधित बनाने वाली क्षमता से संपन्न, जो घिसे जाने और जलाए जाने पर भी रोष-विद्वेष पास न भटकने दे, वरन् सुगंध ही फैलाता रहे, पूजा का अधिकारी हो सकता है और अर्चना को सार्थक बना सकता है। भगवान को केवल मीठे का ही भोग लगता है, मीठी वाणी, मीठा व्यवहार, मीठा आचरण, शिष्ट, विनम्र और मधुर व्यक्तित्व, यह सब सर्वतोमुखी मिठास है, जिसे देवता पसंद करते और प्रभावित होते हैं। दीपक अर्थात् स्नेह से भरा हुआ, स्वयं तिल-तिल जलकर दूसरों को प्रकाश देने वाला। देवमंदिर की शोभा दीपक से है, पूजा का वह एक महत्त्वपूर्ण अंग है। दीपक की प्रवृत्ति जिसके भीतर के जीवनक्रम में समाविष्ट हो गई, समझना चाहिए कि वह पूजा का साक्षात प्रतीक प्रतिनिधि बन गया।

ऊपर की पंक्तियों में संक्षिप्त रूप से एक ब्रह्म के अनेक अलंकारों को रूपकों की तरह, देवी-देवताओं के रूप में प्रस्तुत करने का एक ही प्रयोजन था, उसकी एक हलकी झाँकी कराई गई है। असंख्य देवी-देवताओं की ऐसी ही व्याख्या की जा सकती है। हमें उस गहराई तक प्रवेश करना चाहिए और उस तथ्य, संकेत एवं निर्देश को समझना चाहिए, जिसके आधार पर कि देवी-देवताओं की कल्पना की गई थी। सरस्वती अर्थात् ज्ञान, लक्ष्मी अर्थात् धन, काली अर्थात् बल। जीवन की प्रगति में ज्ञान, धन और बल का संपादन और सदुपयोग करने का प्रशिक्षण अलंकारिक रूप में उपरोक्त तीन देवियों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसी प्रकार अन्य देवताओं के पीछे भी समुन्नत जीवन की शिक्षा का तत्त्वज्ञान रहस्यवादी ढंग और अलंकारिक रूप से समझाया गया है। पूजा के उपकरण चंदन,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रोली, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य आदि के माध्यम से भी ईश्वरभक्ति के लिए हमें अपना भावनात्मक परिष्कार कैसे करना चाहिए, यही सब सिखाया गया है।

एक बंदर और सियार में दोस्ती थी। एक दिन वे दोनों जा रहे थे, तब रास्ते में एक कब्रिस्तान मिला। बंदर एक कब्र के पास जाकर खड़ा हो गया और आँख मूँदकर कुछ स्तुति-सी करने लगा। उसका ख्याल था, इससे सियार प्रभावित होकर उसकी विद्वत्ता का लोहा मानेगा, पर सियार ने समझा इसे बीमारी हो गई है। क्यों भाई, क्या पेट में दर्द है? बंदर झुक कर बोला-नहीं सियार भाई, यह मेरे पूर्वजों की समाधि है, मैं उनके बल, पौरुष की महानता का गुणानुवाद गा रहा था, ताकि मैं भी वैसा ही बनूँ।

सियार बोला-महोदय ! गुण गाने से नहीं आचरण में लाने से तुम महान् बन सकते हो।

देवताओं से तरह-तरह की मनौती माँगने और उन्हें खुशामद या रिश्वत के बाल प्रलोभनों से प्रसन्न करने के छिछोरेपन को हम जितनी जल्दी छोड़ दें, उतना ही उत्तम है। देवता न इतने मूर्ख या ओछे हो सकते हैं और न उन्हें सस्ते प्रलोभनों से बहलाया-फुसलाया जा सकता है। भावनात्मक प्रगति के आधार पर ही ईश्वर की देवशक्तियाँ हमारे अनुकूल बनतीं और अनुग्रह करती है, इस तथ्य को जितनी जल्दी समझ लिया जाए, उतना ही उत्तम है।

प्रश्न

१. विभिन्न देवता क्या हैं? उनकी अलंकारिक कल्पना क्यों की गई है?
२. 'एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्ति' से क्या समझते हो?
३. देववाद को तुम क्या समझते हो ?
४. शंकर जी की गंगा, चंद्रमा, विष, सर्प, मुंडमाला, सिंह, चर्म, वृषभ का अर्थ समझाइए?
५. दुर्गा की उत्पत्ति कैसे हुई?
६. पूजा में प्रयुक्त होने वाले पुष्प क्या शिक्षा देते हैं?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

७. चंदन एवं प्रसाद का क्या महत्त्व है?

८. सिद्ध कीजिए कि पूजा उपासना का प्रयोजन भावनात्मक परिष्कार है?

९. उपासक या भक्त निष्काम क्यों होना चाहिए?

१०. किस आधार पर मनुष्य देवशक्तियों के अनुकूल बनता है, और कैसे?

●●

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भूत, पलीत और उद्‌भिज देवी-देवता

श्रद्धा और विश्वास की आध्यात्मिक प्रगति के लिए बड़ी उपयोगिता है। इन सद्‌गुणों के आधार पर आत्मोत्कर्ष का पथ-प्रशस्त होता है, पर यह श्रद्धा-विश्वास, विवेक, तर्क और वास्तविकता पर निर्धारित होना चाहिए। अज्ञान, भ्रम और मिथ्यात्व पर आधारित श्रद्धा अंध-विश्वास एवं मूढ़ता मानी जाती है। उससे गलत दिशा में चल पड़ने और भयानक परिणाम भुगतने का क्रम बन जाता है। इस जाल-जंजाल में फँसा हआ भोला मनुष्य हर प्रकार हानि उठाता और घाटे में रहता है। हमें विवेक और तथ्य पर आधारित श्रद्धा-विश्वास अपनाना चाहिए, किंतु अंधविश्वास और मूढ़ता से बचना चाहिए।

भारतीय जनता का एक बहुत बड़ा भाग अशिक्षा, भोलेपन एवं धूर्तों के बहकाए जाने से, अंधविश्वास के भ्रम-जंजालों में बुरी तरह जकड़ा पड़ा है और जिनका कोई सिर-पैर नहीं है। ऐसी मिथ्या मान्यताओं को अपनाकर भारी विपत्तियाँ एवं हानियाँ आमंत्रित करता रहता है। आवश्यकता इस बात की है कि विवेक, तर्क, तथ्य और वास्तविकता को खोजने की स्वतंत्र चेतना हर मनुष्य में पैदा हो और जो निराधार मान्यताएँ अपना रखी हैं, उन्हें छोड़ने का साहस उत्पन्न किया जाए।

गाँव के बीचोंबीच पेड़ था। रात में उससे पत्थरों की वर्षा होती। लोग डर जाते, इसमें भूत है, इसलिए लोग रात में घर से बाहर नहीं निकलते। उन दिनों गाँव में खूब चोरियाँ हुईं। लोगों को विश्वास हो गया कि सारी करतूत पेड़ वाले भूत की है। एक दिन एक युवक ने हिम्मत की और पेड़ पर चढ़ गया, तो पता चला कि गाँव का ही एक व्यक्ति पत्थर बरसा रहा है। उसने उसे पकड़ लिया और अच्छी पिटाई की। गाँव वालों ने युवक के साहस की सराहना की।

अपने देश की पिछड़ी जनता में भूत-पलीतों और देवी-देवताओं की भीरू मान्यताएँ बेतरह जड़ पकड़े हैं। मरने के बाद भारतीय मान्यता के अनुसार प्राणी स्वर्ग-नरक में जाता या नया जन्म लेता है। कोई दुष्ट या अशांत आत्मा ही यदाकदा प्रेत बनता है और वह भी एकांत में कर्मफल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भोगकर नई गति पाता है। मनुष्यों को डराने वाले कुकृत्य करने की प्रेतों की प्रवृत्ति भी नहीं होती। अधिक से अधिक वे कभी अपने अस्तित्व का परिचय दे सकते हैं। जहाँ कहीं प्रेत-पितरों का धर्म-शास्त्रों में वर्णन है, इतना ही है। आजकल भूतों का दूसरा ही स्वरूप है। बीमारी अर्थात् भूत। कोई जरा भी बीमार हुआ कि भूतों का कुचक्र समझ लिया गया। ओझा, सयाने, दिवाने, तरह-तरह की किंबदंतियाँ गढ़कर भोले-मनुष्यों के मन में अंधविश्वास, भय और भ्रम पैदा करते हुए अपना उल्लू सीधा करते हैं। अपने देश में अब मानसिक रोग भी समाज की विषम परिस्थितियों ने बहुत बढ़ा दिए हैं। इन मानसिक रोगियों को भूत की कल्पना देने से उनका मन उसी पर जम जाता है और वे इस प्रकार का कथन एवं आचरण प्रस्तुत करते हैं, मानो सचमुच ही तन पर भूतों का आधिपत्य हो। लाखों व्यक्ति भ्रम-जंजाल में जकड़े हुए वास्तविक चिकित्सा से वंचित रहते हैं और उस भ्रम के दलदल में दिन-दिन अधिक गहरे उतरते हुए अपना स्वास्थ्य, समय, धन और बहुमूल्य प्राण गँवाते रहते हैं। भूतों का जंजाल किसी महामारी से कम, धन-जन की हानि नहीं करता। इसे एक पूरी मनोवैज्ञानिक विपत्ति ही मानना चाहिए। अशिक्षित ही नहीं, शिक्षित जनता का भी एक बहुत बड़ा भाग, इस व्यवस्था से बुरी तरह पीड़ित है।

विचारने की बात है कि यदि भूतों का ऐसा ही अस्तित्व और वर्चस्व रहा होता, तो वह मूढ़मति भारतीयों तक ही सीमित न रहते। बुखार, खाँसी की तरह संसार के हर देश में अपना प्रभाव दिखाते। शिक्षित और सभ्य जनता में भी उनका अस्तित्व दीख पड़ता, पर स्पष्टतः वे केवल पिछड़े लोगों तक ही सीमित हैं। बौद्धिक दृष्टि से समुन्नत लोगों में भूत-पलीत की चर्चा तक सुनने को नहीं मिलती। इससे प्रकट होता है कि यह एक भ्रमजंजाल मात्र है, जो आस्था का रूप धारण करके लाखों-करोड़ों व्यक्तियों के गले में फाँसी की तरह लिपटा बैठा है और उन्हें बुरी तरह पीड़ा देकर संत्रस्त कर रहा है। वास्तविकता को परखने का बारीकी से प्रयत्न किया जाए, 'शंका डायन-मनसा भूत' की उक्ति सच प्रतीत होती है। आशंकाएँ ही डायन-चुड़ैल बनती हैं और मन के संदेह, डर एवं भ्रम ही भूत बन जाते हैं। यदि विवेक, स्वतंत्र चिंतन एवं तथ्य खोजने की प्रवृत्ति हम में जग पड़े, तो रूस, इंग्लैंड, जर्मनी आदि प्रबुद्ध देशों की तरह अपने यहाँ भी कहीं भूत-पलीतों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की चर्चा सुनाई न पड़े और भारतीय जनता की एक भारी विपत्ति टल जाए।

कॉलेज के लड़के अमरूद तोड़कर खा जाते। उनसे बचाव के लिए मालिक ने अफवाह फैला दी कि इन पेड़ों में भूत रहता है। सब लड़के डर गए, पर एक लड़का सुबह से शाम तक बैठा रहा। बगीचे का मालिक पहुँचा और बोला-यहाँ क्या कर रहे हो, भूत आ जाएगा, तो मार देगा। युवक ने उत्तर दिया-सबेरे से प्रतीक्षा कर रहा हूँ, भूत अभी तक तो आया नहीं। अब देखता हूँ, कब आता है ? यह साहसी बालक विवेकानंद थे, जिन्होंने बगीचे के मालिक से वचन लिया कि वे फिर कभी इस तरह झूठ बोलकर बच्चों को डराएँगे नहीं।

ईश्वर एक है। उसकी विभिन्न कार्य-शक्तियों को अलंकारिक रूप में देव मानते हैं। भारतीय धर्म एक ईश्वरवादी है। देवताओं की जहाँ कहीं भी चर्चा है, वहाँ एक ईश्वर की विशेषताओं एवं शक्तियों का सचित्र उल्लेख मात्र है। बहुत स्वभावों और प्रकृतियों के बहुत देवता यदि रहे होते, तो उनके पारस्परिक विग्रह से ही भारी अशांति और उलझन पैदा हो जाती। तब वे देवता मनुष्यों के लिए एक विपत्ति बनकर खड़े हो जाते। अच्छा यही है कि ऐसी कोई बात नहीं, ईश्वर एक है। उसका प्रतिद्वंद्वी, साझीदार तथा सहायक कोई नहीं है। आवश्यकतानुसार उसके नाम, रूप भर हम गढ़ लेते हैं और अपनी श्रद्धा पूजा की रुचि-भिन्नता के अनुरूप समाधान करते हैं।

उपरोक्त तथ्य से प्रतिकूल भारत के पिछड़े वर्ग में असंख्य देवी-देवताओं की कल्पना है। इनकी संख्या बढ़ते-बढ़ते लाखों-करोड़ों तक पहुँच गई है। हर कुल, परिवार, गाँव के अलग कुल देवता, कुल देवी, ग्राम देवता, ग्राम देवी, बरसाती मेढ़कों की तरह उपज पड़े हैं। कुछ देवी-देवताओं के नाम तो पूजा की पुस्तकों में भी पढ़े-सुने जाते हैं, पर इन प्रचलित देवी-देवताओं का उनसे कोई संबंध नहीं, यह तो पावस की उद्‌भिज उपज की तरह यों ही अंधाधुंध उपज पड़े हैं। वे अपनी पूजा करने वालों का कुछ हित तो कर नहीं सकते, केवल डराते और त्रास देते रहते हैं। जरा-जरा सी बात पर अकारण नाराज होते हैं। बच्चे का मुंडन उसकी मठिया पर नहीं कराया तो नाराज, घर में कोई उत्सव हुआ और उनकी मर्जी की पूजा में भूल हो गई तो नाराज। नाराजी अर्थात् बीमारी और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कठिनाई। लोग डर के मारे उन्हें पूजते हैं। यदि विश्वास हो जाए कि कुल देवता, ग्राम देवता नाराज नहीं होते या नाराज होकर कुछ कष्ट नहीं पहुँचाते, अधिकांश में पूजने वाले उन्हें छोड़ बैठें, क्योंकि वे लाभ तो किसी का कुछ कर नहीं सकते। अधिकांश केवल हानि ही पहुँचाते हैं। देवता शब्द की कैसी दुर्गति है। देवता तो देने वाले को कहते हैं। जो व्यक्ति या शक्ति हमें कुछ देने में समर्थ हो, देव शब्द उन्हीं के लिए प्रयुक्त होता है, पर यहाँ तो परिभाषा ही दूसरी है। जो देने में असमर्थ हो, मिठाई, प्रसाद, माँस, मदिरा आदि के लिए लालायित रहे और उनके मिलने पर हर उचित-अनुचित मनोकामनाएँ पूरी करने लगे, न मिलने पर शत्रु जैसा आक्रमण करे, भला ऐसे भी कोई देवता होते हैं ?

एक राजा ने देखा कि शालिग्राम की मूर्ति के ऊपर तो चूहे फुदक रहे हैं। उसे लगा कि चूहा बड़ा देवता है अतएव वह उस दिन से चूहों की उपासना करने लगा। एक दिन एक बिल्ली चूहे को खा गई, तो उसने बिल्ली की पूजा शुरू कर दी। एक दिन एक कुत्ते ने बिल्ली को धर पटका और तब से राजा कुत्ते का उपास्य बन गया। एक दिन किसी बात पर नाराज होकर रानी ने कुत्ते की टाँग तोड़ दी, फिर क्या था, राजा ने रानी की ही पूजा प्रारंभ कर दी। एक दिन किसी भूल पर उन्होंने रानी को डाँटा, तो उन्हें ऐसा लगा कि मैं ही बड़ा देवता हूँ, अतः वे अपनी उपासना करने लगे। एक दिन बुखार में पड़े राजा के मुँह से अनायास ही निकल गया- हे राम ! और तब उन्होंने अनुभव किया कि भगवान ही सबसे बड़े देवता हैं। उस दिन से वे देवताओं की उपासना छोड़कर भगवान का भजन करने लगे।

भगवान की भक्ति, देवपूजा, एक उत्कृष्ट आस्था है। उससे आत्मिक प्रगति एवं नैतिकता के समर्थन में सहायता मिलती है, पर इन दिनों पिछड़े लोगों में प्रचलित देवी-देवताओं का स्वरूप उस धर्म आस्था के सर्वथा प्रतिकूल है। यह न आस्तिकता है, न पूजा। इसके पीछे न श्रद्धा है और न विश्वास। यह तो मूढ़ता, अज्ञान और अविश्वास के सम्मिश्रण से उत्पन्न हुआ, भ्रम जंजाल मात्र है, जिसमें अपने लाखों-करोड़ों लोग बुरी तरह ग्रस्त-त्रस्त हो रहे हैं। जीवन में वैसे ही विपत्तियाँ क्या कम हैं, जो भ्रम और अज्ञान के आधार पर भूत-पलीतों और उद्भिज देवी-देवताओं के रूप में एक मनोवैज्ञानिक संकट अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिए गढ़कर खड़ा करें और उसमें उलझ कर धन, समय, स्वास्थ्य की बर्बादी और अशांति का संकट ओढें।

एक आदमी बाहर तीर्थयात्रा पर जाने लगा, तो उसने अपना धन एक स्थान पर छिपा दिया और पहचान के लिए एक झण्डी गाढ़ दी। गाँव वाले थे अंधविश्वासी, उन्होंने समझा कहीं जाने पर झण्डी गाढ़नी चाहिए फलस्वरूप किसी को मील दो मील जाना होता, वह भी झण्डी गाढ़कर जाता। पहले वाला आदमी लौट कर आया, तो उसने झण्डियाँ ही झण्डियाँ गढ़ी देखी, तो बड़ा हैरानं हुआ, उसका धन मुश्किल से मिला। अंधविश्वास के कारण सभी को ऐसी ही परेशानी होती है।

अंधविश्वासों की एक बड़ी शृंखला जनमानस को संदेह और आशंकाओं के जाल में जकड़े हुए हैं। जादू-टोना, शकुन-ज्योतिष आदि की उलझनों में पड़े हुए कितने लोग अपना और दूसरों का क्या-क्या अनर्थ करते रहते हैं, इसकी एक लंबी करुण कथा है। समय आ गया है कि लोग स्वतंत्र चिंतन सीखें और विवेक से काम लें। तब इस प्रकार के भूत-पलीत और उद्‌भिज देवी-देवता जो हमारे मस्तिष्क और समाज पर बुरी तरह छाए हुए हैं, सहज ही हमें चिंतामुक्त करके वहीं विलय हो जाएँगे, जहाँ से उत्पन्न हुए थे।

प्रश्न

१. श्रद्धा और विश्वास किस प्रगति के लिए आवश्यक है?
२. अंधविश्वास की परिभाषा कीजिए?
३. भारतीय जनता का एक बहुत बड़ा भाग अंधविश्वास में उलझा हुआ है, क्या कारण है?
४. यदि यह मान लिया जाए कि भूत-प्रेत हैं, तो शिक्षित समाज पर उसका प्रभाव न होना क्या सिद्ध करता है?
५. ईश्वर कौन है? क्या ईश्वर अनेक हैं?
६. गाँवों के पिछड़े लोग किस प्रकार के देवी-देवताओं को मानते हैं तथा उनसे क्या हानियाँ हैं?
७. भूत-पलीत और इन उद्‌भिज देवी-देवताओं के जंजाल से छूटने के लिए क्या किया जाना चाहिए?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्मतंत्र को प्रगतिशील बनाएँ

जिस तरह व्यक्तिगत जीवन में वासना और तृष्णा दो बड़े प्रबल और प्रमादी तत्त्व हैं, उसी तरह सामाजिक जीवन में राजनीति और धर्म भी प्रमुख हैं। राजनीति का प्रभाव सर्वविदित है। शासन के सही-गलत होने और शासकों की प्रवृत्ति-मनोवृत्ति से देशों का ढाँचा और स्वरूप ही बदल जाता है। समाजगत अगणित समस्याओं का उद्‌भव और समाधान बहुत करके उसकी राजकीय स्थिति पर निर्भर रहता है। इस तथ्य को सभी लोग समझते हैं और राजनीति में प्रवेश करके अपना वर्चस्व बढ़ाने और देश की स्थिति को प्रभावित करने का प्रयत्न करते हैं।

अपने देश में राजनीति से भी बड़ा महत्त्व धर्म का है। इस देश की बहुत जनता अशिक्षित है और गाँवों में रहती है। उसके विचार-स्तर में यदि कोई तथ्य अवस्थित है, तो वह है धर्म की तथाकथित अभिरुचि। समाज विज्ञान, नागरिकता, देशभक्ति, अंतर्राष्ट्रीयता, कूटनीति, सहकारिता, नीतिशास्त्र, कानून, तर्क आदि की तो उन्हें जानकारी है नहीं। मस्तिष्क की पहुँच दैनिक जीवन की अनिवार्य समस्याओं से आगे बढ़कर केवल धर्म तक है। जब कभी महत्त्वपूर्ण चर्चा चलती है, विचार-विनिमय, शंका-समाधान तथा ऊहापोह होता है, तो उसका विषय धर्म के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता। घर-बाहर कभी भ्रमण को जाना हो, तो तीर्थयात्रा, धन का सदुपयोग करना हो, तो ब्राह्मण, साधुओं, देव मंदिरों में दान-पुण्य। समय को शुभ कार्य में लगाना हो, तो कथा-कीर्तन। मनोरंजक आयोजनों में रामलीला, रासलीला, धार्मिक मेलों, कुंभ, सोमवती अमावस्या, दर्शन-झाँकी आदि की गणना होती है। तात्पर्य यह है कि रोजी-रोटी के अतिरिक्त अधिकांश जनता की उत्कट आकांक्षाएँ यदि कभी उठें, तो वे धर्म तक ही सीमित रहेंगी।

राजनीति को समझ सकना उन शिक्षित लोगों का कार्य है, जो रोज अखबार पढ़ते हैं अथवा उनके संपर्क में रहते हैं। सामान्य जनता उससे उतनी ही परिचित हो पाती है, जितना कि टैक्स-कंट्रोल आदि का सीधा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रभाव उस पर पड़ता है। अन्य पहलुओं से वह प्राय: अपरिचित ही रहती है, पर धर्म के बारे में यह बात नहीं है। उसकी कथाएँ, प्रथाएँ तथा बारीकियाँ स्त्री-बच्चों तक को मालूम रहती हैं। यही कारण है कि अपना धर्म-कलेवर बहुत भारी और मँहगा होते हुए भी जनता द्वारा खुशी-खुशी वहन किया जा रहा है।

कहना यह है कि इस देश की जनता में कोई उत्कृष्टता, महत्ता, हलचलें एवं परिवर्तन करना हो, तो उसके लिए धर्ममंच ही सबसे प्रभावशाली माध्यम हो सकता है। जो समझना हो धर्म के साथ-साथ उसका संबंध जोड़ते हुए समझाया जा सके, तो उसमें आशाजनक सफलता मिल सकती है। गाँधी जी इस देश की नब्ज देखने और जनता की मन:स्थिति को समझने में बहुत कुशल थे। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम को धार्मिक आंदोलन के रूप में चलाया। स्वयं मिस्टर गाँधी, बैरिस्टर गाँधी न रहकर महात्मा गाँधी के रूप में सामने आए। वैसा ही वेश-कलेवर उन्होंने धारण किया। सत्य-अहिंसा के प्राथमिक धर्म सिद्धांत को आधार बनाया। सामाजिक धर्मराज्य के लिए धर्मयुद्ध छेड़ा। गोमाता के उद्धार का आश्वासन दिया। 'रघुपति राघव राजाराम' की कीर्तन ध्वनि लेकर चले और भारतमाता की जय बोली। यह प्रक्रिया भारतीय धार्मिकता से जुड़ती है। अतएव उनका सत्याग्रह आंदोलन शिक्षित-अशिक्षित सभी में लोकप्रिय बना और अंतत: उन्हें सफलता मिलकर ही रही। उन दिनों अन्य प्रमुख राजनेता भी उसी प्रक्रिया को न्यूनाधिक रूप से, अपने-अपने ढंग से अपनाते थे। अपने स्वतंत्रता संग्राम की सफलता का यह एक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य तथा आधार था। यदि यह आधार न अपनाया गया होता, तो मार्ग काफी लंबा पड़ता और बहुत कीमत चुकाने पर थोड़ी सफलता की आशा बँधती।

स्थिति अभी भी वही है। राजनैतिक स्वतंत्रता के बाद अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य करने हैं। सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन, नैतिक आचार-व्यवहार का समाधान, शिक्षा में अभिरुचि, सहयोग भावना, श्रेष्ठ का सम्मान, स्वतंत्र चिंतन, सदाचरण, आहार-व्यवहार की शुद्धि, संघबद्धता, अनुशासन आदि कितनी ही अभिनव प्रवृत्तियों को जन्म देना है। हजार वर्ष की गुलामी के बाद हमारा मानसिक धरातल इतना विपन्न हो गया है कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसके हर पहलू में भारी परिवर्तन की आवश्यकता है। राष्ट्र का नए सिरे से निर्माण करना होगा। यदि जनमानस में उत्कृष्टता और आदर्शवादिता के तत्त्वों का समावेश न हुआ, तो आजीविका, शिक्षा, चिकित्सा आदि की सुविधाएँ बढ़ते चलने पर भी केवल विपत्तियों, विग्रह एवं अपराधों की ही वृद्धि होगी।

इस नव निर्माण का आधार भारत की वर्तमान स्थिति में केवल धर्म ही हो सकता है। उसी से जोड़कर हम आवश्यक विचार परिवर्तन एवं सत्प्रवृत्तियों का अभिवर्द्धन कर सकते हैं। शहरी और सुशिक्षित जनता में भी धर्म को यदि विवेकपूर्ण और बुद्धिसंगत ढंग से प्रस्तुत किया जा सके, तो वहाँ भी उसे अभीष्ट सम्मान और उचित स्थान मिल सकता है। अस्तु, राष्ट्र की अभिनव रचना में विश्वास रखने वाले हर विचारशील का कर्त्तव्य है कि राजनीति में जहाँ पहले से ही बहुत घुसपैठ और धक्का-मुक्की है, वहाँ प्रवेश करने की अपेक्षा धर्मतंत्र का अवलंबन लेकर व्यक्ति के उत्कर्ष एवं समाज के परिष्कार के लिए आगे आएँ। यह मार्ग यदि प्रबुद्ध प्रतिभाशाली व्यक्ति अपना सके, तो सुधार कार्यों में आशाजनक सफलता मिल सकती है और राष्ट्र के सर्वांगीण नव निर्माण का प्रयोजन आश्चर्यजनक गति से संपन्न हो सकता है।

बोधिसत्व तालाब के किनारे बैठे पुष्पों की शोभा और उनकी सुगंध का आनंद ले रहे थे। एक लड़की आई और बोली-''तुम चोर हो?'' बोधिसत्व चौंक कर बोले-''पुत्री ! मैंने तो किसी का कुछ नहीं चुराया?'' ''चुराया क्यों नहीं, दुनिया की शांति और आनंद चुराकर यहाँ बैठे हो। संसार पीड़ाओं से जल रहा है, क्या तुम्हारा यह कर्त्तव्य नहीं है कि तुम जाकर भटके लोगों को भी ज्ञान का प्रकाश दो।'' अभी यह वार्ता चल ही रही थी कि एक व्यक्ति आया और उन फूलों को बुरी तरह उजाड़ कर चला गया। बोधिसत्व ने कहा-''बेटी ! तुमने मुझे इतना धिक्कारा, पर इस व्यक्ति को कुछ न कहा।'' लड़की बोली-''महात्मन् ! पाप और आसक्ति में डूबे हुए को धिक्कारना पाप को और बढ़ाना है। यह काम तुम धर्मतंत्र वालों का है कि उन्हें ज्ञान देकर ठीक करो।'' बोधिसत्व को अपनी गलती मालूम पड़ी और वे समाजसेवा के लिए चल पड़े।

भारतीय जनता की धर्म-श्रद्धा का आज इतना शोषण और दुरुपयोग हो रहा है कि किसी भी विचारशील को भारी दुःख हुए बिना नहीं रह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकता। जनगणना के अनुसार देश के एक करोड़ व्यक्ति साधु-महात्मा और धर्मजीवी का कलेवर ओढ़कर भिक्षावृत्ति करते हैं और तरह-तरह के भ्रम, अंधविश्वास फैलाते हैं। गरीब जनता इनके निर्वाह का भारी व्यय वहन करती है। यदि यह एक करोड़ जनशक्ति लोकमंगल में लगाई जा सके, तो जिस तरह एक लाख पादरियों ने थोड़े ही दिन में विश्व में एक तिहाई जनता को ईसाई बना लिया, उनकी तुलना में हम ८० गुना काम अधिक कर सकते हैं। भारत के ७ लाख गाँवों में वह एक करोड़ सेवारत हो जाएँ, तो हर गाँव पीछे १४-१५ लोकसेवी होंगे। इससे वहाँ की शिक्षा-सदाचार, स्वास्थ्य-स्वच्छता, मूढ़ता-कुप्रथा आदि समस्याओं को देखते-देखते हल किया जा सकता है।

परिव्राजक महानंद ने जितनी अधिक साधनाएँ कीं, सिद्धियाँ और लोकश्रद्धा भी उतनी ही मिली, पर शांति ! शांति न जाने क्यों न मिल पाई? एक दिन वे गाँव की ओर चल पड़े। एक स्थान पर रोग से पीड़ित एक वृद्ध कराह रहा था। महानंद ने कमण्डल से जल निकाल कर उसका घाव धोया, दवा-मरहम लगाई और पट्टी की। वृद्ध को आराम मिला और नींद आ गई। आज की जैसी शांति महानंद को किसी दिन नहीं मिली, इसलिए उन्होंने अनुभव किया कि सेवा ही सबसे बड़ी सिद्धि है।

करोड़ों व्यक्ति धर्म के नाम पर ढेरों पैसा, समय और श्रम खर्च करते हैं। यदि उनका विवेक-सम्मत और योजनाबद्ध उपयोग होने लगे, तो उनसे सरकारी विकास योजनाओं की अपेक्षा सौ गुना अधिक कार्य स्वेच्छापूर्वक हो सकता है। हर सोमवती अमावस्या पर गंगा स्नान करने प्रायः करोड़ों व्यक्ति आते हैं। हर व्यक्ति के समय तथा खर्च करने का औसत लगाया जाए, तो कई करोड़ होता है। ऐसी प्रायः ४-५ सोमवती हर साल पड़ती हैं। उनमें प्रायः अरबो रुपया गया। यदि यह पैसा गंगा में पड़ने वाले गंदे नाले कृषि कार्य के लिए मोड़े देने में लगाया जा सके, तो एक साल में गंगा माता की स्वच्छता और सिंचाई से करोड़ों की आमदनी बढ़ सकती है। ऐसा निर्माणात्मक नेतृत्व यदि धर्मतंत्र का विवेक रखने वालों ने किया होता, तो देश की स्थिति न जाने कहाँ से कहाँ पहुँच गई होती।

मेरी पत्नी उस समय सो रही थी, एकाएक बच्चा चीखा, तो मुझे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लगा कि अब पत्नी जाग पड़ेगी और मेरा घर से निकलना कठिन हो जाएगा, पर पत्नी ने बच्चे को छाती से लगाया, बच्चा चुप हो गया और मैं चुपचाप निकल आया। महात्मन् ! अब में संसार की मोह-माया में फँसना नहीं चाहता। मुझे भगवान के दर्शन करने का विधान बताइए ? एक विरक्त ने साधु से पूछा। साधु बोले-मूर्ख ! दो भगवान तो तेरे घर में ही बैठे हैं, जिन्हें तू छोड़ आया, जा जब तक तू उनकी सेवा नहीं करेगा, तब तक तेरा उद्धार नहीं होगा। विरक्त ने मानवआत्मा में विश्वात्मा के दर्शन को समझा और घर लौट गया।

मंदिर-मठों में अरबों की चल संपत्ति लगी है। हर साल उनकी आय खरबों रुपया है। जनता जितना सरकारी टैक्स देती है। उससे कहीं अधिक यह स्वेच्छा अनुदान है। यदि यह पैसा रचनात्मक प्रवृत्तियों की ओर मोड़ा जा सके, तो उससे काया-कल्प जैसा परिवर्तन प्रस्तुत हो सकता है। कथा-सत्संगों के नाम पर जो कूड़ा-करकट जनता के दिमाग में भरा जाता है, उसके स्थान पर यदि सच्चे धर्मतत्त्व, अध्यात्म, नीति, सदाचार, कर्त्तव्यपरायणता और सामाजिकता का प्रशिक्षण बन पड़े, तो सोया हुआ भारतवर्ष एकाकी जग सकता है और आत्मनिर्माण ही नहीं, विश्व भर का नेतृत्व करने में समर्थ हो सकता है।

आज धर्मतंत्र प्राय: प्रतिक्रियावादी, प्रतिगामी और जनमानस को भ्रम-जंजाल में घसीटने वाले पाखंडियों के हाथ में है। वे धर्म के नाम पर जनता का बुरी तरह शोषण करते हैं और बदले में उन्हें मूढ़ता के जाल-जंजाल में फँसाते रहते हैं। इस परिस्थिति को बदला जाना चाहिए। इसके लिए आलोचना करने या कुड़कुड़ाते रहने से काम नहीं चलेगा। हमें आगे बढ़कर इस अति महत्त्वपूर्ण क्षेत्र में प्रवेश करना होगा और जनता को उचित नेतृत्व देकर, उस प्रचंड जनशक्ति, श्रद्धा एवं संपदा को उपयोगिता की दिशा में प्रस्तुत करना होगा। राजनीति में सुधार के प्रयत्न किए जा रहे हैं, सो ठीक हैं, पर इससे अधिक ध्यान दिए जाने योग्य धर्म-नीति है। विवेक का, दूरदर्शिता का यही तकाजा है कि प्रबुद्ध व्यक्ति धर्मतंत्र स्वयं सँभालें और प्रतिगामिता को दानशीलता में बदल दें।

एक साधु अपने शिष्यों के साथ मेले में जा रहे थे। एक स्थान पर बैठे कुछ बाबा माला फेर रहे थे। उन्हें देखकर साधु हँस पड़े। आगे एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तपस्वी शीर्षासन लगाए खड़े थे, उन्हें देखकर साधु फिर हँसे। आगे एक पंडित जी भी भागवत् कर रहे थे, उनके आगे चेलों की जमात बैठी थी, उन्हें भी देखकर साधु खिलखिलाकर हँस पड़े। उसके आगे कैंप में एक डाक्टर एक रोगी की परिचर्या में लगे थे, यह देखकर साधु की आँखों में आँसू आ गए। आश्रम लौटने पर एक शिष्य ने पहले तीन स्थानों पर हँसने और चौथे स्थान पर रोने का कारण पूछा, तो उन्होंने उत्तर दिया-बेटा ! आज माला, आसन, प्राणायाम और कथा-भागवत् को तो धर्म समझकर अधिकांश लोग ढोंग कर रहे हैं, यह देखकर हँसी आ गई। जब कि भगवान का काम करने वाला एक ही डाक्टर दीखा, यह देखकर दुःख हुआ कि लोग धर्म के वास्तविक अर्थ को न जाने कब समझेंगे। सच्चा धर्म संसार की सेवा और उसे सुधारना है, जप-तप नहीं।

प्रश्न

१. राष्ट्रोद्धार का प्रभावकारी माध्यम क्या हो सकता है-राजनीति या धर्म? कारण सहित बताइए।
२. गाँधी जी ने स्वतंत्रता संग्राम में धर्म को आधार कैसे बनाया?
३. देश की वर्तमान प्रमुख समस्याओं पर प्रकाश डालिए?
४. क्या राष्ट्र में विचार क्रांति की आवश्यकता है? यदि है तो क्यों?
५. भारत में साधु-संन्यासियों की संख्या का सदुपयोग कैसे किया जा सकता है?
६. भारत में धार्मिक कार्यों पर होने वाले व्यय पर प्रकाश डालते हुए उसके सदुपयोग की योजना प्रस्तुत करें?
७. मंदिर-मठों की संपत्ति का सदुपयोग कैसे किया जा सकता है?
८. धर्म के नाम पर पाखंड एवं शोषण से जनता को कैसे मुक्त किया जा सकता है?
९. राजनीति से अधिक महत्त्व धर्मनीति का क्यों है?
१०. धर्म के सच्चे स्वरूप पर प्रकाश डालिए?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मंदिर से आस्तिकता और सत्प्रवृत्तियाँ जगें

विशालकाय मंदिरों का निर्माण करने की प्रक्रिया भारतीय मनीषियों ने अति महत्त्वपूर्ण प्रयोजन की पूर्ति के लिए विनिर्मित की थी। भगवान के मंदिरों की स्थापना करके सर्वसाधारण के मन में आस्तिकता की मान्यताएँ परिपुष्ट करना, हमारे देवालयों का मुख्य प्रयोजन है। आस्तिकता का अर्थ है, ईश्वर के आदेशों का पालन करना, नैतिक जीवन जीना, दुष्कर्मों से बचे रहना और विश्वात्मा, परमात्मा को सुरभित बनाने के लिए अपना अधिकाधिक योगदान देना। आस्तिकता का प्रथम चरण जप, ध्यान एवं पाठ-पूजा हो सकता है, पर उसकी पूर्णता भगवान को, उनके आदेशों को जीवन में घुला देना ही है। नेक, सदाचारी, भला और परमार्थपरायण जीवनक्रम ही किसी की आस्तिकता का प्रमाण हो सकता है। इस आस्तिकता के ऊपर ही व्यक्ति और समाज की उत्कृष्टता एवं सुख-शांति निर्भर है । भगवान हमारे अति समीप अंत:करण में विद्यमान है। उसे किसी की निंदा-स्तुति से कुछ लेना-देना नहीं। उसकी प्रसन्नता-अप्रसन्नता, कृपा-अकृपा इस बात पर निर्भर है कि कौन उसके आदेशों का कितना पालन करता है। इस तथ्य को समझने वाला सज्जनोचित सदाचारी जीवन ही जिएगा और समाज के प्रति अपने महान् कर्त्तव्यों को ध्यान में रखते हुए लोकमंगल के लिए अपना बढ़ा-चढ़ा अनुदान देने में तत्पर रहेगा। आस्तिकता व्यक्ति और समाज की भावनात्मक भूमिका को ऊँचा उठाने का प्रयोजन पूरा करती है। इसलिए उसे मानवजीवन की महती आवश्यकता माना गया है। पूजा-उपासना का सारा कलेवर इसी प्रयोजन के लिए खड़ा किया गया है। मंदिरों की स्थापना के मूल में मनीषियों का एकमात्र प्रयोजन यही था कि इन धर्म केंद्रों के द्वारा आस्तिकता के आदर्शों को जनमानस में व्यापक रूप से पहुँचाया जाए।

एक बार कबीर ने प्रसंगवश अपने एक अनुयायी से कहा-अभी एक मंदिर से होकर आ रहा हूँ। वह सज्जन बहुत विस्मित हुए और बोले-महात्मन् ! आप तो मूर्ति पूजा का विरोध करते हैं, फिर मंदिर कैसे चले गए ? आप तो अभी अमुक व्यक्ति के घर से आ रहे हैं। कबीर हँसकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बोले-हाँ-हाँ, वह घर ही तो मेरा मंदिर है। जहाँ नित्य ईश्वर भजन होता हो, जिस घर के लोग स्वाध्याय, सत्संग करते हों, बच्चों को अच्छा बनने की शिक्षा देते हों, वह घर ही मंदिर कहे जाने योग्य है।

मंदिर के निर्माण में विपुल धन-संपत्तियों के लगाए जाने का एकमात्र प्रयोजन यह है कि इन धर्म केंद्रों के द्वारा आस्तिकता की सर्वतोमुखी प्रवृत्तियों का विस्तार किया जाए। पूजा आरती भी वहाँ होती रहे, सो ठीक है। लोग दर्शन करने आएँ और यह स्मरण करें कि भगवान की सत्ता इस संसार में विद्यमान है, अस्तु, हमें उसके दंड से बचने और अनुग्रह को पाने के लिए सज्जनोचित जीवन जीना चाहिए। मनुष्य आस्तिकता की भावना को भूलकर ही कोई कुकर्म कर सकता है। यदि परमात्मा और उसकी न्याय व्यवस्था हमारी स्मृति में बनी रहे, तो अनीति की दिशा में एक कदम भी बढ़ा सकना संभव नहीं। भावनात्मक परिष्कार की दृष्टि से आस्तिकता का भारी महत्त्व है। व्यक्ति एवं समाज का कल्याण उसी पर निर्भर है। मंदिरों का प्रयोजन है कि भगवान की प्रतिमा का दर्शन, पूजन करने के लिए जनसाधारण को आमंत्रित, आकर्षित करें, साथ ही उन आगंतुकों में आस्तिकता की मूल मान्यताएं हृदयंगम कराने के लिए बहुमुखी प्रवृत्तियों का संचालन करें।

मंदिर वस्तुतः एक धर्म-केंद्र हैं, जहाँ से मनुष्य के भावनात्मक निर्माण के लिए आवश्यक सत्प्रवृत्तियों का संचालन होता है। नित्य के कथा-प्रवचन वहाँ इसीलिए होते हैं। जुमा की नमाज के बाद मस्जिदों में मुल्ला लोग भाव भरे और दिशा देने वाले प्रवचन करते हैं। गिरजाघरों में पादरी लोग रविवार की प्रार्थना के बाद उपस्थित धर्म-प्रेमियों को उनके व्यक्तिगत एवं सामाजिक कर्त्तव्यों का बोध कराते हैं। हिंदू धर्म किसी समय सबसे आगे था, वहाँ कथा-प्रवचनों के माध्यम से वह सब कुछ, हर दिन नियमित रूप से सिखाया जाता था, जो समग्र स्थिरता एवं प्रगति के लिए आवश्यक था। इतना ही नहीं, वहाँ पाठशालाओं, पुस्तकालयों, व्यायामशालाओं, संगीत एवं कला-कौशलों की समस्त उन प्रवृत्तियों का संचालन होता था, जो भावनात्मक निर्माण में सहायक हो सकती हैं। सर्वतोमुखी विकास की संपूर्ण योजनाएँ और प्रक्रियाएँ मंदिरों में धर्म केंद्र ही संचालित करते थे। उनका भारी प्रभाव पड़ता था। आस्तिकता की भावनाएँ किस प्रकार कार्यान्वित की जा सकती हैं? उनका रचनात्मक,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यावहारिक स्वरूप क्या हो सकता है? इसका प्रत्यक्ष स्वरूप देखने और प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए, हर व्यक्ति मंदिरों में आता था और उनकी उपयोगिता अनुभव करता था। उनके निर्माण को पुण्य कर्म मानना और उनमें विपुल धन लगाया जाना, इसलिए उपयुक्त माना जाता था कि उस रचना से अगणित व्यक्ति प्रकाश पाने और समग्र उत्कर्ष पाने के लिए अग्रसर होने में समर्थ होंगे।

धर्म-प्रेमी लोग अपनी उपार्जित संपत्ति को मंदिरों के बनाने और उनके चलाने में समर्पित करके अपने को धन्य मानते थे, क्योंकि इससे अच्छा उपयोग पैसे का हो नहीं सकता। जनता भी देव प्रतिमा के आगे कुछ न कुछ श्रद्धांजलि अर्पित करती रहती थी, ताकि उस पैसे से रचनात्मक प्रवृत्तियों का प्रचलन हो सके। पुजारी लोग पूजा-अर्चना में प्रातः, सायंकाल देव प्रतिमा के लिए थोड़ा समय और धन लगाकर शेष सारा समय और पैसा मंदिर संस्था द्वारा संचालित सत्प्रवृत्तियों में लगाते रहते थे। वे सुयोग्य विद्वान ही नहीं, सदाचारी और लोकसेवी भी होते थे। उन्हें सामाजिक आवश्यकताओं का ज्ञान रहता था, तदनुरूप वे अपने व्यक्तित्व, प्रभाव एवं श्रम का उपयोग जनमानस की दिशा सुव्यवस्थित करने में लगाते रहते थे। समर्थ गुरु रामदास ने महाराष्ट्र में सैकड़ों महावीर मंदिर स्थापित किए थे और उन स्रोतों से शिवाजी के स्वतंत्रता संग्राम के लिए धन एवं जन शक्ति को विपुल मात्रा में उपलब्ध कराया था। सिख धर्म के सारे गुरुद्वारे अनुपयुक्त शासन को हटाने में केंद्र बिंदु बनकर अपनी स्थापना का महत्त्व प्रतिपादित करते रहे। बुद्ध-विहार विश्वव्यापी धर्म प्रसार योजना के सुव्यवस्थित केंद्र थे। यहाँ सदा से यही परंपरा प्रचलित रही और मंदिरों ने अविस्मरणीय भूमिका सदा से प्रस्तुत की है।

दानवीर सेठ जुगलकिशोर बिरला की मृत्यु होने लगी, तो उनकी आँखों में आँसू आ गए। पास ही खड़े एक विश्वास पात्र ने पूछा- सेठ जी ! आपने जीवन भर धर्म किया, हजारों मंदिर बनवाए, आपको तो प्रसन्न होना चाहिए, दुःख क्यों कर रहे हो? विरला जी आँसुओं के बीच बोले-मैंने मंदिर बनवाए, पर उनमें जनहित की प्रवृत्तियाँ न चल सकीं, मुझे इसी बात का दुःख है।

आज जब सब कुछ उलटा हो गया है। मंदिर केवल शंख-घड़ियाल बजाने और आरती उतारने तक सीमित हैं। पुजारी लोग प्रातः-सायं की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

थोड़ी-सी टंट-घंट करके अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं। उन विशाल इमारतों का कोई उपयोग नहीं और जो प्रचुर धन उसमें लगा हुआ है, वह उन मठाधीशों की व्यक्तिगत संपदा बनता और उन्हीं के उपयोग में व्यय होता देखा जाता है। किन्हीं प्रेरक प्रवृत्तियों के संचालन की बात भी वहाँ सुनाई नहीं पड़ती। ऐसी दशा में उन्हें प्राण रहित निर्जीव कलेवर की तरह ही जहाँ-तहाँ खड़ा देखा जा सकता है। उपयोगिता खो जाने पर जन आकर्षण का घट जाना भी स्वाभाविक है। किन्हीं मेले-उत्सव पर थोड़ी भीड़ दीखने के अतिरिक्त, नियमित रूप से पहुँचने वाले वहाँ थोड़े से ही रहते हैं। जो पहुँचते हैं, वे भी समय काटने की दृष्टि से ही जाते हैं। मिलता इन्हें कुछ भी नहीं। अनुपयोगी चीज सड़ने लगती है। इन धार्मिक स्थानों में धीरे-धीरे अनाचार का प्रवेश जिस प्रकार हो रहा है, उससे दु:ख और दोष ही उत्पन्न होते हैं।

पुजारी नियत समय पर पूजा करने आता और आरती करते-करते भाव विह्वल हो जाता। घर आते ही वह अपनी पत्नी बच्चों के प्रति कर्कश व्यवहार करने लगता। एक दिन उसका नन्हा बच्चा भी साथ चला आया। पुजारी स्तुति कर रहा था। हे प्रभु ! तुम सबसे प्यार करने वाले, सब पर करुणा लुटाने वाले हो, अभी वह इतना ही कह पाया था कि बच्चा बोल उठा-पिता जी ! जिस भगवान के पास इतने दिन रहते हुए भी आप करुणा और प्यार करना न सीख सके, उस भगवान के होने न होने से क्या लाभ? पुजारी को अपनी भूल मालूम पड़ गई और वह उस दिन से आत्म-निरीक्षण व आत्म सुधार में लग गया।

अपने मंदिरों में लगभग खरबों रुपए की संपत्ति लगी है। उनकी दैनिक आमदनी खरबों रुपया है। इमारतें इतनी विस्तृत हैं कि उनमें ईसाई मिशन के द्वारा संसार भर में हो रहे कार्यों से कई गुने अधिक रचनात्मक कार्य आरंभ किए जा सकते हैं। करीब एक लाख व्यक्ति उन मंदिरों की सेवा-पूजा में नियुक्त हैं। इतने व्यक्ति यदि काम के हों और उन्हें रचनात्मक दिशा में लगाया जा सके, तो सारे समाज का कायाकल्प हो सकता है। जनता जिस श्रद्धा से इनमें धन चढ़ाती है, उसके अनुरूप यदि धर्म संस्थापना की बहुमुखी प्रवृत्तियाँ भी इनमें संचालित हो सकें, तो हमारा समाज कुछ ही दिनों में कहाँ से कहाँ पहुँच सकता है। साधनों के अभाव में काम रुका रहे, यह समझ में आता है, किंतु प्रचुर साधन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होते हुए भी उनका सदुपयोग न हो सके, यह बड़ी लज्जा और पीड़ा की बात है।

समय आ गया है कि इन धर्म केंद्रों का सदुपयोग करने की दिशा में हम विचार करें और साहसपूर्वक कदम उठाएँ। जिनके हाथ में मंदिर की संचालन व्यवस्था है, उन्हें सोचना चाहिए कि क्या इन केंद्रों में लगे हुए धन का सही उपयोग हो रहा है? भगवान की पूजा उचित है और आवश्यक भी, पर यह अबुद्धिमत्तापूर्ण है कि प्रचुर धनराशि और जनशक्ति का उपयोग इतने भर के लिए ही समाप्त हो जाए। ईश्वर-भक्ति, पूजा-आरती तक ही सीमित नहीं है। व्यक्ति और समाज का भावनात्मक उत्कर्ष भी ईश्वर-भक्ति का ही अंग है। देश, धर्म, समाज और संस्कृति की उत्कृष्टता अभिवर्द्धन के लिए रचनात्मक कार्य हो सकते हैं, उन्हें ईश्वर पूजा से कम महत्त्व का किसी भी प्रकार नहीं समझा जाना चाहिए। मंदिरों की उपयोगिता तभी अक्षुण्ण रह सकती है, जब उनमें पूजा के साथ-साथ आस्तिकता के अभिवर्द्धन एवं परिपोषण की सत्प्रवृत्तियाँ भी संचालित होती रहें।

प्रश्न

१. भगवान के मंदिरों की स्थापना करने का मुख्य प्रयोजन क्या है?
२. आस्तिकता से क्या तात्पर्य है?
३. आस्तिक मनुष्य समाज को किस तरह लाभ पहुँचाता है?
४. मंदिरों के निर्माण में इतनी अधिक धन-संपत्ति लगाने का कारण क्या हो सकता है?
५. मंदिरों में कथा-प्रवचन किस हद तक सत्प्रवृत्तियों को जगाने में सहायक हैं?
६. मंदिरों के पुजारी किस तरह के व्यक्ति होते हैं?
७. आज के मंदिरों के रूप, कार्यों पर प्रकाश डालिए?
८. हमारे मंदिरों में लगी संपत्ति तथा व्यक्तियों के क्या पूजा और आरती के सिवाय भी कोई कर्त्तव्य हैं?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साधु-ब्राह्मण समाज का कर्त्तव्य और दायित्व

अपने देश में साधुओं और ब्राह्मणों के प्रति जनता की भारी श्रद्धा रही है। उनके सम्मान, सत्कार और भरण-पोषण के लिए बहुत कुछ किया जाता रहा है। अब भी किसी अंश में वह परंपरा विद्यमान है। कई की विशाल संख्या वाले साधु समाज का निर्वाह, जो सामान्य जनस्तर से कहीं ऊँचा है, धार्मिक जनता ही वहन करती है। ब्राह्मण वर्ग उस संख्या के अतिरिक्त है। पंडित, पुरोहित, पुजारी, तीर्थ के पंडे, कथावाचक, कीर्तनकार आदि वर्गों में बँटे हुए उस ब्राह्मण समाज की संख्या भी लगभग इतनी ही हो सकती है, जितनी कि साधु समाज की है। साधु-ब्राह्मणों को मिलाकर कई करोड़ हो जाते हैं। देश की पूरी हिंदू जनता में, हर ३० व्यक्तियों के पीछे एक साधु-ब्राह्मण आता है, जिसका निर्वाह इस गरीब देश के भूखे नंगे निवासी बड़ी श्रद्धा और आशा के साथ अपना पेट काट कर करते हैं। भारतीय जनता में इस जमाने में भी जो धर्म, श्रद्धा विद्यमान है, उसकी सराहना ही करनी पड़ेगी।

इस श्रद्धा का प्रतिदान देने की जिम्मेदारी अपने साधु-ब्राह्मण समाज पर आती है। प्राचीनकाल में इस वर्ग के लोग अपने उच्च चरित्र, महान् ज्ञान और उदात्त सेवा भावना का पूरा-पूरा लाभ जनता को देते थे और स्वयं इतने निस्पृह रहते थे कि भोजन-वस्त्र की बात भी भगवान पर छोड़ देते थे, जिसे सचमुच जनता जनार्दन के द्वारा पूरा किया भी जाता था। इस वर्ग का थोड़ा समय ईश्वर उपासना और आत्मबल के परिवर्द्धन में और स्वाध्याय द्वारा ज्ञानवर्धन में भी लगता था, पर अधिकांश समय तो जनसाधारण की भौतिक एवं आत्मिक जीवन की प्रगति में सहायता करते हुए ही बीतता था। यही ऋषि-धर्म है। साधु और ब्राह्मण इस पवित्र कर्त्तव्य में अपने आपको बँधा हुआ मानते थे। उपासना और स्वाध्याय द्वारा बढ़ाया हुआ आत्मबल और ज्ञानबल भी उन्हें अपने स्वार्थ साधन के लिए नहीं, वरन् इसलिए अभीष्ट था कि उसके द्वारा लोकमंगल के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक बार द्रोणाचार्य से किसी ने पूछा-महाराज ! आप तो ब्राह्मण हैं, ब्राह्मण का धर्म ज्ञान अर्जित करना, ज्ञान देकर समाज को सुव्यवस्थित रखना है, सो तो आप करते ही हैं, पर जो ज्ञान से नहीं मानता, उसे कैसे ठीक करते हैं। द्रोणाचार्य ने उत्तर दिया-

अग्रता चतुरो वेदा पृष्ठता सशरं धनुः।
इदं ब्राह्मण इदं क्षात्र शास्त्रादपि शारादऽपि॥

अर्थात्-आगे से मैं ब्राह्मण हूँ। मुँह से ज्ञान देता हूँ, किंतु पीठ पर मैंने धनुष-बाण भी धारण किया है अर्थात् जो लोग ज्ञान से मानते हैं, उन्हें ज्ञान से ठीक करता हूँ और जो ज्ञान से नहीं मानते, उनके प्रति क्षात्र धर्म का पालन करता हूँ, उन्हें फिर शस्त्र से ठिकाने लगाता हूँ।

साधु और ब्राह्मण के रूप में लोकसेवियों की एक विशाल सेना समाज को उपलब्ध रहती थी। शिक्षक, चिकित्सक, इंजीनियर, कलाकार, न्यायाधीश, धर्मोपदेशक, समाज सुधारक, वैज्ञानिक, अन्वेषक, योद्धा आदि सभी लोकमंगल के लिए अभीष्ट कार्यकर्त्ता इसी वर्ग में मिल जाते हैं। इसलिए जनता उनके भरण-पोषण का भार उठाकर कुछ घाटे में नहीं रहती थी। उसके द्वारा दिया हुआ आर्थिक या भावनात्मक अनुदान हजार गुना होकर वापस लौटता था। इसलिए उस उदारमना अति उपयोगी वर्ग का भावभरा आदर जन-जन के मन में भरा रहता था। सरकारी भारी खर्चे पर जो लोकोपयोगी कार्य आधे-अधूरे ढंग से इन दिनों किए जाते हैं, वे प्राचीन काल में साधु-ब्राह्मण समाज द्वारा अति स्वल्प खर्च में, अति सावधानी और अति उत्कृष्टतापूर्वक सहज ही संपन्न होते रहते थे। जनता पर करों का भार भी नहीं पड़ता था और वे कार्य, जो सरकारों को रो-खीझकर पूरे करने पड़ते हैं, प्राचीनकाल में साधु ब्राह्मण वर्ग द्वारा सहज ही पूरे कर दिए जाते थे और समाज दिन-प्रतिदिन समर्थ, संपन्न और प्रगतिशील बनता, बढ़ता चला जाता था।

अज्ञानी जनता अपना कर्त्तव्य भूलती तो क्षम्य भी था, पर भारत की आत्मा का प्रतीक प्रतिनिधि वर्ग यदि अपने कर्त्तव्य को भूले, तो उसे एक दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना ही कहा जाएगा। आज ऐसी ही दयनीय दशा इस मूर्धन्य वर्ग की हो चली है, जिसे देखकर रोना आता है। जनता से येन-केन प्रकारेण अर्थ-लाभ और पूजा-सम्मान प्राप्त करने के लिए तो ऋषियों ने इस वर्ग की रचना नहीं की थी। बिना प्रतिदान के अर्थ लाभ करना तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बहुत ही घृणित है। चोरी से मुफ्तखोरी का पाप बड़ा माना गया है। भिक्षावृत्ति से प्राप्त आजीविका अपंग, असहाय या लोकसेवी के लिए ग्राह्य है। दूसरों के लिए तो वह पतन और तिरस्कार के योग्य ही मानी जाती है। भारतीय तत्त्ववेत्ताओं ने निस्संदेह साधु-ब्राह्मण वर्ग की रचना मुफ्तखोरी के लिए नहीं की थी, स्वल्प अनुदान पाकर उसके बदले में असंख्य गुना प्रतिदान देने के लिए ही यह वर्ग सृजे गए थे। यदि उन सृजनकर्त्ताओं को यह अनुमान-आभास रहा होता कि जनता से अर्थ-लाभ और सम्मान पाकर भी यह लोग उसका बदला नहीं चुकाएँगे, तो संभवत: उन महान् तत्त्ववेत्ताओं ने साधु-ब्राह्मण वर्ग को किसी और ही ढाँचे में ढाला होता।

आज उपरोक्त वर्ग में मुफ्तखोरी को अपना जन्म सिद्ध अधिकार मानने की अहंता जम गई है। अपने को देवताओं के प्रतिनिधि या पूजा-पाठ के जानकार भर घोषित कर, वंश या कुल के नाम पर ही दान-दक्षिणा वसूल करने का जो क्रम चल रहा है, वह सर्वथा अवाँछनीय है। वंश, वेश या पूजा-पाठ के आधार पर जनता से आजीविका या सम्मान पाना अनुचित है। ऐसा लाभ तो उसी को प्राप्त करना चाहिए, जो प्राणप्रण से अपना सारा समय और मनोयोग लोकमंगल के लिए ही नियोजित कर सके। औचित्य-अनौचित्य के प्रकाश में हमारे साधु-ब्राह्मण समाज को अपनी गति-स्थिति को बार-बार परखना चाहिए और समय रहते अपनी रीति-नीति में अंतर कर लेना चाहिए, ताकि इस बुद्धिवादी युग में तिरस्कृत, बहिष्कृत होने से पूर्व ही स्थिति को सुधारा जा सके।

साधु ने अपने ब्रह्मचारी शिष्य से पूछा-बेटा ! जब तुम्हारा मित्र गंगाजी में डूबने वालों को बचा रहा था, तब तुम क्या कर रहे थे? मैं नियम पालन कर रहा था, गुरुदेव ! वह समय मेरे जप का था। मैं जप कर रहा था। शिष्य की बात सुनकर साधु बड़े दु:खी हुए और बोले-बेटा ! जिसने पीड़ितों की सेवा से जप को बड़ा माना, उसने पूजा के मर्म को नहीं समझा, ऐसा जानना चाहिए।

जिन्हें लोकमंगल में रुचि नहीं है और जो जन कल्याण के लिए कुछ कर सकने में अपने आपको अयोग्य, असमर्थ मानते हैं, उनके लिए यही उचित है कि वेश या वंश के नाम पर दान या भिक्षा लेना तुरंत बंद कर दें और सर्वसाधारण की तरह श्रम द्वारा आजीविका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चलाते हुए अपने को उच्च वर्ग का प्रतिनिधि होने का दावा तुरंत रद्द कर दें।

जिनमें सेवा की बुद्धि, उमंग और योग्यता जीवित है, वे ही उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करें। ऐसे सच्चे साधु-ब्राह्मण यदि थोड़े बने रहें, तो उनका प्राचीन गौरव बना रहेगा और जनता की श्रद्धा आगे भी बनी रहेगी, अन्यथा अगले दिनों इस मूर्धन्य वर्ग को मुफ्तखोरी और अवांछनीय परंपरा प्रस्तुत करने के अपराध में बुरी तरह तिरस्कृत किया जाने लगेगा।

साधु भगवान के ध्यान में बैठे थे, तभी एक व्यक्ति ने उन पर पीछे से हथियार चलाकर घायल कर दिया और वहाँ से भाग निकला। कुछ लोगों ने दौड़कर उसे पकड़ा और मारते-पीटते साधु के पास लाए। साधु ने देखते ही कहा-अरे ! इसे क्यों मारते हो भाई! लोगों ने बताया कि इसी ने आपको मारा है। साधु ने कहा-ऐसे लोगों को ही प्यार करना और सच्चा रास्ता दिखाना साधुओं का कर्त्तव्य है, क्या तुम यह चाहते हो कि मैं अपने कर्त्तव्य का पालन न करूँ?

साधु और ब्राह्मण में अंतर इतना ही है कि एक वर्ग अविवाहित रहता है और दूसरा विवाहित जीवनयापन करता है। लक्ष्य, उद्देश्य और कार्यक्रम दोनों का एक ही है, इसलिए उन्हें एक ही वर्ग का, एक ही स्तर का माना जाता रहा है। दोनों की जीवनचर्या एक सी हो सकती है कि वे जनमानस को ऊँचा उठाने और समाज की सत्प्रवृत्तियों का अभिवर्धन करने के लिए, अपनी सारी क्षमता और योग्यता नियोजित किए रहें। देश में शिक्षा, साक्षरता की भारी कमी है। बालकों, प्रौढ़ों और नारियों के लिए पूरे समय अपने स्वल्पकाल में चलने वाले शिक्षा प्रयत्नों की गली-गली, मुहल्ले-मुहल्ले जरूरत है। इस प्रयोजन के लिए सर्वत्र व्यवस्था जुटाई जा सकती है। सामाजिक कुरीतियों और अनैतिक दुष्प्रवृत्तियों से जर्जर इस देश को विवेकपूर्ण विचारधारा की पग-पग पर आवश्यकता है। इसके लिए शिक्षणात्मक, रचनात्मक और संघर्षात्मक अनेक प्रयत्न खड़े किए जा सकते हैं। युग निर्माण योजना ने शतसूत्री कार्यक्रमों द्वारा राष्ट्र के पुनर्निर्माण के लिए सर्वतोमुखी जो पुण्य प्रक्रिया प्रस्तुत की है, उसका एक-एक चरण साधु-ब्राह्मणों द्वारा अपनाए जाने, कार्यान्वित किए जाने योग्य है। अच्छा हो, हमारा सम्मानित साधु-ब्राह्मण समाज समय रहते चेते और अपनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गतिविधियों को उसी दिशा में मोड़े, जिसके लिए उसका सृजन किया गया था।

राजा ने एक साधु को दरबार में आने का आग्रह किया। साधु ने सोचा कि मेरे प्रतिदिन दरबार में जाने से लोग यही कहेंगे कि अब इसकी भगवान पर श्रद्धा नहीं, यह लोभी हो गया है, अतएव वह अपने मुँह में कालिख पोत कर राजा के पास पहुँचा। राजा ने पूछा–आपने मुँह क्यों काला किया? साधु ने कहा–लोग मुझे कलंकित करें, इससे अच्छा था कि मैं ही अपने आपको कलंकित कर लूँ, ताकि साधु वेश तो कलंकित होने से बच जाएगा। राजा साधु पर बड़ा प्रसन्न हुआ और उस दिन से उनके उपदेश सुनने कुटिया पर ही जाने लगा।

प्रश्न

१. भारतवर्ष में धर्मजीवियों की संख्या कितनी है?
२. धर्मजीवियों के कर्त्तव्य क्या हैं?
३. प्राचीनकाल के साधु-ब्राह्मणों की आज के साधु-ब्राह्मणों से तुलना करो?
४. लोक अनुदान का अधिकार किसे है और क्यों?
५. साधु-ब्राह्मणों में फैली बुराइयाँ बताओ?
६. जिनकी लोकमंगल में अभिरुचि नहीं वे साधु-ब्राह्मण क्या करें?
७. साधु-ब्राह्मण समाजोत्थान और देश की प्रगति में किस प्रकार सहायक हो सकते हैं?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गायत्री और यज्ञ : भारतीय धर्म-संस्कृति के माता-पिता

गायत्री भारतीय संस्कृति की जननी और यज्ञ भारतीय धर्म का पिता है। भारतीय तत्त्वज्ञान का सार मर्म इन्हीं दो तथ्यों में समाया हुआ है। इसलिए गायत्री और यज्ञ को हम अनादि काल से अपने आध्यात्मिक माता-पिता मानते रहे हैं।

गायत्री महामंत्र उपासना की दृष्टि से परम सामर्थ्यवान है। शास्त्रकारों ने उसके पाँच मुख, पाँच नाम बताए हैं-(१) अमृत, (२) पारस, (३) कल्पवृक्ष, (४) कामधेनु और (५) ब्रह्मा। इन पाँचों के-द्वारा जो लाभ उठाए जा सकते हैं, उन लाभों को दे सकने की क्षमता इस महामंत्र में विद्यमान है। मनुष्य के भीतर अन्नमय कोश, मनोमय कोश, प्राणमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनंदमय कोश यह परम सामर्थ्यवान पाँच आवरण हैं। इन पाँचों में अगणित रहस्यमय शक्तियाँ सन्निहित हैं, उन्हें जगाने के लिए गायत्री उपासना से बढ़कर और कोई साधना नहीं। षट्चक्रों का भेदन, कुंडलिनी जागरण, स्थूल-सूक्ष्म और कारण शरीरों का परिशोधन तथा १२ महत्त्वपूर्ण योग साधनाओं की सफल साधना गायत्री के माध्यम से ही की ज़ाती है। इस महाशक्ति को तंत्र मार्ग में प्रयुक्त करके आश्चर्यचकित कर देने वाली सिद्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। योग साधना का केंद्र-बिंदु अपने धर्म में गायत्री महामंत्र ही रहा है।

आत्मबल बढ़ाने और आत्मपरिशोधन का यह सार्वजनिक, सार्वभौम मंत्र है। इसकी उपासना नर-नारी, बाल-वृद्ध कोई भी कर सकता है। बुद्धि को प्रकाशवान और प्रखर बनाना, अंत:करण में ऋतंभरा प्रज्ञा को प्रकाशवान करना गायत्री की सबसे बड़ी विशेषता है। इसलिए भारतीय धर्म के हर अनुयायी को नित्य इस मंत्र की उपासना अनिवार्य बताई गई है। जो इसकी उपेक्षा करता है, उसकी कड़े शब्दों में भर्त्सना की गई है। कोई किसी देवता या मंत्र की साधना भले ही करता हो, पर उसे सबसे पहले गायत्री द्वारा अंत:करण चतुष्टय तथा इंद्रिय समूह को शुद्ध करना पड़ता है, इसके बिना कोई साधना सफल नहीं हो सकती। कष्ट, विपत्ति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और चिंताजनक उलझनों में फँसे हुए व्यक्ति, इस साधना का आश्रय लेकर अपनी समस्याओं को हल करते और उलझनों को सुलझाने का मार्ग प्राप्त कर सकते हैं। निराशाजनक परिस्थितियों में आशा का कोश उत्पन्न करने एवं विपन्न को संपन्नता में बदल देने की शक्ति इस महामंत्र में किस सीमा तक भरी पड़ी है, इसकी परीक्षा कोई भी व्यक्ति श्रद्धापूर्वक गायत्री मंत्र की उपासना करके कभी भी कर सकता है।

महर्षि विश्वामित्र गायत्री की शोध कर रहे थे। उन्होंने देखा, यह सारा संसार ही सूर्य की चेतना से चेतन है, सो वे सूर्य का चिंतन-मनन करने लगे। सूर्य की शक्ति प्रदायिनी किरणों ने शरीर के मन-विकार दूर कर दिए, तो उनकी चेतना सूर्य चेतना से एकाकार हो गई। विश्वामित्र द्रष्टा हो गए। गंगा दशहरा का शुभ दिन, उस दिन से महर्षि ने अपना सारा जीवन ही गायत्री महाविद्या के प्रसार में लगा दिया।

भारतीय धर्म का सारा विस्तार वेदों से हुआ और चारों वेद गायत्री के चारों चरणों की व्याख्या मात्र हैं। बीज रूप से गायत्री में वह सब मौजूद है, जो हमारे धर्म-ग्रंथों में कहा, समझाया गया है। इस मंत्र के २४ अक्षरों की व्याख्या की जाए, तो उनमें नीति, धर्म, सदाचरण, लोक व्यवहार की ऐसी शिक्षाएँ ओत-प्रोत मिलेंगी, जिन्हें अपनाकर मनुष्य अपना लोक और परलोक सुख-शांतिमय बना सकता है। विवेक-बुद्धि को प्राथमिकता देना और उसे सर्वोपरि ईश्वरीय संदेश मानना गायत्री का सार है। यह मंत्र हमें विवेकवान, विचारशील एवं हंस की तरह नीर-क्षीर का विवेक करते हुए, अनुचित को त्यागने और उचित को अपनाने का निर्देश करता है। माता के रूप में गायत्री की प्रतिमा बनाकर यह प्रतिपादन किया जाता है कि नारी की पवित्रता एवं सत्ता, नर की अपेक्षा अधिक है। इसलिए उसे हर क्षेत्र में अधिक श्रेय, सम्मान प्रदान किया जाना चाहिए। गायत्री का तत्त्वज्ञान अपनाकर यदि हम दूरदर्शी, विवेकशील एवं नीतिवान बन सकें और नारी के प्रति अति पवित्र बुद्धि रखें, तो इस धरती पर स्वर्ग के अवतरण की संभावनाएँ मूर्तिमान कर सकते हैं। हमें नित्य नियमित रूप से गायत्री उपासना के लिए थोड़ा समय निकालते रहना चाहिए और घर-परिवार में यह प्रथा-परंपरा चलानी चाहिए कि घर का हर सदस्य नित्य गायत्री मंत्र की साधना किया करे, भले ही वह पाँच मिनट भर ही क्यों न हो?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पांडवों ने मरणोन्मुख भीष्म पितामह से प्रश्न किया–वह देव कौन सा है, जिसमें समस्त देवता समाहित हैं? भीष्म बोले–आद्यशक्ति गायत्री। जो गायत्री की उपासना न कर किसी और देव को पूजता है, वह ऐसा ही है, जो अपने घर में छिपे खजाने को नहीं जानता और बाहर धन की खोज में भटकता रहता है।

गायत्री माता के रूप में ईश्वर उपासना करने से प्रेम का सर्वोपरि केंद्र-बिंदु, मातृ-हृदय की भावना करने का अवसर मिलता है। जिस रूप में हम भगवान को भजते हैं, वे उसी की अनुभूति प्रदान करते हैं। स्नेहमयी माता का ध्यान हमें वात्सल्य की भाव भरी अनुभूतियों से पुलकित कर देता है। जिन्हें माता के रूप में गायत्री महाशक्ति की उपासना में निराकार-साकार के झंझट को लेकर कुछ आपत्ति हो, वे प्रातःकाल उदय होते हुए समस्त प्राणियों को प्राण प्रदान करने वाले, परम तेजस्वी सूर्य का ध्यान करते हुए, गायत्री मंत्र का ध्यान कर सकते हैं। पूजा की विधि अति सरल है। शरीर को शुद्ध कर, स्वच्छ स्थान एवं शांत वातावरण में आसन बिछाकर बैठना चाहिए। आचमन के लिए जल और प्रकाश एवं ऊर्जा के लिए अगरबत्ती आदि से अग्नि की स्थापना संभव हो, तो और भी उत्तम है। पवित्रीकरण, आचमन आदि क्रियाओं के बाद भगवान की समीपता का ध्यान करते हुए गायत्री मंत्र का जप करना चाहिए। नियत संख्या, नियत समय का ध्यान रखना चाहिए और अंत में सूर्य की दिशा में जल का अर्घ्य देकर श्रद्धांजलि अर्पित करनी चाहिए। यों गायत्री महाविज्ञान ग्रंथ में उपासना के विस्तृत योग एवं तंत्र मार्ग के प्रयोग लिखे हैं, पर सर्वसाधारण का काम उपरोक्त संक्षिप्त विधि से भी चल सकता है।

गायत्री का पूरक यज्ञ है। यह एक अतीव महत्त्वपूर्ण विज्ञान है, जो विश्वव्यापी चेतन जगत् को प्रभावित करता है। जड़-जगत् को प्रभावित करने वाली अनेक वैज्ञानिक प्रक्रियाएँ हैं। सर्दी को गर्मी में बदलने वाला हीटर और गर्मी को सर्दी में बदलने वाला कूलर अपना चमत्कार दिखलाते हैं। अँधेरे को रोशनी में बदलने वाली बिजली का लाभ हर कोई जानता है, पर मानवीय चेतना और विश्वव्यापी चेतना को प्रभावित करने वाली यज्ञ विद्या के बारे में बहुत ही कम जानकारी शेष रह गई है। प्राचीनकाल का अध्यात्मवादी विज्ञान अपनी सक्रियता के लिए महत्त्वपूर्ण सहायता यज्ञीय ऊर्जा से ग्रहण करता था। शारीरिक ही नहीं, मानसिक रोगों के निवारण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की अमोघ क्षमता यज्ञीय प्रक्रिया में मौजूद है। व्यक्तिगत तथा सामूहिक संकटों का निवारण करने वाली शक्तिशाली ऊर्जा यज्ञों के द्वारा वातावरण में संव्याप्त कराई जा सकती है। प्रकृतिगत वातावरण उसके द्वारा बदला जा सकता है, पर आज तो वह सारा विज्ञान ही विस्मृत हो गया। उसकी शोध पुनः की जानी चाहिए और इस अति सरल, किंतु महत्त्वपूर्ण विज्ञान का सर्वसाधारण की सुख-शांति बढ़ाने के लिए उपयोग किया जाना चाहिए। यह कार्य शोधकर्त्ता अध्यात्म विज्ञानियों का है कि वे अपनी लुप्त विद्याओं का अन्वेषण कर उन्हें पुनः प्राप्त करें और उनके द्वारा मानवीय प्रगति में महत्त्वपूर्ण योगदान दें।

प्रजापति ब्रह्मा जी ने मनुष्य को उत्पन्न किया। मनुष्य ने अपना सारा जीवन दुःख, कष्ट और अभावों से घिरा देखा, तो उसने पितामह विधाता से शिकायत की- भगवन् ! इस संसार में हम असहाय छोड़े गए मनुष्यों की रक्षा और पोषण कौन करेगा ? पितामह बोले-यज्ञ। तात् यज्ञ तुम्हें धन-संपत्ति, बल और ऐश्वर्य से भर देंगे और सच ही है, जब तक देश यज्ञ करता रहा, तब तक धन-धान्य की कमी कभी नहीं रही।

यज्ञ-दर्शन की प्रबल प्रेरणा यह है कि मनुष्य यज्ञीय जीवन जिएँ। जिस प्रकार हवन कुण्ड में लपटें उठती हैं, उसी प्रकार हमारे अंतःकरण में शौर्य, साहस, विवेक, सत्य, कर्त्तव्य आदि सद्गुणों की प्रखरता दीप्तिमान रहे। जिस प्रकार हवन के द्वारा वायुमंडल सुगंधित होता है, उसी प्रकार हमारा कर्त्तव्य दया, करुणा, सेवा और सहृदयता की भावनाओं से ओत-प्रोत होता हो, उस कर्त्तव्य के द्वारा सहयोग-सद्भावना का, सुख-शांति का वातावरण बने, इसका प्रयत्न किया जाना चाहिए। यज्ञ पवित्रता और प्रखरता का प्रतीक है और यज्ञ पूजकों की विचारधारा एवं क्रिया पद्धति इन्हीं मान्यताओं से ओत-प्रोत होनी चाहिए। व्यक्तिगत सुख-सुविधा के घी, शक्कर, औषधियाँ आदि का हवन करके हम सुखदाई वायुमंडल बनाने और उनका लाभ समस्त प्राणियों को देने की भावना रखते हैं, उसी प्रकार हमारा समस्त जीवन यज्ञमय बने और उसका लाभ समस्त संसार के समस्त प्राणियों को मिले, यह उमंग भी निरंतर मन में उठती रहनी चाहिए। अग्निहोत्र की धार्मिक प्रक्रिया जीवन को यज्ञमय बनाने के आध्यात्मिक क्षेत्र में भी प्रकट कर सकें, हमें ऐसा प्रयत्न करना चाहिए। गायत्री और यज्ञ का युग्म हमारी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संस्कृति और धर्म का जनक है, उनका समुचित प्रभाव हमारे जीवन पर बना रहे, यही उचित है।

एक परीक्षण किया गया। १२ शीशियों में अन्न, दूध, फल, मांस आदि भरा गया। छः एक कमरे में रखी गईं और छः दूसरे में वहाँ से काफी दूर। एक कमरे को ज्यों का त्यों रखा गया, दूसरे कमरे में हवन किया जाता रहा। पाया गया कि जिस कमरे में हवन नहीं होता था, उसमें रखी शीशियों का खाद्य सड़ने लगा और जल्दी बेकार हो गया।

प्रश्न

१. गायत्री और यज्ञ इन दोनों का भारतीय संस्कृति के साथ क्या नाता है?
२. शास्त्रकारों ने गायत्री जी के कितने मुख बताए हैं? तथा इनके लाभ प्राप्त करने की क्षमता किसमें है?
३. गायत्री महामंत्र की उपासना करके मनुष्य क्या लाभ प्राप्त कर सकता है?
४. गायत्री की प्रतिमा माता के रूप में बनाकर क्या प्रतिपादित किया जाता है?
५. हमें अपने परिवार में किस प्रकार की आदत डालनी चाहिए?
६. निराकार गायत्री की उपासना किस प्रकार की जाती है?
७. यज्ञ का विज्ञान से क्या संबंध है?
८. यज्ञ से मनुष्य को क्या प्रेरणाएँ ग्रहण करनी चाहिए?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गायत्री यज्ञ-आंदोलन

यों यज्ञ कई प्रकार के होते हैं। अलग-अलग देवी-देवताओं तथा मंत्रों के हिसाब से, उनके अलग-अलग नाम और विधान भी हैं, पर वह सब तो सकाम कामनाओं, विविध प्रयोजनों के लिए प्रस्तुत किए गए संप्रदाय विशेष की अनगढ़ गढ़ंतें ही हैं। यज्ञ शब्द का व्यापक प्रयोजन 'गायत्री यज्ञ' से ही जुड़ा हुआ है। यद्यपि अति प्राचीनकाल से लेकर अद्यावधि सभी छोटे-बड़े यज्ञ गायत्री महामंत्र के माध्यम से ही संपन्न होते रहे हैं और उन्हें गायत्री यज्ञ के नाम से ही संबोधित किया जाता रहा है।

गायत्री भारतीय संस्कृति की जननी और यज्ञ भारतीय धर्म का पिता है। गायत्री तत्त्व ज्ञान, विवेकशीलता और सद्भावना की देवी है और यज्ञ संयम, उत्कर्ष एवं संतुलन का देवता। इन दोनों के समन्वय से ही परिपूर्ण मानवता और समर्थ सामाजिकता का उद्भव हो सकता है। अतः भारतीय धर्मावलंबियों ने सदा से अपने शुभ कर्मों के साथ गायत्री यज्ञों को जोड़े रखा है। अपनी महत्त्वपूर्ण सृजनात्मक प्रवृत्तियों का शुभारंभ भी इसी धर्मकृत्य के साथ होता रहा है।

अव्यवस्थित राजनीतिक स्थिति का एकीकरण, सुधार एवं संतुलन करने के लिए समय-समय पर अश्वमेध जैसे राजसूय यज्ञों के नाम पर प्रचण्ड आंदोलन, सम्मेलन एवं अभियान खड़े किए जाते थे और अव्यवस्थित, नैतिक, सामाजिक परिस्थितियों का पुनर्गठन एवं विकृतियों का निराकरण करने के लिए बाजपेय यज्ञों की योजना बनती थी। आज की स्थिति में देश की ही नहीं समस्त विश्व की नैतिक आस्थाएँ, बौद्धिक दिशाएँ एवं सामाजिक विधि व्यवस्थाएँ बुरी तरह लड़खड़ाने लगी हैं। उनका पुनः उपयोग करने के लिए प्राचीनकाल के बाजपेय यज्ञों की परंपराएँ अपना कर, गायत्री यज्ञ आंदोलन नई उमंगें, नई दिशाएँ और नई योजनाओं के साथ प्रस्तुत हुआ है। इसे पंडा-पुजारियों की लूट-खसोट के लिए, आए दिन होते रहने वाले विडंबनात्मक यज्ञ-हवनों से सर्वथा पृथक् और सर्वथा भिन्न प्रयोजन का, एक अतीव क्रांतिकारी और नव निर्माण की विशाल योजनाएँ लेकर प्रस्तुत हुआ,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस युग का एक अद्‌भुत और अनुपम आंदोलन ही समझा और कहा जा सकता है।

एक बार महर्षि दयानंद ने प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानंद से प्रश्न किया कि ऐसा कोई उपाय है, जिससे संसार के सभी लोग रोग मुक्त और स्वस्थ रखे जा सकें। दंडी स्वामी ने उत्तर दिया-यज्ञ। यज्ञ से ही संसार में सुख-शांति आएगी और उसी से लोग स्वस्थ होंगे। यज्ञ से ही मन का संस्कार होता है। उस दिन से महर्षि गायत्री यज्ञों के प्रचार में लग गए।

गायत्री यज्ञ यों पूजा-पाठ की एक धर्म-प्रक्रिया मात्र मालूम पड़ती है और समझा जाता है कि उसके माध्यम से देवताओं की प्रसन्नता, वायु शुद्धि, मनोविकारों का शमन, प्राणप्रद वर्षा जैसे लाभ प्राप्त किए जा सकते हैं, पर यज्ञ को अपनी संस्कृति में जो इतना महत्त्व दिया गया है, उसे धर्म का जनक कहा गया है, उसका प्रधान कारण यह है कि इस माध्यम से यज्ञीय जीवन जीने का और समाज में यज्ञीय परंपराओं के प्रचलन का लोक शिक्षण किया जा सकता है। वायु शुद्धि, देव पूजा, आरोग्य-संवर्धन जैसे लाभों के अतिरिक्त, यह भावनात्मक उत्कर्ष एवं लोकशिक्षण ही वह कारण है, जिसने भारतीय धर्म में यज्ञ शब्द को परम पवित्र वाचकों में गिनाया है और उसे अति उच्चकोटि की श्रद्धा के साथ सम्मानित किया गया था। अपना कोई व्रत, पर्व, त्यौहार, संस्कार एवं शुभ कर्म ऐसा नहीं, जो यज्ञ के बिना संपन्न होता हो। मरने के बाद हिंदू की अंत्येष्टि जिस यज्ञ विधि के साथ संपन्न की जाती है, वह आज कितनी ही भौंड़ी क्यों न हो गई हो, स्मरण यही दिलाती है कि भारतीय जीवन का आदि और अंत यज्ञ के साथ ही होता रहा है, होना भी चाहिए।

यज्ञ शब्द का अर्थ है-त्याग, सेवा, प्रेम, सहयोग, सदाचरण और उदात्त दृष्टिकोण। इन प्रवृत्तियों को व्यक्तिगत जीवन में समन्वय कर लेने से सामान्य स्तर का मनुष्य भी देवोपम मनोभूमि एवं परिस्थितियों का सृजन कर सकता है। वह जिनके भी संपर्क में आएगा, उन्हें प्रसन्नता, प्रकाश एवं प्रोत्साहन प्रदान करेगा। स्वयं तो आत्मशांति और लोकश्रद्धा का अनुभव करता ही रहेगा। व्यक्ति के जीवनोत्सर्ग में तत्त्वज्ञान इतना अधिक योगदान दे सकता है कि उसकी यदि लोहे के पारस छूकर स्वर्ण बनने की बात से तुलना की जाए, तो कुछ अत्युक्ति न होगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सामूहिक जीवन का, समाज का विकास क्रम पूर्णतया पारंपरिक सद्भावना और सहकारिता पर अवलंबित है। संगठित चरित्रवान और, आदर्शों को प्रधानता देने वाले समाज ही समर्थ और समृद्ध हो सकते हैं। इसलिए सामाजिक विकास की आधारशिला यज्ञीय प्रवृत्ति को देश भक्ति, लोक सेवा, जन मंगल आदि नाम भी दिए जा सकते हैं। धार्मिक भाषा में इसे ही यज्ञीय परंपरा कहते हैं। यज्ञ आयोजनों के कर्मकांड के साथ-साथ उसकी व्याख्या करते हुए जन समुदाय को यह बहुत ही आसानी और सफलता के साथ समझाया जा सकता है कि किस प्रकार व्यक्ति और समाज को यज्ञीय साँचे में ढाला जा सकता है और व्यक्ति में देवत्व और समाज में स्वर्गीय वातावरण का सृजन किया जा सकता है। अपना गायत्री यज्ञ आंदोलन धार्मिक पृष्ठभूमि में आवृत्त विशाल जन सम्मेलनों द्वारा व्यक्ति और समाज को आदर्शवादी परंपराओं की ओर उन्मुख करने के लिए तत्परतापूर्वक प्रयत्नशील है। जानने वाले जानते हैं कि धार्मिक मनोवृत्ति की भारतीय जनता में अपना यह पुण्य प्रयोजन कितना लोकप्रिय और कितना सफल हुआ है।

यज्ञीय कर्मकांडों में खाद्य पदार्थ जलने की व्यर्थता पर अक्सर आलोचनाएँ होती हैं। अपने यज्ञों में वैसे अवसर पहले से ही नहीं आने दिये हैं। अन्न का एक दाना भी नहीं होमा जाता, वरन् सुगंधित वनस्पतियों की सामग्री ही काम में आती है और घी की मात्रा भी इतनी प्रतिबंधित और न्यून रहती है कि प्रयोजन की महानता को देखते हुए वह थोड़ा सा खर्च किसी भी प्रकार अनुचित नहीं कहा जा सकता। समूह एकत्रित करने के लिए अब तक प्रयोग किए जाने वाले विविध क्रिया-कलापों में आर्थिक दृष्टि से देखा जाए, तो अपने यज्ञ प्रयोजन सबसे सस्ते बैठते हैं। इस प्रकार उसके साथ जितने दूरगामी सद्परिणाम जुड़े हुए हैं, उन्हें देखते हुए उस खर्च को हर विचारशील, आलोचना का विषय न मानकर मुक्त कंठ से प्रशंसा ही कर सकता है।

''कैमीकल प्रापरटीज'' की सम्मति है कि जायफल, जावित्री, सूखा चंदन, इलायची आदि जलाने से उनका उपयोगी भाग वायुभूत हो जाता है। उनके परमाणु १।१०००० से लेकर १।१०००००० सेंटीमीटर व्यास तक सूक्ष्म हो जाते हैं। यह किसी भी सूक्ष्म से सूक्ष्म वायरस को मार सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गायत्री यज्ञ आयोजन में उपस्थित जनता को जहाँ व्यक्तिगत जीवन में से अनैतिक आचरण और सामाजिक जीवन में से अवांछनीय गतिविधियाँ हटाने के लिए प्रेरित किया जाता है, वहाँ यज्ञ वेदी पर ऐसी प्रतिज्ञाएँ भी कराई जाती हैं, जिनसे व्यक्ति की निर्मलता और समाज की समर्थता का अभिवर्धन होता है। हर कोई जानता है कि अपने हर यज्ञ में सहस्त्रों बार नर-नारी अपनी अवांछनीय कुप्रवृत्तियों को किस उत्साह के साथ सदा के लिए परित्याग कर, कर्त्तव्यनिष्ठ नागरिक बनने के लिए व्रत धारण करते हैं और सामाजिक कुरीतियों एवं राष्ट्रीय दुर्बलताओं को पदच्युत करने के लिए जोश-आवेश के साथ कार्यक्रम बनाते हैं। इन सम्मेलनों के बाद उन क्षेत्रों में सृजनात्मक सत्प्रवृत्तियों की कैसी बाढ़ आती है, इसे देखकर आलोचकों को भी यह स्वीकार करना पड़ा है कि यह आंदोलन वर्तमान के सभी सृजनात्मक आंदोलनों में अपने ढंग का अनुपम है और देश की मनोभूमि को समझते हुए अपने कार्यक्रम बनाने की दूरदर्शिता के कारण असाधारण रीति से सफल है।

डा. हैनीमैन से एक व्यक्ति ने पूछा-औषधि का सबसे अधिक प्रभाव किस विधि से होता है? अपनी पुस्तक "आर्गेनिक ऑफ मेडीसिन" की धारा १९० में उन्होंने इसका उत्तर लिखा है। औषधि का सबसे अच्छा प्रभाव सूँघने और श्वांस लेने से होता है। औषधि का यह स्वरूप हवन से ही प्रदान किया जा सकता है।

देश में परिष्कृत नागरिकता, उत्कृष्ट विचारणा, उदात्त आस्था एवं लोकमंगल की निष्ठा और उमंग भर प्रचंड सृजनात्मक तत्परता उत्पन्न करने में अ. भा. गायत्री परिवार के तत्त्वावधान में चल रहे यज्ञ आंदोलन ने थोड़े ही समय में जैसी सफलता पाई है, उसे देखते हुए यह आशा प्रगाढ़ विश्वास के रूप में परिणत होती जाती है कि मनुष्य में देवत्व और धरती पर स्वर्ग अवतरण करने के लिए अपने.स्वप्न साकार होकर रहेंगे।

प्रश्न

१. 'यज्ञ' शब्द का व्यापक प्रयोजन 'गायत्री यज्ञ' से किस प्रकार जुड़ा है?

२. क्या गायत्री और यज्ञ इन दोनों के समन्वय से ही परिपूर्ण मानवता का उद्‌भव हो सकता है?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

३. गायत्री का आंदोलन किस तरह से पुराने और वर्तमान समय के यज्ञों में समानता ला रहा है ?

४. यज्ञ की महिमा को बतलाइए ?

५. यज्ञ शब्द का क्या अर्थ होता है ?

६. यज्ञीय जीवन को अपनाने पर मानव महान् कैसे बन सकता है ?

७. गायत्री यज्ञ आंदोलन सामाजिक जीवन को यज्ञीय जीवन के अनुरूप ढालने में प्रयत्नशील है ? किस प्रकार ?

८. क्या गायत्री यज्ञ आंदोलन आर्थिक दृष्टि से भी अधिक खर्चीला है ? किस तरह ?

९. नर और नारी गायत्री यज्ञ आंदोलन से किस प्रकार लाभ प्राप्त कर सकते हैं ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राणियों के प्रति दया

भगवान का एकमात्र पुत्र मनुष्य ही नहीं, दूसरे जीव-जंतु भी उसी के पुत्र हैं। मनुष्य ज्येष्ठ पुत्र है, इसलिए उसकी जिम्मेदारी भी अधिक है। विवेक, करुणा, स्नेह, सौजन्य का जो भावनात्मक अनुदान मनुष्य को मिला है, वह किसी और को नहीं मिला। अन्य जीव अविकसित होने के कारण परस्पर दुर्व्यवहार भी कर सकते हैं, पर मनुष्य के लिए वैसी छूट नहीं। यही तो पशु और मनुष्य में अंतर है। अन्य जीव अपने स्वार्थ को प्रधान रखते हैं, दूसरों की हानि की वे परवाह नहीं करते, पर मनुष्य को दूसरों के सुख में अपना सुख और दूसरों के दुःख में दुःख मानकर चलना होता है। धर्म, अध्यात्म और दर्शन का प्रयोजन यही तो है कि व्यक्ति अधिक उदार, सहृदय, दयार्द्र हो, सब में अपनी आत्मा समाई हुई देखे और अपना ही नहीं दूसरों का भी कष्ट मिटाने एवं सुख बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील रहे। जो इस कर्त्तव्य धर्म की उपेक्षा करता है, उसे मानवता से च्युत, अधःपतित मनोभूमि का नर-पशु ही कहा जाएगा।

कंधे पर लहूलुहान कुत्ते को बैठाए एक व्यक्ति शहर की ओर जा रहा था। कई मोटर, ट्रक वालों से कहा, पर किसी ने जगह न दी, अंत में वह २२ मील दूर पैदल ही शहर पहुँचा और जानवरों के अस्पताल में कुत्ते का इलाज कराया। लोग उन्हें लौह पुरुष के नाम से याद करते हैं, पर सरदार पटेल के जीवन की यह घटना बताती है कि प्राणियों के प्रति उनके हृदय में कितनी करुणा थी।

पालतू पशुओं से श्रम लेते समय यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि वह उनकी सामर्थ्य और शक्ति से बाहर तो नहीं है। मनुष्य को एक निर्धारित मात्रा में, निर्धारित दबाव का, निर्धारित समय तक ही काम करना पड़ता है। इसी प्रकार पशुओं के बारे में भी ध्यान रखा जाए। वजन ढोने वाले, सवारी में काम आने वाले तथा कृषि कार्यों में प्रयुक्त होने वाले जानवरों से प्रायः इतना काम लिया जाता है, जितना करने में वे समर्थ नहीं। मार-पीटकर बलात् काम लेने से बेचारे कुछ कह तो नहीं सकते, पर धीरे-धीरे चलते हुए अकाल मृत्यु के मुँह में चले जाते हैं। ताँगे-इक्के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वाले इतनी सवारियां बिठा लेते हैं कि उन्हें खींचना बेचारे घोड़े के लिए भारी कष्टकारक होता है। न चल सकने पर निर्दयतापूर्वक पिटाई होती है। गधे ईंट, चूना तथा दूसरी चीजें ढोते हैं। वजन की अधिकता और लगातार काम करने से उनकी पीठ में घाव हो जाते हैं और पिछली टाँगें आपस में टकराकर लहुलुहान हो जाती हैं। बोझे की भारी गाड़ियाँ ढोने वाले बैल और भैंसों की गरदनों पर घाव देखे गए हैं। इतने पर इन घायलों को जोता जाता है और इच्छानुसार गति से न चल पाने पर उन्हें बुरी तरह पीटा जाता है।

पशुओं के प्रति बरती जाने वाली यह निर्दयता मानवता के सर्वथा विपरीत है। ऐसा क्रूर व्यवहार सर्वथा निंदनीय है। सोचना चाहिए कि हम इन पशुओं की स्थिति में होते, तो अपने ऊपर कैसी बीतती। असंभव नहीं कि कभी अपने को भी पशु योनि में जाना पड़े और ऐसी क्रूर निर्दयता का शिकार बनना पड़े। उचित यही है कि जनमानस में सहृदयता जगाई जाए, जिससे इस स्तर की नृशंसता पर अंकुश लग सके। यद्यपि कानून में निर्दयता निवारक एक धारा है और ऐसी क्रूरता करने वालों को, घायल पशुओं को जोतने तथा अधिक सवारी बिठाने तथा बोझा लादने वालों को अदालत के कटघरे में खड़ा करके उन्हें जेल पहुँचाया जा सकता है, पर वह कानून आज पुस्तकों तक ही सीमित है। पुलिस पर इस कानून के पालन कराने की जिम्मेदारी है, पर वह कितना कर पाती है, यह सभी जानते हैं।

सहृदय लोगों को यह कार्य हाथ में लेना चाहिए और जिनका भी पालतू पशुओं से किसी प्रकार का संबंध है, उन्हें मनुष्यों के आदर्श और कर्त्तव्य के प्रति दया और करुणा अपनाने के प्रति चेतना जगानी चाहिए। पशु पालकों के लिए उचित है कि उनसे उतना ही श्रम लें, जो उनकी साधारण शक्ति के अंतर्गत है। निर्दयतापूर्वक मार-काट न करें, घायल हों, तो जोतें नहीं, इतना भार न लादें, जिससे उन्हें घायल होना पड़े। यदि घाव हो गया है, तो पूरी तरह अच्छा हो जाने तक उसे विश्राम दें। अशक्त और घायलों को घर से पीटकर निकला देते हैं, यह बुरी बात है। अशक्तता या बुढ़ापे की स्थिति में, पेंशन की तरह उन्हें कुछ दिन बिना काम लिए भी भोजन देना चाहिए। अशक्त एवं वृद्ध गाय, बैलों को कसाई के हाथ बेच देना एक बुरे किस्म की कृतघ्नता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इब्राहीम लिंकन कार में बैठे संसद जा रहे थे। रास्ते में देखा-एक सुअर का बच्चा कीचड़ में फँसा तड़फड़ा रहा है। कपड़े खराब होने की आशंका पर भी ध्यान न देकर उन्होंने पहले सुअर के बच्चे को निकाला, पीछे गंदे कपड़ों में ही संसद गए।

पक्षियों को पिंजड़े में बंद करके पालना, एक प्रकार से उन्हें आजीवन कैद में डाल देना है। घर की शोभा बढ़ाने के लिए स्वतंत्र जीवनयापन की सुविधा से वंचित करना एक निर्दयता ही है। जो पक्षी पिंजड़े से बाहर रखकर कबूतर, मोर आदि की तरह पाले जाते हैं, उनकी बात समझ में आती है, पर पिंजड़ा तो साक्षात् नरक है। तोते, तीतर सुंदर लगते हैं, तो इसका मतलब यह नहीं कि उनकी सुंदरता को बंदी बनाया और सताया जाए। हमारे द्वारा दिए गए तथाकथित बढ़िया भोजन और बढ़िया निवास से पक्षी को सदा अपना स्वच्छंद विचरण पसंद होता है। उन्हें भी मनुष्य की तरह स्वतंत्रता प्रिय है, तो पक्षियों को पिंजड़े में क्यों परतंत्र बनाएँ।

बाज ने कबूतर से कहा-अरे कबूतर ! भाग जा इस डाली से, देखता नहीं कि मैं कितना शक्तिशाली हूँ। चाहूँ तो तुझे अभी मार कर खा जाऊँ। कबूतर बोला-लेकिन श्रीमान जी ! इसमें आपकी क्या विशेषता रही, किसी को जिंदा करके दिखाओ, तो जानूँ कि तुम कितने शक्तिशाली हो। बाज को अपना मुँह छुपाना मुश्किल पड़ गया।

रेशमी कपड़े पहनने वाले यह नहीं जानते कि यह धागा किस निर्दयता से प्राप्त किया जाता है। रेशम का कीड़ा जीवित ही खौलते पानी में उबाला जाता है और असह्य वेदना के साथ उसका प्राण लिया जाता है। तब कहीं उसके शरीर से वह खोल छूटता है, जिसके धागे से रेशम बनता है। असंख्य प्राणियों का प्राण लेकर रक्त-रंजित वस्त्र पहिन कर इतराना प्रसन्नता की नहीं लज्जा की बात है। मोटे और भद्दे किस्म का एक रेशम ऐसा भी होता है, जिसे कीड़ा छोड़ जाता है और उसमें हत्या की आवश्यकता नहीं होती। उसका उपयोग हो सकता है, पर अधिक महीन धागे वाला और अधिक चमकने वाला रेशम तो एक पूरे बूचड़खाने की तरह ही प्राप्त किया जाता है। ऐसी वस्तुएँ धारण करना आँखों को शोभायमान भले ही लगे, सहृदय अंत:करण को वे कचोटती ही रहेंगी। अच्छा हो ऐसे फैशन और चमक-दमक से हम बाज आएँ, जिसके लिए असंख्यों जीवों को तड़प-तड़पकर अपना प्राण देना पड़ता हो। ऐसी ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कई अन्य वस्तुएँ भी हैं, जो प्राणि वध के, हत्या के तरीकों से ही प्राप्त की जाती हैं। कस्तूरी जीवित मृग को मारकर निकाली जाती है। चँबर ढुलाने की शोभा तब बनती है, जब चँवर गाय की हत्या करके उसकी पूँछ काटी जाती है। जीवित सीपों को पकड़कर उन्हें तेजाब के पानी में तड़पाकर मारा जाता है, तब उसका पेट फाड़कर मोती निकालते हैं। बालों वाले बच्चों के कोट, मोजे, दस्ताने, टोपे आदि के लिए लाखों सुंदर लोमड़ियाँ बंदूक का निशाना बनती हैं। हिरन अब अपनी मौत नहीं मरते, शिकारी ही उन्हें भून डालते हैं। मृगछाला बिछाकर भजन करना उस जमाने में उचित रहा होगा, जब हिरन स्वाभाविक रूप से अपनी मौत मरते थे। आज तो मृगछाला वाले संतों की जरूरतें पूरी करने को बेचारे हिरन कराहते हुए प्राण गँवाते हैं और इन भजन करने वालों को शाप दे जाते हैं, जिन्होंने उनके प्राण लेने की आवश्यकता व्यक्त की एवं भूमिका बनाई। आजकल चमड़ा आमतौर से काटे हुए पशुओं का आता है। स्वाभाविक मौत तो कोई भाग्यवान पशु ही मरता है। पशु वध से माँस में जितना लाभ है, उससे बहुत ज्यादा चमड़े में है। चमड़े का अधिक उपयोग होने से पशु वध का प्रचलन बहुत बढ़ा है। यदि हम चमड़े का उपयोग छोड़ दें और उसकी जरूरत रबड़, कैनवैस आदि से निकाल लें, तो हर साल करोड़ों निरीह पशुओं की हत्या रोकी जा सकती है। अच्छा हो अपने भीतर करुणा मिश्रित मानवता जगाएँ और हम तनिक-से फैशन के लिए असंख्य प्राणियों को अकारण हत्या से बचाएँ।

भगवान बुद्ध समाधि में थे। कभी धूप सिर को तपाती, तो कभी मेह ठिठुरन पैदा करता। यह देखकर सर्पराज मुचलिंद ने बुद्ध के शरीर में तीन फेरे डाल कर उनके सिर पर छाया कर दी। एक गाँव वाला आया, यह दृश्य देखा, तो डर कर भाग गया। समाधि खुली, तो सर्पराज वहाँ से हटकर अपने बिल की ओर चल पड़े। यह देखकर ग्रामीण ने पूछा- भगवान ! साँप तो जहरीला और गुस्से वाला जीव है, आपको काटा तो नहीं इसने? बुद्ध हँसकर बोले-तात्! जो प्राणियों को आत्मा और मित्र भाव से देखता है, उसका प्राणी भी अहित नहीं करते।

दवाओं के लिए, पौष्टिक आहार के लिए विज्ञान के नाम पर प्रतिदिन करोड़ों प्राणी काटे, उबाले, जलाए और भूने, चीरे जाते हैं। यह दवाएँ तत्काल कुछ लाभ भले ही दिखा दें, पर अंततः उन निरीह प्राणियों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का चीत्कार उन सेवन कर्त्ताओं को भी रुलाकर ही रहेगा। परमात्मा के दरबार में देर है अंधेर नहीं। दूसरों के प्राण लेकर अपना सुख चाहने वालों को निराश ही होना पड़ेगा। बिना हत्या की दवाएँ भी हर रोग की मौजूद हैं। उनका प्रयोग इन घृणित रक्त मिश्रित दवाओं से अधिक लाभदायक हैं, फिर भी न जाने किस बहकावे में आकर लोग मद्य-माँस मिश्रित इन घृणित दवाओं का सेवन करते हैं। संभव है इनसे किसी का शरीर सुधर जाए, पर आत्मा का पतन तो निश्चित रूप से होगा। माँसाहार शरीर को बढ़ाने का नहीं, गिराने का ही निमित्त बन सकता है, भले ही वह दवाओं के रूप में प्रयुक्त किया जाए। प्राणियों के प्रति बरती जाने वाली हर व्यापक निर्दयता का अंत जितनी जल्दी हो सके, उतना ही मनुष्य का गौरव कलंक रहित बन सकेगा।

प्रश्न

१. क्या यह उचित है कि जिस तरह अविकसित जीव परस्पर दुर्व्यवहार करते हैं, हमें भी करना चाहिए?
२. धर्म अध्यात्म और दर्शन का प्रयोजन क्या है?
३. घोड़े, गधे तथा अन्य सवारी में काम आने वाले तथा वजन ढोने वाले पशुओं से हमें किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए?
४. निर्दयता निवारक धारा के अनुसार पुलिस को क्या अधिकार दिए गए हैं?
५. घायल, अशक्त जानवरों के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया जाता है?
६. क्या हमें पक्षियों को निर्दयतापूर्वक पिंजड़ों में बंद करना चाहिए? क्यों?
७. क्या रेशम के कपड़े पहनना ठीक है, नहीं तो क्यों?
८. कस्तूरी, चँवर, मोती, बालों वाले बच्चों के कोट, मोजे, दस्ताने, टोपे आदि किस प्रकार प्राप्त किए जाते हैं?
९. चमड़े की जगह हमें किन वस्तुओं को उपयोग में लाना चाहिए कि निरीह प्राणियों का संहार न हो?
१०. क्या माँसाहार द्वारा हम अपने शरीर को सुदृढ़ बना सकते हैं?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पशुबलि निषेध हो

देवता उन्हें कहते हैं, जो दें। प्यार, सेवा, सहायता, सौजन्य, करुणा, सद्भावना और समता का जो निरंतर परिचय देते रहते हैं, वे देवता है। अंतरिक्ष में रहने वाले परमेश्वर की ऐसी ही अदृश्य शक्तियाँ, जो संसार के हित साधन में निरंतर प्रवृत्त रहती हैं, देवता मानी और पूजी जाती हैं। इन गुणों वाले मनुष्य भी धरती के देवता, भूसुर, महामानव, नर-नारायण कहलाते हैं। चाहे दृश्य हो चाहे अदृश्य, जो उच्च आध्यात्मिक तत्त्वों से, सत्प्रवृत्तियों एवं सद्भावनाओं से परिपूर्ण हैं, वे सत्ताएँ देव ही कहीं जाएँगी और सदा उनका अर्चन-अभिनंदन होता रहेगा। भारतीय धर्म में अनेक देवताओं का अस्तित्व माना गया है। यह और कुछ नहीं एक ही परमेश्वर की ऐसी विभिन्न शक्तियाँ एवं गतिविधियाँ हैं, जो विश्व-मंगल में निरंतर संलग्न हैं।

देव पूजन में स्वागत-सम्मान के साथ उपयुक्त वस्तुओं का नियोजन-अर्पण किया जाता है। धूप, दीप, नैवेद्य, चंदन, पुष्प, रोली, अक्षत जैसी मांगलिक वस्तुओं में ही वह सात्विकता रहती है, जिसे देवता की परम सतोगुणी सत्ता प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करे। देव-पूजा में दिव्य वातावरण एवं सतोगुणी भावनाओं की गतिविधियों एवं वस्तुओं का अर्पण अभीप्सित है। होता भी यही है।

तथ्य के सर्वथा विपरीत कुछ शताब्दियों से अपने देश के हर क्षेत्र में बहुत कुछ ऐसा उद्दंड आचरण प्रचलित हो चला है, जिसकी मूल तत्त्व के साथ कोई संगति नहीं बैठती। देव पूजा के लिए निरीह पशु-पक्षियों की नृशंस हत्या उन्हीं की प्रतिमाओं के सामने की जाए, इस कृत्य का किसी भी दृष्टि में कोई औचित्य दिखाई नहीं पड़ता। आध्यात्मिकता के तत्त्व ज्ञान-देवता की प्रकृति एवं स्थिति, पूजा की पवित्रता पर जितना अधिक विचार करते हैं, उतनी ही बलिदान की प्रचलित प्रथा सर्वथा अनुपयुक्त और अवांछनीय प्रतीत होती चली जाती है। निरीह प्राणियों की हत्या से देवता प्रसन्न होंगे और कुकृत्य को उचित मानकर उस कर्त्ता को कल्याणकारी वरदान देंगे, यह बात यदि वस्तुतः सही हो, तो हमें देवत्व की स्थिति पर ही पुनर्विचार करना होगा। तब दया, करुणा और देने की प्रकृति को उसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वभाव का अंग न मानकर, यह कहना होगा कि वे निष्ठुर, नृशंस, दुष्ट और शोषण के प्रतीक हैं और मूल्य प्राप्त करने के बाद ही अपनी कृपा बेचते हैं। वह मूल्य सज्जनतापूर्ण नहीं। उनको अपनी अंत:चेतना में आमंत्रित करके हम कहीं भारी भूल तो नहीं कर रहे हैं। देवत्व की दिशा में चलने की अपेक्षा हम कहीं असुरत्व को तो आमंत्रित नहीं कर रहे हैं?

भगवान् बुद्ध जैतवन में ठहरे थे। कुछ लोग एक पशु को बाँधकर उसकी बलि देने जा रहे थे। बुद्ध ने उन्हें रोका, तो एक व्यक्ति ने कहा- महाराज! बलि से देवता प्रसन्न होते हैं। बुद्ध बोले-देवों के नाम पर अपने सुख के लिए जो लोग पशुओं को मारते हैं, वह दूसरे जन्म में घोर कष्ट पाते हैं। यह सुनकर ग्रामवासियों ने जीव हिंसा त्याग दी।

मध्यकालीन अंधकार युग में इस देश में अनेक प्रकार की मूढ़ताओं का उद्‌भव हुआ है। उसने धर्म क्षेत्र को भी अछूता नहीं छोड़ा। दया की देवी, करुणा की सरिता ममतामयी माता भगवती महाशक्ति मनुष्यों को करुणा, सहृदयता, सज्जनता और उदारता की ही प्रेरणा दे सकती है। उसे ऐसे वीभत्स स्वरूप में प्रस्तुत करना, कि उसे नृशंस निर्दयता पसंद है, वस्तुत: भगवती अंबा को ही नहीं समस्त देव सत्ता को ही कलंकित करना है। देवता यदि मांस लोलुप हैं, हत्या देखकर प्रसन्न होते हैं, करुणा का परित्याग कर नृशंस आचरण करने की प्रेरणा करते हैं, तो उनमें और असुर में क्या अंतर रहा? यदि ऐसा ही सच होता, तो देव और असुर की परख करना असंभव ही हो जाता।

महावीर स्वामी एक गाँव से जा रहे थे। कुछ लोग एक पशु को बाँधे बलि की तैयारी कर रहे थे। महावीर स्वामी के मना करने पर ग्रामवासी बोले-इससे देवता प्रसन्न होंगे। इस पर महावीर ने कहा-यदि देवता पशुबलि से प्रसन्न हो सकते हैं, तो मनुष्य की बलि पाकर और भी अधिक प्रसन्न होंगे। बोलो तुम में से कोई बलि के लिए तैयार है? सो लोग एक-एक करके खिसक गए, वह पशु पड़ा रह गया। महावीर ने उसके बंधन काट कर उसे मुक्त कर दिया।

हो सकता है किसी मांसाहारी को अपने अभक्ष्य भोजन को देवता का प्रसाद समझकर खाने की सूझ सूझी हो और उसने वध की क्रिया को देव-बलिदान कहकर, जीभ लोलुपता में देव प्रसन्नता की उड़ान भरी हो।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हो सकता है कि प्राचीनकाल के तलवार युद्ध में सैनिकों का हाथ साफ करने का अभ्यास भैंसे, बकरी की गरदन पर कराया जाता हो और सोचा गया हो कि यह कृत्य करते समय किसी अभ्यासी के मन में करुणा उसे विचलित न कर दे, इसलिए उसे देव-बलिदान का रूप दे दिया जाए। हो सकता है, कि किन्हीं पुजारियों और उनकी मंडली ने माँसाहार की लोलुपता तृप्त करने के लिए भोले भक्तों को पशुबलि की सूझ सुझाई हो। हो सकता है, कि किसी मठाधीश ने मांस, चमड़ा और हड्डियों का अनायास ही बहुत सा लाभ पाने का रास्ता खोजा हो। हो सकता है, कि किसी ने देवताओं की प्रकृति तक में दुष्टता सिद्ध करके अपनी दुष्टता की स्वाभाविकता और आवश्यकता प्रतिपादित की हो। कह नहीं सकते इस पशुबलि प्रचलन के पीछे क्या कारण थे और यह प्रथा कैसे चल पड़ी? कारण जो भी रहा हो, यह एक तथ्य है कि सत्य एवं अहिंसा, दया और करुणा का आधार लेकर खड़ा हुआ भारतीय धर्म, देवताओं के सामने पशुबलि जैसी नृशंस प्रक्रिया का समर्थन नहीं कर सकता।

हो सकता है कि किन्हीं पुस्तकों में संस्कृत के कुछ श्लोक इस समर्थन में जुड़े हों। उन्हें अवांछनीय तत्त्वों द्वारा की गई घुसपैठ या मिलावट ही कहा जा सकता है। ऐसे दो-पाँच श्लोक प्रस्तुत करके भारतीय धर्म की आत्मा को नहीं झुठलाया जा सकता है। देवी सपना देकर या किसी अन्य प्रकार से ऐसा संकेत नहीं करती है कि मुझे हत्या और मांस द्वारा प्रसन्न किया जाए, यह कल्पना आदि से अंत तक निर्मूल है। जिस दिन देवी का हृदय इतना कठोर हो जाएगा, उस दिन उसे देवी कहलाने का अधिकार ही न रहेगा। वरदान, अनुदान या आशीर्वाद जिस दिन मांस-मदिरा के मूल्य पर खरीदे जाने लगेंगे, उस दिन वरदान दे सकने वाली अध्यात्म शक्ति का संसार से पलायन हो जाएगा। इन मान्यताओं में रत्ती भर भी सच्चाई नहीं है कि देवता पशुबलि चाहते हैं, या इस कुकृत्य द्वारा उन्हें प्रसन्न-संतुष्ट किया जा सकता है। यदि कर्मफल का सिद्धांत सत्य है और यदि हत्या की गणना पाप कर्मों में है, तो निश्चित रूप से इस नृशंस आयोजन से संबंध रखने वाले और समर्थन करने वाले अपनी आत्मा और परमात्मा के सामने पापी के रूप में प्रस्तुत होंगे और अपने कुकृत्य का दंड भोगेंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समर्थ गुरु रामदास एक गाँव में उपदेश दे रहे थे, तभी पता चला कि गाँव का पटेल देवी के आगे मुर्गे की बलि देने जा रहा है। समर्थ उठे और पटेल व उसके साथी को जा पकड़ा। दोनों हाथों से उन्हें घसीटते हुए बोले-आज मुझे देवी ने स्वप्न दिया कि मेरा पेट मुर्गे से नहीं, दो मुस्तंडों से भरेगा, सो तुम्हारी बलि देंगे। पटेल घबड़ाया, क्षमा माँगी और फिर कभी बलि न देने की शपथ ली, तब कहीं समर्थ ने उन्हें छोड़ा।

समय आ गया है कि हम अंधकार युग की विकृतियों का संशोधन करें ओर जो अवांछनीय एवं अनुचित है, उसे तिरस्कृत-बहिष्कृत करने के लिए साहसपूर्वक आगे आएँ। पशुबलि भारतीय धर्म पर कलंक है। इस कालोंच के रहते हम सत्य और अहिंसा का प्रतिपादन कैसे कर सकते हैं। फिर हमें भारतीय धर्म को असत्य और हिंसा का प्रतीक ही कहना पड़ेगा। देवताओं को दयालुता का ही प्रतीक रहने दिया जाए। जिन्हें मांसाहार करना हो, उसे व्यक्तिगत रूप से करें, बेचारे देवताओं को उसमें सम्मिलित न करें। मंदिरों की पवित्रता अक्षुण्ण रखी जानी चाहिए। पूजा प्रक्रिया में सात्विकता जुड़ी रहनी चाहिए। धर्म-कृत्यों का वातावरण सद्भावपूर्ण रहना चाहिए, इसके लिए यह नितांत आवश्यक है कि पशुबलि जैसी नृशंस प्रक्रिया को किसी धर्म स्थान या धर्म आयोजन में तनिक भी स्थान या समर्थन न मिले।

लोग माने नहीं, प्लेटो को भी उत्सव में पकड़ ले गए, पर वहाँ पशुबलि का दृश्य देखा, तो उनकी आत्मा कराह उठी। उन्होंने लोगों को पशुबलि न करने को कहा, तो लोग पूछ बैठे-जिन्होंने यह प्रथा चलाई क्या वे लोग मूर्ख थे? प्लेटो बोले-यह तो मैं नहीं जानता कि वे मूर्ख थे या नहीं, पर इतना अवश्य जानता हूँ कि उनके हृदय में दया और करुणा नहीं रही होगी। लोग इस कथन से प्रभावित तो हुए, पर बोले-बलि कैसे दें? प्लेटो ने एक मिट्टी की मूर्ति बनाई और उसे काटते हुए कहा-निर्जीव मूर्ति के लिए निर्जीव की बलि दी जा सकती है। यदि देवता को दिव्य भाव मानते हो, तो फिर उसके आगे बुरे विचारों की बलि दो। उस दिन से लोगों ने पशु बलि त्याग दी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रश्न

१. देवता की परिभाषा दीजिए?
२. देव-पूजन के समय उनके स्वागत-सम्मान के लिए किन वस्तुओं का उपयोग किया जाना चाहिए?
३. बलिदान की प्रचलित प्रथा किस प्रकार अनुपयुक्त है?
४. यदि यह मान लिया जाए कि देवता पशुबलि से प्रसन्न होते होंगे, तो उस ईश्वर का स्वरूप किस तरह का होगा?
५. बलिदान की परिभाषा कीजिए?
६. पशुबलि के प्रचलन के क्या कारण हो सकते हैं?
७. क्या पशुबलि भारतीय देवताओं को प्रिय है?
८. पशुबलि समाप्त करने के लिए क्या प्रयत्न किए जाने चाहिए?
९. आधुनिक युग में बलि की प्रथा में किस तरह संशोधन किया जाए?
१०. पशुबलि का समर्थन कौन करता है?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गौ संरक्षण की आवश्यकता

अपने देश में गोरक्षा का, गोपालन और गोपूजा का महत्त्व बहुत है। भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी अभिरुचि इस दिशा में सबसे अधिक प्रदर्शित करके सर्वसाधारण का ध्यान इस ओर आकर्षित किया था कि उन्हें, गौ का महत्त्व और उपयोग भली प्रकार समझना चाहिए और इस संदर्भ में व्यवहारत: कुछ करते रहना चाहिए।

मानवी स्वास्थ्य-सुरक्षा के लिए पौष्टिक आहार की आवश्यकता है, उसमें गोदुग्ध अग्रणी है। यों दूध तो भैंस और भेड़-बकरी का भी मिलता है और कहीं-कहीं गधी और ऊँटनी का भी प्रयुक्त होता है, पर विटामिन 'ए' जैसे बहुमूल्य तत्त्व जितनी मात्रा में गाय के दूध में हैं, उतने और किसी में नहीं। देखने में भैंस या भेड़ का दूध चिकना, गाढ़ा निकलता है, पर गुणों में गोरस से उसकी कोई तुलना नहीं। जितने उपयोगी खनिज, लवण, रोग-निरोधक, बलवर्द्धक जीवन तत्त्व गाय के दूध में हैं, उतने किसी में नहीं मिलेंगे। यही कारण है कि संसार भर के सभ्य और शिक्षित देशों में जहाँ गुण और लाभ को परखना जानते हैं, केवल गोदुग्ध ही प्रयुक्त होता है। यूरोप और अमेरिका के समस्त देश प्राय: गोदुग्ध ही सेवन करते हैं। भैंस तो अफ्रीका और भारत को छोड़कर अन्यत्र कहीं पाई भी नहीं जाती।

मिस्टर राल्फ ए. हेने से एक बार एक व्यक्ति ने प्रश्न किया-बच्चे कभी अस्वस्थ न हों, कोई ऐसा नुस्खा बताइए? श्री हेने ने उत्तर दिया-संतानों को शक्तिशाली और बलवान देखना हो, तो उन्हें गाय का दूध और मक्खन रोज दिन में तीन बार खाने को दीजिए।

आयुर्वेद शास्त्र में भी गोदुग्ध का ही प्रतिपादन है। धर्म-ग्रंथों में जहाँ कहीं दूध-घी की आवश्यकता का वर्णन है, वहाँ गोरस का ही उल्लेख समझना चाहिए। दूरदर्शी ऋषियों को लौकिक दृष्टि से गोरस की शारीरिक उपयोगिता विदित ही थी, इसके अतिरिक्त वे उसके मानसिक और आध्यात्मिक गुणों से भी परिचित थे। गाय में, गाय के बछड़े में जैसी फुर्ती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और चतुरता रहती है, वैसी भेड़ या भैंस में नहीं। स्पष्टतः इन पशुओं का मानसिक स्तर भी दूध में घुला रहता है। भैंस का दूध पीने से उसी जैसा आलस्य, प्रमाद एवं बुद्धूपन बढ़ता है। 'भेड़चाल' उक्ति में उस प्राणी की अदूरदर्शिता का ही वर्णन है। गाय इन सबसे निराली है। उसकी स्फूर्ति एवं चतुरता बात-बात में परखी जा सकती है। मार्ग में खेलते हुए बच्चे को गाय बचाती हुई चलेगी, पर भैंस अपनी राह चलती जाएगी, चाहे बूढ़ा-बच्चा कोई भी क्यों न कुचल जाए। तनिक सी गर्मी, सर्दी और थकान बर्दाश्त करना भैंस के लिए कठिन है। माता का जैसा स्वभाव होता है, बच्चा भी वैसी प्रकृति का बन जाता है। यह दूध का गुण है। भैंस या भेड़-बकरी का दूध पीने वाले उन्हीं जैसे हेय गुणों वाले बनते चले जाते हैं।

भू. पू. सूचना मंत्री के. के. शाह से एक बार संसद सदस्य नारायण स्वरूप शर्मा ने पूछा-क्या आपके पास कोई ऐसे आँकड़े हैं, जिनसे गाय की उपयोगिता सिद्ध होती हो? श्री शाह ने बताया-हाँ हैं। कुछ दिन पूर्व रूस के वैज्ञानिकों का शिष्टमंडल भारत आया था, उसके नेता डा. शिरोविच बहुत बड़े वैज्ञानिक हैं, उन्होंने बताया कि गाय दूध में एटॉमिक रेडिएशन से रक्षा करने की सबसे अधिक शक्ति है। अगर गाय के घी को आग में डालकर धुआँ उठाया जाए अर्थात् हवन किया जाए, तो उससे रेडिएशन का प्रभाव बहुत कम हो जाता है।

गाय की सबसे बड़ी विशेषता इसमें पाई जाने वाली आध्यात्मिक विशेषता है। हर पदार्थ एवं प्राणी में कुछ अति सूक्ष्म एवं रहस्यमय गुण होते हैं। सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण की मात्राएँ सब में पाई जाती हैं। जिस प्रकृति के पदार्थों और प्राणियों से हम संपर्क रखते हैं, हमारी अंतःस्थिति भी उसी प्रकार ढलने लगती है। हंस पाल कर बढ़ता हुआ सतोगुण और कौआ पालकर बढ़ता हुआ तमोगुण कभी भी अनुभव किया जा सकता है। भेड़-बकरी और भैंस को तमोगुण प्रधान माना गया है। गाय में सतोगुण की भारी मात्रा विद्यमान है। अपने बच्चे के प्रति गाय की ममता प्रसिद्ध है। वह अपने पालन करने वाले तथा उस परिवार को भी बहुत प्यार करती है। जंगलों में शेर, बाघ का सामना होने पर अपने ग्वाले को चारों ओर से घेर कर गाय झुंड बना लेती हैं और अपनी जान पर खेलकर अपने रक्षक को बचाने का त्याग, बलिदान एवं कृतज्ञता, आत्मीयता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का आदर्श भरा उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। ऐसी आध्यात्मिक विशेषता और किसी प्राणी में नहीं पाई जाती। इस स्तर के उच्च सद्गुण उन लोगों में भी बढ़ते हैं, जो उसका दूध पीते हैं। बैल की परिश्रमशीलता और सहिष्णुता प्रख्यात है। यह विशेषताएँ गोदुग्ध का उपयोग करने वाले में भी बढ़ती हैं।

गोरस एक सर्वांगपूर्ण परिपुष्ट आहार है। उसमें मानसिक स्फूर्ति एवं आध्यात्मिक सतोगुणी तत्त्वों का बाहुल्य रहता है, इसलिए मनीषियों तथा शास्त्रकारों ने गाय का वर्चस्व स्वीकार करते हुए उसे पूज्य, संरक्षणीय, सेवा के योग्य माना है। गाय की ब्राह्मण से तुलना की है और उसे अवध्य, न माने जाने योग्य घोषित किया गया है। गोपाष्टमी और गोवर्धन दो त्यौहार ही गोरक्षा की ओर जनसाधारण का ध्यान स्थिर रखने के लिए बनाए गए हैं। चौके में पहली रोटी गाय के लिए निकालने की परंपरा भी इसीलिए है कि गाय को एक कौटुंबिक प्राणी समझते रहा जाए। राजा दिलीप जैसे ऐतिहासिक महापुरुष की गोभक्ति प्रसिद्ध है, जिसके कारण उन्होंने सुसंतति प्राप्त की। आज भी वह तथ्य ज्यों का त्यों है। गाय के संपर्क में रहने वाले, गोरस पीने वाले पति-पत्नी निस्संदेह सुयोग्य और स्वस्थ संतान पैदा कर सकते हैं। उनका पुरुषत्व साँड़ की तरह सुस्थिर बना रहता है। पुराणों में गोभक्ति और गो-सेवा के लिए बहुत कुछ कर सकने वाले सत्पुरुषों के अगणित उदाहरण विद्यमान हैं। उस समय शिक्षा की गुरुकुल प्रणाली थी। हर छात्र को आश्रम की गौएँ चरानी पड़ती थीं और आहार में गोरस की समुचित मात्रा मिलती थी। उस समय छात्रों को प्रतिभा, परिपुष्टता एवं सज्जनता की अभिवृद्धि के महत्त्वपूर्ण लाभ मिलते थे, उनमें गोसंपर्क भी एक बहुत बड़ा कारण था।

गोहत्या के विरुद्ध आंदोलन कर रहे कुछ स्वयंसेवकों से एक अधिकारी ने पूछा-बताइए, आप लोगों में से कितनों ने गाय पाल रखी है? एक भी स्वयंसेवक मुँह न उठा पा रहा था। अधिकारी ने कहा-कितने खेद की बात है कि आप लोग गाय की बात कहते हैं और पालते हैं- भैंस। दूध भैंस का ही पसंद करते हैं, जबकि गुणकारी गाय का ही दूध है।

कुछ लोगों ने कहा-गाय का दूध सस्ता बिकता है, इसलिए भैंस पालने के लिए विवश होते हैं। अधिकारी ने कहा-गाय का दूध, गाय का घी उपयोगी है, तो आप उसका दाम बढ़ाइए, न दीजिए लोगों को सस्ते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दामों पर। उसका लाभ स्वयं लीजिए, तो लोग अपने आप उसकी महत्ता समझेंगे।

भारत कृषि प्रधान देश है। यहाँ जुताई, सिंचाई, गुड़ाई, मड़ाई (अन्न को पौधे से अलग करना) के लिए बैल की अनिवार्य आवश्यकता है। गाय का गोबर अपने ढंग की अति उर्वरक खाद है। अपने देश की कृषि गोवंश पर निर्भर है। रासायनिक खाद अचार, चटनी की तरह हैं, उनसे धरती की भूख नहीं बुझ सकती, वह तो गोबर से ही संभव है। मँहगी, बार-बार बिगड़ने वाली, खर्चीली और तकनीकी ज्ञान की अपेक्षा रखने वाली मशीनें भारत की कृषि समस्या को हल नहीं कर सकतीं। अनेक कारणों से यहाँ तो बैल ही सफल होगा। अन्न और दूध हम गोवंश की कृपा से ही प्राप्त कर सकते हैं, इसीलिए उसका संरक्षण सब प्रकार से उपयुक्त है।

गोबर से लीपने पर घर रोग-कीटाणु मुक्त होते हैं। गो-मूत्र असाध्य रोगों में भी रामबाण औषधि का काम करता है। इसकी गंध से विषैले रोग-कृमि अनायास ही मरते हैं और स्वास्थ्य रक्षा की एक सहज व्यवस्था बनी रहती है। आवश्यक है कि हम गोरक्षा पर ध्यान दें और अपनी शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, आर्थिक एवं धार्मिक स्थिति को परिपुष्ट बनाने के लिए इस दिशा में कुछ ठोस कदम उठाएँ।

अमेरिका के पेंसिलवानिया के एक वैज्ञानिक ने गोमूत्र की जाँच करके बताया कि भारतीयों ने गोमूत्र और गोबर को इतना महत्त्व दिया है वह निरर्थक नहीं, रासायनिक विश्लेषण से पता चलता है कि गोमूत्र में भी विटामिन तत्त्व पाया जाता है।

यह एक दुर्भाग्य ही है कि जिस देश में गौ को पूज्य और गोरक्षा को धर्म माना जाता है, उसी में उसकी सबसे अधिक दुर्गति हो। गौ की नस्ल बुरी तरह खराब हो चुकी है। वे जरा-सा दूध देती और बेकार समझी जाती है। कसाई की छुरी के नीचे ही उन्हें आश्रय मिलता है। गोवंश बुरी तरह घटता और नष्ट होता चला जा रहा है। उसका एक मात्र कारण, उस ओर बरती जाने वाली हमारी उपेक्षा ही है। मांसाहारी देशों में गायें एक-एक मन दूध दें और गोरस की नहरें बहें और हम गोभक्तों में उसका दर्शन भी दुर्लभ रहे, यह कैसी विडंबना है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अरबी कॉलेज लखनऊ मौलाना सैयद मुहम्मद सादिक ने मुहम्मद साहब का विस्तृत जीवन परिचय लिखा और बतायां कि जो लोग कहते हैं, पैगंबर गोमाँस खाते थे, वे गलत कहते हैं, कुरान शरीफ में कहीं गोमाँस खाने का समर्थन नहीं है।

हमें चाहिए कि गोदुग्ध की उपयोगिता स्वीकार करें और उसी की माँग करें। ऐसी दशा में भैंस पालने वाले सहज ही गोपालने लगेंगे। जिसकी माँग होगी, उसका उत्पादन भी होगा और उसका स्तर भी उठेगा। हम जय गाय की बोलते हैं और दूध भैंस का पीते हैं। इस प्रकार गोरक्षा कैसे संभव होगी ? जिस दिन जनसाधारण की समझ में गोरस की उपयोगिता आ जाएगी, उसी की माँग की जाएगी, तो देखते-देखते यह देश गोधन से भरा-पूरा दिखाई देने लगेगा। हमें चाहिए कि गोदुग्ध एवं गोघृत के सेवन का व्रत लें और दूसरों को भी इसके लिए तैयार करें। जब गोरस की माँग बढ़ेगी, तब गोपालन की व्यवस्था भी बनेगी। जो लोग गाय का धार्मिक या आर्थिक महत्त्व समझते हैं, उनके लिए उचित है कि गोपालन, गोसंवर्धन और गोरस उत्पादन के लिए बड़े पैमाने पर व्यावसायिक स्तर पर काम करें, चाय वालों की तरह गोरस की महत्ता समझाने के लिए व्यापक प्रचार करें और धर्म, पुण्य तथा राष्ट्र की महती सेवा का सुयोग प्राप्त करें। सरकार और जनता ये दोनों वर्ग मिलकर गोरक्षा के लिए कुछ ठोस काम करें, यह आज की एक महती आवश्यकता है।

प्रश्न

१. भारत में गोपालन का क्या महत्त्व है ?
२. गाय का दूध सर्वश्रेष्ठ क्यों माना जाता है ?
३. सिद्ध कीजिए कि गोरस सर्वांगपूर्ण परिपुष्ट आहार है ?
४. गोरक्षा के महत्त्व को दर्शाने वाले दो पर्वों का वर्णन करो ?
५. राजा दिलीप ने गौ की सेवा क्यों की थी ?
६. बैल की उपयागिता पर प्रकाश डालिए ?
७. गोवर्धन पूजा का महत्त्व स्पष्ट कीजिए ?
८. गोवंश नष्ट होने के कारण बताइए ?
९. गोपालन के लाभों पर प्रकाश डालिए ?
१०. गोदुग्ध और गोघृत के सेवन का व्रत क्यों लेना चाहिए ? ●●

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर्मफल का भोग अनिवार्य

यदि कर्म का फल तुरंत नही मिलता, तो इससे यह नहीं समझ लेना चाहिए कि उसके भले-बुरे परिणाम से हम सदा के लिए बच गए। कर्मफल ऐसा अमिट तथ्य है, जो आज नहीं तो कल भुगतना ही पड़ेगा। कभी-कभी इन परिणामों में देर इसलिए होती है, कि ईश्वर मानवीय बुद्धि की परीक्षा करना चाहता है कि व्यक्ति अपने कर्त्तव्य धर्म समझ सकने और निष्ठापूर्वक पालन करने लायक विवेक बुद्धि संचित कर सका या नहीं। जो दंड भय से डरे बिना दुष्कर्मों से बचना मनुष्यता का गौरव समझता है और सदा सत्कर्मों तक ही सीमित रहता है, समझना चाहिए कि उसने सज्जनता की परीक्षा पास कर ली और पशुता से देवत्व की और बढ़ने का शुभारंभ कर दिया।

भगवान् श्रीकृष्ण एक पैर पर दूसरा पैर चढ़ाए हुए जंगल में लेटे थे। उनके पैर का पद्म चमक रहा था, एक बहेलिए ने उसे किसी हिरण की आँख समझकर बाण चला दिया, पर पास जाकर देखा तो श्रीकृष्ण थे। उनके प्राण निकलते देखकर बहेलिया अपने दुष्कर्म के लिए रोने लगा। भगवान श्रीकृष्ण ने समझाया-तात्! दुःख मत करो, भगवान् हुआ तो क्या, कर्मफल से मैं भी नहीं बच सकता। पिछले जन्म में मैं राम था, तुम थे बालि। तुम्हें मैंने छिपकर मारा था। इसी कर्म का फल मुझे अब मिल रहा है। कोई भी कर्मफल से कभी भी बच नहीं सकता।

दंडभय से तो विवेक रहित पशु को भी अवांछनीय मार्ग पर चलने से रोका जा सकता है। मानवीय अंतःकरण की विकसित चेतना तभी अनुभव की जा सकेगी, जब वह कुमार्ग पर चलने से रोके और सन्मार्ग के लिए प्रेरणा प्रदान करे। लाठी के बल पर भेड़ों को इस या उस रास्ते पर चलाने में गड़रिया सफल रहता है। सभी जानवर इसी प्रकार दंडभय दिखाकर अमुक प्रकार से जोते जाते हैं। यदि हर काम का तुरंत दंड मिलता और ईश्वर बलपूर्वक अमुक मार्ग पर चलने के लिए विवश करता, तो फिर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य भी पशुओं की श्रेणी में आता, उसकी स्वतंत्र आत्मचेतना विकसित हुई या नहीं इसका पता ही नहीं चलता।

भगवान ने मनुष्य को भले या बुरे कर्म करने की स्वतंत्रता इसीलिए प्रदान की है कि वह अपने विवेक को विकसित करके भले-बुरे का अंतर करना सीखे और दुष्परिणामों के शोक संतापों से बचने एवं सत्परिणामों का आनंद लेने के लिए स्वतः, अपना पथ निर्माण कर सकने में समर्थ हो। उन्नति को अपनाने वाला विवेक और कर्त्तव्य परायणता यह दो ही कसौटी मनुष्यता का आत्मिक स्तर विकसित होने की हैं। इस आत्मविकास पर ही जीवनोद्देश्य की पूर्ति और नर जन्म की सफलता अवलंबित है। ईश्वर चाहता है कि व्यक्ति अपनी स्वतंत्र चेतना का विकास करे और विकास के क्रम से आगे बढ़ता हुआ पूर्णता का लक्ष्य प्राप्त करने की सफलता प्राप्त करे।

यदि ईश्वर को यह प्रतीत होता कि बुद्धिमान बनाया गया मनुष्य पशुओं जितना मूर्ख ही बना रहेगा, तो शायद उसने दंड के बल पर चलाने की व्यवस्था उसके लिए भी सोची होती। तब झूठ बोलते ही जीभ में छाले पड़ने, चोरी करते ही हाथ में फोड़ा उठ पड़ने, बेईमानी करते ही बुखार आ जाने, कुदृष्टि डालते ही आँख दुखने लगने, कुविचार आते ही सिर दर्द होने जैसे दंड मिलने की तुर्त-फुर्त व्यवस्था बनी होती, तो किसी के लिए भी दुष्कर्म करना संभव ही न होता। लोग, जब उसमें लाभ की अपेक्षा प्रत्यक्ष हानि देखते, तो दुष्कर्म करने की हिम्मत न करते। ऐसी स्थिति में मनुष्य की स्वतंत्र चेतना, विवेक बुद्धि और आंतरिक महानता के विकसित होने का अवसर ही नहीं आता और आत्मविकास के बिना पूर्णता के लक्ष्य को प्राप्त कर सकने की दिशा में प्रगति ही न होती। अतएव परमेश्वर के लिए यह उचित ही था कि मनुष्य को अपना सबसे बड़ा, सबसे बुद्धिमान और सबसे जिम्मेदार बेटा समझकर उसे कर्म करने की स्वतंत्रता प्रदान करे और यह देखे कि वह मनुष्यता का उत्तरदायित्व सँभाल सकने में समर्थ है या नहीं? परीक्षा के बिना वास्तविकता का पता भी कैसे चलता और उसे अपनी इस सर्वश्रेष्ठ रचना मनुष्य में कितने श्रम की सार्थकता हुई, यह कैसे अनुभव होता?

यों समाज में भी कर्मफल मिलने की व्यवस्था है और सरकार द्वारा भी उसके लिए साधन जुटाए गए हैं। पुलिस, जेल, कचहरी, कानून,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अभी कई आवश्यक कार्य करने हैं, मुझे एक वर्ष के लिए छोड़ जाओ। विष्णु के दूत "तथास्तु" कह कर छोड़ गए। बुढ़िया ने एक वर्ष धन कमाने में लगाया। अनुचित लोभ के कारण उसने नीत-अनीति कुछ भी नहीं देखा। एक वर्ष पीछे यमदूत वहाँ पहुँचे, तो बुढ़िया बोली-पहले तो विष्णु दूत आए थे, अब तुम कैसे आ गए? इस पर उन्होंने कहा-बुढ़िया! पहले तूने अच्छे कर्म किए थे, सो विष्णु दूत भेजे गए। भगवान के यहाँ तो कर्मों का हिसाब है। एक वर्ष में तूने पाप ही पाप किए हैं। सो उठ और नरक की तैयारी कर।

मनुष्यता की कसौटी सन्मार्गगामिता है। विवेक की परख कुमार्ग से बचने में है। मानवीय गरिमा का तकाजा है कि हम न्याय, औचित्य और कर्त्तव्य को अपनाएँ। न तो अशुभ सोचें और न अनुचित कदम उठाएँ, इसी में बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता सन्निहित है।

वसु अपनी पत्नियों के साथ धरती पर विचरण के लिए आए। महर्षि वसिष्ठ के आश्रम में नंदिनी गाय बँधी थी, उसे देखकर छोटे वसु की पत्नी का मन उसे लेने का हो गया। उसके लिए वसु को चोरी करनी पड़ी। उसी का दंड था कि उन्हें मनुष्य योनि में जन्म लेना पड़ा। भीष्म पितामह वह वसु ही थे।

प्रश्न

१. सज्जनता की परीक्षा कैसे की जाती है?
२. कर्म फल के परिणाम में विलंब क्यों होता है?
३. मनुष्य का आत्मिक स्तर विकसित होने की कौन-सी दो कसौटियाँ हैं?
४. कानून में ऐसी कौन-सी कमी है कि सही अपराधी पकड़ में नहीं आते?
५. उन्नतिशील बनने का रहस्य क्या है?
६. अनैतिक व्यक्ति को लोग प्यार क्यों नहीं करते?
७. सामाजिक तिरस्कार एवं असहयोग भी प्रभावशाली हैं, सिद्ध कीजिए?
८. पापी मनुष्य एक क्षण के लिए भी शांति का अनुभव क्यों नहीं करता है?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुष्कर्मों के दंड और प्रायश्चित

जानबूझकर या अनजाने में कुबुद्धिवश मनुष्य कई प्रकार के अनुचित कार्य करता रहता है। ये बुरे कर्म उसकी आत्मिक प्रगति, व्यक्तित्व के विकास तथा भौतिक सफलताओं में भारी अवरोध सिद्ध होते हैं। आत्मा पर कषाय-कल्मषों का जितना आवरण चढ़ता जाता है, उतना ही अंत:करण भारी और कलुषित होता चला जाता है। इस रुग्ण स्थिति में कोई क्या आत्मसंतोष अनुभव करेगा और किसे उत्कृष्टता की ओर बढ़ने के लिए साहस होगा। आंतरिक दुर्बलता सबसे बड़ी दुर्बलता है। वह मनुष्य को ऐसा अपंग और नि:स्वत्व बनाकर छोड़ती है कि, कोई महत्त्वपूर्ण काम कर सकना उसके लिए संभव ही नहीं रहता।

शारीरिक और मानसिक अस्वस्थता के अनेक कारण हैं। बीमारी होने की अनेक वजह हो सकती हैं और मानसिक उद्विग्नता के भी अनेक आधार हो सकते हैं, पर सबसे बड़ा कारण है, वह आत्म-प्रताड़ना, जो अनैतिक एवं अवांछनीय कार्य करने के कारण निरंतर अंतरंग में उठती रहती है। जिसने अनैतिक एवं असामाजिक कार्य किए हैं, जीवन की शुद्ध चादर पर तरह-तरह के दाग-धब्बे लगाए हैं, उसके लिए चैन से बैठ सकना कठिन है। आत्मधिक्कार कुछ कह सुनकर ही चुप नहीं हो जाते, वरन् अनेक रास्तों से फूटकर दबी हुई आग की तरह निकलते हैं। खाया हुआ पारा शरीर से फूट-फूटकर निकलता है। वह किसी को भी पचता नहीं। इसी प्रकार पाप कर्म भी आत्मधिक्कार या आत्मग्लानि के रूप में भीतर ही भीतर कचोटते ही हैं, इसके अतिरिक्त वे अनेक कष्टकारक प्रताड़नाओं के रूप में फूट कर बाहर भी आते हैं।

शारीरिक रोगों के बारे में नवीनतम शोध यह है कि कष्ट साध्य, असाध्य और किसी भी चिकित्सा से काबू में न आने वाले शारीरिक रोग अनाचार अपनाने के कारण उत्पन्न होते हैं। आहार-विहार के व्यतिक्रम से जो बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं, वे साधारण उपचार से स्वल्पकाल में ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अच्छी हो जाती हैं, किंतु मस्तिष्क के गहन अंतराल में छिपी हुई आत्मधिक्कार की प्रताड़ना नाड़ियों, कोषों, स्वस्थ जीवन कणों में इतनी गहराई तक प्रवेश कर जाती है कि दवाओं का उन तक प्रभाव नहीं पहुँचता और वह उद्वेग ऐसे शरीर कष्टों के रूप में बिखरता रहता है। शास्त्रों में कष्टसाध्य रोग संचित पापों का परिणाम ही माने गए हैं, इस तथ्य को आज का शरीर शास्त्र और मनोविज्ञान शास्त्र अक्षरशः सिद्ध कर रहे हैं।

दुष्कर्मों और कुविचारों के जो कुसंस्कार मन पर जमते हैं, वे एक प्रकार से विषैली पर्तों के रूप में चेतन मस्तिष्क और अचेतन चित्त पर जमते रहते हैं। ये मन की चंचलता, उद्विग्नता, अस्थिरता, आवेग विक्षोभ के रूप में फूटते हैं और व्यक्ति को अर्द्धपागल जैसा बना देते हैं। वह किसी काम को एकाग्र चित्त होकर कर नहीं पाता और हर घड़ी उधेड़ बुन में लगा रहता है। फलस्वरूप पग-पग पर असफलता मिलती और ठोकर लगती है। असंतुलित व्यवहार से, संबंधित व्यक्ति रुष्ट और असंतुष्ट होकर असहयोगी एवं विरोधी बन जाते हैं। स्वजनों से कलह करने का अभ्यस्त व्यक्ति प्रेत-पिशाच की तरह हर घड़ी विक्षुब्ध बना रहता है। मस्तिष्क न कुछ ठीक तरह सोच पाता है, न कोई सही रास्ता मिलता है। भटकता और भ्रमित हुआ मन जीवन को ऐसी कँटीली झाड़ियों में उलझा देता है, जहाँ केवल शोक-संताप ही दृष्टिगोचर होता है। शरीर से रुग्ण और मन से विक्षुब्ध व्यक्ति जीवित रहते नरक भोगता है। भीतर ही भीतर उसे इतने घाव रहते हैं कि जिनके कारण सिर्फ कराहते और तड़फते हुए ही उसे देखा जा सकता है। उसे पाप कर्मों से निवृत्ति कैसे मिले ? जिससे चित्त हलका हो और उन अंतर्व्यथाओं से पीछा छूटे, जो यमदूतों की तरह व्यक्ति को दुःखी और असफल बनाने के लिए पीछे लगी हुई हों। इस प्रश्न का भारतीय संस्कृति में सनातन उत्तर एक ही रहा है-प्रायश्चित। अपने यहाँ हर पाप के प्रायश्चित हैं। उन्हें करके अवांछनीय आचरणों की मलीनता धोई जा सकती है, रास्ते में गड्ढा खोदा हो, तो उसका प्रायश्चित यही है कि उसे पाटने के लिए उतना ही प्रयत्न किया जाए, जितना कि खोदने के लिए किया गया था। किसी को हानि पहुँचाई हो, तो उसका प्रायश्चित यही है कि उस हानि की भरपाई कर दी जाए। अपने दोष को स्वीकार करना, उसके लिए दुःख मानना, लज्जित होना और आगे के लिए इस तरह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की भूलों की पुनरावृत्ति न करना यह मनोभूमि तो प्रायश्चित कर्त्ता की होनी ही चाहिए, अन्यथा फिर उसका कुछ प्रयोजन ही नहीं रह जाता। एक ओर प्रायश्चित की बात सोची जाए और दूसरी ओर उसी दुष्कर्म को दुहराते रहा जाए, तो यह विडंबना एक प्रकार की मखौल ही मानी जाएगी।

बहादुर शाह जफर रंगून में निर्वासित जीवन जी रहे थे। अंग्रेज उनके साथ बहुत ही बुरा व्यवहार कर रहे थे। एक दिन उनके एक संबंधी ने सुझाया-आपको इतनी तंगी में रखा जा रहा है, आप विरोध क्यों नहीं करते? जफर हँसकर बोले-अभी तो मुझे कठोर दंड मिलना चाहिए, ताकि देशवासियों की रक्षा के कर्त्तव्य से गिर जाने का पाई-पाई दंड इसी जीवन में भुगत सकूँ।

ईश्वर से क्षमा माँगना उचित है। इससे आत्मशोधन को बल मिलता है। तीर्थयात्रा, देवदर्शन, व्रत-उपवास करने से चित्त हल्का होता है और उस भूल को आगे न दुहराने की प्रेरणा मिलती है, पर इतने से ही पूर्व कृत्यों का फल भोगने या खाई पाटने जैसी तो कोई बात बनती नहीं। ऋण से उऋण वही हो सकता है, जो लिए हुए धन को वापस कर दे। समाज को हमने दुष्कर्मों से जितनी क्षति पहुँचाई है, उसकी पूर्ति तभी होगी, जब हम उतने ही वजन के सत्कर्म करके समाज को लाभ पहुँचाएँ। इस प्रकार हानि और लाभ का पलड़ा जब बराबर हो जाएगा, तभी यह कहा जाएगा कि पाप का प्रायश्चित हो गया और आत्मग्लानि एवं आत्मप्रताड़ना से छुटकारा पाने की स्थिति बन गई।

यह ठीक है कि जिस व्यक्ति के साथ अनाचार बरता, अब उस घटना को बिना हुई नहीं बनाया जा सकता। संभव है व्यक्ति अन्यत्र चला गया हो। ऐसी दशा में उसी आहत व्यक्ति की उसी रूप में क्षति पूर्ति करना संभव नहीं, किंतु दूसरा मार्ग खुला है। हर व्यक्ति समाज का अंग है। व्यक्ति को पहुँचाई गई क्षति वस्तुतः प्रकारांतर से समाज़ की ही क्षति है। इसे दूसरी प्रकार से समाज सेवा के लिए श्रम, समय एवं धन आदि देकर पूरा कर सकते हैं। चोरी, बेईमानी, रिश्वत, कमतोल, मिलावट, धोखेबाजी आदि से जो धन कमाया हो, तो उसे लोकमंगल आदि के आयोजनों में खर्च करके प्रायश्चित की विधि पूरी की जा सकती है। पिता के मरने पर उसकी आत्मशांति के लिए श्राद्ध के नाम पर किए गए पुण्य- परमार्थ दूसरों को ही लाभ देते हैं। स्वर्गीय पिता जी तो उसे लेने नहीं आते, फिर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भी श्राद्ध का प्रयोजन पूरा हो जाता है, क्योंकि स्वर्गीय आत्मा भी समाज की एक अंग थी और इसी समाज के कल्याण के लिए जो किया गया उस श्राद्ध से पिता की सेवा सहायता करने जैसा ही पुण्य मिल गया। यही नीति नियम प्रायश्चित विधान पर लागू होता है।

वृद्धावस्था के कारण एक बूढ़े के हाथ-पाँव काँपा करते थे। इससे खाने को दी हुई वस्तुएँ बिखर जातीं, फर्श खराब हो जाता, बर्तन टूट जाते। उसका लड़का और बहू दोनों नाराज होते। आखिर उन्होंने बूढ़े के लिए घर के बाहर लकड़ी के बर्तनों में खाने का प्रबंध कर दिया। एक दिन उसका लड़का लकड़ी का टुकड़ा काट-छाँट रहा था। उसके माता-पिता उसके पास आए और बोले-यह क्या कर रहा है? लड़का बोला-पिताजी! जब आप लोग बूढ़े हो जाएँगे, तब खाना देना पड़ेगा, उसी के लिए लकड़ी के बर्तन बना रहा हूँ। यह सुनकर पति-पत्नी बहुत ही शर्मिंदा हुए और अपने बूढ़े पिता के साथ दुर्व्यवहार करना बंद कर दिया।

यदि हमने बेईमानी से धन कमाया हो, तो सारा अथवा जितना अधिक संभव हो लोकमंगल के लिए लौटा दें। यदि व्यभिचार करके किसी का शील डिगाया हो, तो समाज में शील संवर्द्धन और सदाचार संस्थापन के लिए समय या दूसरे प्रकार का अनुदान देकर उस सामाजिक क्षति की पूर्ति करें। उत्पीड़न का प्रायश्चित पीड़ितों की सुख-सुविधा बढ़ाने में होना चाहिए। पूर्वजों तथा दूसरों से जो सेवा, सहायता एवं स्नेह का लाभ उठाया है, उससे उऋण होने के लिए पिछड़ी मनोभूमि तथा परिस्थिति के लोगों को ऊँचा उठाने में योगदान दिया जाना चाहिए। जीवन में सेवा-सहायता का समावेश पुण्य परमार्थ संचित करने की दृष्टि से तो आवश्यक हैं और पिछले पापों का प्रायश्चित करके, आत्मप्रताड़ना के फलस्वरूप मिल रहे कष्टों की निवृत्ति की दृष्टि से भी।

श्रावस्ती के नगर सेठ ने तथागत से प्रश्न किया-भगवन्! बिना तप किए क्या भगवान नहीं मिल सकते? तथागत चुप रहे। एक दिन वह सेठ के घर आमंत्रित हुए। सेठ ने बढ़िया खीर बनाई। भोजन के लिए उपस्थित तथागत ने अपना कमंडल आगे कर दिया और बोले-खीर इसी में डाल दो। लेकिन खीर इसमें तो गोबर है, सेठ बोला-इससे खीर खराब हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाएगी? तथागत हँसे और बोले-वत्स! अपने को शुद्ध न करो, तो ईश्वर मनुष्य में आकर भी उसे आनंद नहीं दे सकता।

सस्ते मूल्य के कर्मकांड करके पापों के फल से छुटकारा पा सकना सर्वथा असंभव है। स्वाध्याय, सत्संग, कथा, कीर्तन, तीर्थ, व्रत आदि से चित्त में शुद्धता की वृद्धि होना और भविष्य में पाप वृत्तियों पर अंकुश लगाने की बात समझ में आती है। धर्म कृत्यों से पाप नाश के जो माहात्म्य शास्त्रों में बताए गए हैं, उनका तात्पर्य इतना ही है कि मनोभूमि का शोधन होने से भविष्य में बन सकने वाले पापों की संभावना का नाश हो जाए। ईश्वरीय कठोर न्याय व्यवस्था में ऐसा ही विधान है कि पाप के परिणामों की आग में जल मरने से जिन्हें बचना हो, वे समाज की उत्कृष्टता बढ़ाने की सेवा-साधना में संलग्न हों और लदे हुए भार से छुटकारा प्राप्त कर शांति एवं पवित्रता की स्थिति उपलब्ध कर लें।

प्रश्न

१. कौन-सी वस्तु मनुष्य को महत्त्वपूर्ण काम नहीं करने देती है ?
२. पाप और आंतरिक दुर्बलताएँ किस तरह पतित करती हैं?
३. कष्ट साध्य रोगों का कारण क्या है?
४. दुष्कर्म और कुविचार किस प्रकार प्रभाव डालते हैं?
५. पाप से छुटकारा कैसे मिल सकता है?
६. आत्मा को बल किस प्रकार मिलता है?
७. प्रायश्चित के नाम पर फैली विकृतियाँ बताओ?
८. आत्मशोधन का शुद्ध स्वरूप क्या है?
९. क्या सस्ते कर्मकांड प्रायश्चित की आवश्यकता पूरी करते हैं?
१०. आत्मविकास की ईश्वरीय व्यवस्था की जानकारी दो?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग की साधना

आत्मा और परमात्मा को जोड़ देने वाली प्रक्रिया का नाम योग है। योगाभ्यास, योग साधना करके श्रेयार्थी पूर्णता का लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। योगाभ्यास के दो मार्ग हैं, एक भौतिक दूसरा आत्मिक। भौतिक वे हैं, जिनमें शरीर की क्रियाएँ करनी पड़ती हैं और आत्मिक वे हैं, जिनमें मन और चेतना को परिष्कृत किया जाता है। शरीर भौतिक पदार्थों से बना है और उसमें भौतिक शक्तियाँ भरी पड़ी हैं। अंत:करण चेतना तत्त्व से बना है। इसलिए वह सूक्ष्म और दिव्य शक्तियों का निवास है। शरीर द्वारा किए गए योगाभ्यास से भौतिक उत्कर्ष का लाभ मिलता है और मानसिक साधनाओं द्वारा आत्मबल बढ़ने और आत्मतत्त्वों के विकास का मार्ग खुलता है। शरीर क्षेत्र की अपेक्षा आत्मिक क्षेत्र की समर्थता, संभावना एवं सामर्थ्य अधिक है, इसलिए तत्त्वज्ञानी सर्वसाधारण के लिए मानसिक साधनाओं का निर्देश विशेष रूप से देते रहे हैं और विशिष्ट व्यक्तियों की शरीरगत अभ्यासों की बात कहते रहते हैं।

शरीरगत अभ्यास में आसन, प्राणायाम, नेति, धोति, वस्ति, बज्रोली, कपालभाति, मुद्रा, बंध, व्रत, यात्रा, स्नान, कीर्तन जैसे साधन बताए जाते हैं। यह सब कार्य शरीर को करने पड़ते हैं, इसलिए इनके परिणाम भी प्राय: भौतिक स्तर के होते हैं। मानसिक साधनाओं में ध्यान, धारणा, प्रत्याहार, समाधि जैसे प्रसंग आते हैं। शरीरगत योग ८४ प्रकार के विख्यात हैं। क्रियाएँ भी ऐसी करनी पड़ती हैं, जो कष्टसाध्य होती हैं और भूल होने पर उल्टी हानिकारक हो सकती हैं। मानसिक साधनाओं में ऐसी कठिनाई नहीं है। इसलिए वे सर्वसाधारण के लिए सुलभ हैं। उन्हें बिना किसी की सहायता से भी किया जा सकता है। मानसिक योग साधनाओं में तीन ही प्रमुख हैं- (१) ज्ञानयोग, (२) कर्मयोग; (३) भक्तियोग। इन्हें बाल-वृद्ध, नर-नारी, शिक्षित-अशिक्षित कोई भी किसी स्थिति में रहकर बिना किसी कठिनाई के कर सकता है और आत्मा को परमात्मा से मिलाने का योग, लक्ष्य प्राप्त कर सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्ञानयोग का प्रयोजन है जीवन के स्वरूप प्रयोजन लक्ष्य और सदुपयोग की रूपरेखा ठीक तरह हृदयंगम करना और अंत:करण में इतना उत्साह एवं साहस उत्पन्न करना कि आत्मकल्याण के उद्देश्य से अपनी विचारणा और कार्यपद्धति के निर्माण में जुट जाए। इसके लिए हम को बार-बार आत्मचिंतन करना चाहिए और अपनी वर्तमान स्थिति पर विचार करना चाहिए। यह भी विचारना चाहिए कि बोलने, सोचने, पढ़ने की-उपार्जन, गृहस्थ, शिक्षा, चिकित्सा, वाहन, मनोरंजन आदि की जो सुविधाएँ किसी भी प्राणी को नहीं मिलीं, केवल मनुष्य को ही भगवान ने क्यों दीं? यदि अकारण दी होतीं, तो वह पक्षपाती कहलाता और समस्त जीव-जंतु परमात्मा से शिकायत करते कि अकेले मनुष्य को ही वे लाभ क्यों दिए? इस प्रश्न का उत्तर एक ही है कि परमात्मा ने मनुष्य को अपने प्रतिनिधि एवं सहयोगी के रूप में इसलिए सृजा, कि वह उसके संसार को अधिक सुंदर, सुव्यवस्थित, सुगंधित, समुन्नत बनाने में उसका हाथ बटाए। यदि अतिरिक्त सुविधाएँ मनुष्य को प्राप्त हैं, तो वे उसी महान् उद्देश्य को पूरा कर सकने के साधन मात्र हैं। इनको तृष्णा-वासना की पूर्ति में नहीं वरन् निर्वाह मात्र के लिए आवश्यक न्यूनतम उपभोग करके, अपने भौतिक और आत्मिक साधनों को विराट् ब्रह्म के लिए, विश्व मानव के लिए नियोजित करना चाहिए। यह सच्चाई जितनी स्पष्ट होने लगे और अंत:करण इस प्रयोजन में रस लेने लगे, तभी समझना चाहिए कि आत्मबोध हुआ, अज्ञान का आवरण हटा, माया के बंधन कटे और मन के प्रभाव का आलोक अंत:करण में फैला। ज्ञान का उद्देश्य इसी विचारणा को इस स्तर तक जानना है कि इसकी पूर्ति के लिए अंत:करण बेचैन हो उठे।

सूफी संत बीबी राबिया जिन दिनों अपनी ईश्वर भक्ति के लिए विख्यात थीं, उन्हीं दिनों इबलीस नामक प्रबल नास्तिक भी हुआ, जो दिन-रात राबिया की बुराई किया करता। एक दिन बीबी राबिया से एक व्यक्ति ने कहा-इबलीस तो आपकी दिन-रात बुराई करता है, आप क्यों नहीं करतीं? इस पर राबिया ने उत्तर दिया। वह भी तो उसी भगवान् का पुत्र है, जिसकी मैं हूँ, अपने भाई की बुराई मैं कैसे करूँ? इबलीस को इसका पता चला, तो राबिया के चरणों में नत-मस्तक हो गया।

ज्ञानयोग का प्रकाश जब अंत:करण में आता है, तब व्यक्ति को यह भान होता है कि उसे पेट और प्रजनन की तृष्णा-वासना जैसें पशु प्रयोजनों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के लिए मानव जीवन जैसी बहुमूल्य विभूति को नष्ट न कर डालना चाहिए, वरन् अपनी आंतरिक एवं बाहरी गतिविधियों का निर्धारण इस प्रकार करना चाहिए, जिससे ईश्वर की इच्छा को पूर्ण करने और उपलब्धियों को अभीष्ट उद्देश्य में लगाने का सुयोग बन पड़े। इस विचारणा को चिंतन और मनन द्वारा, स्वाध्याय और सत्संग द्वारा प्रबल और सक्रिय बनाना ही ज्ञानयोग है।

खलीफा उमर नमाज पढ़कर खड़े हुए, तो उन्हें एक फरिश्ता दिखाई दिया। उसके हाथ में एक छोटी-सी पुस्तक थी। खलीफा ने पूछा-इस पुस्तक में क्या लिखा है? फरिश्ते ने कहा-उनके नाम, जो भगवान की भक्ति किया करते हैं। उमर ने पूछा-इसमें मेरा भी नाम है क्या? फरिश्ते ने सारी पुस्तक पलट डाली, पर उसमें उमर का नाम नहीं निकला। उमर दु:खी खड़े थे, तभी दूसरा फरिश्ता आया। उसके हाथ में भी एक पुस्तक थी। उमर ने पूछा-इसमें क्या लिखा है? फरिश्ता बोला-उनके नाम, जिनका जप खुदा स्वयं करता है। उमर ने आश्चर्यचकित होकर पूछा-क्या दुनियाँ में ऐसे लोग हैं, जिनकी भगवान् उपासना करते हैं? फरिश्ते ने कहा-हाँ! जो संसार की सेवा में लगे रहते हैं, उनकी इबादत भगवान् स्वयं करता है, यह कहकर फरिश्ता अपनी किताब वहीं छोड़कर गायब हो गया। उमर ने पुस्तक उठाकर देखी, तो उसमें पहला नाम उन्हीं का था।

ज्ञानयोग का व्यावहारिक रूप अगला कदम कर्मयोग है। कर्त्तव्य की दृष्टि से आदर्श और उद्देश्य के लिए प्रत्येक कार्य करने के लिए अपने को मुस्तैदी के साथ जुटा देना कर्मयोग की साधना है। लोभ और मोह के लिए तृष्णा, वासना और अहंकार की पूर्ति के लिए अपने क्रिया-कलाप न हों, वरन् उनके पीछे यही भावना काम करे कि हम अपने मानवीय कर्त्तव्यों में किसी भी कारण राई-रत्ती अंतर न पड़ने देंगे। दूसरे लोग हमारे प्रति अनुचित व्यवहार करें, तो उसके समाधान के अन्य उपाय किए जाएँ, पर यह न सोचा जाए कि हम भी उसी स्तर पर उतर आएँ और अवांछनीय एवं अनुचित कार्य करने लगें। अपने समस्त कार्य आदर्शवादिता और उत्कृष्टता से ही भरे होने चाहिए। इस संबंध में अपनी आत्मा इतनी सुदृढ़ हो कि समस्त संसार में दुर्व्यवहार मिल कर भी उसे विचलित न कर सकें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वामी विवेकानंद ने अपनी साधना-उपासना छोड़ दी और कलकत्ता में फैले प्लेग के प्रकोप से लोगों को बचाने में जुट गए। एक भाई ने पूछा- महाराज? आपकी उपासना-साधना का क्या हुआ? स्वामीजी ने कहा- भगवान् के पुत्र दुःखी हों और मैं उनका नाम जप रहा होऊँ, क्या तुम इसे ही उपासना समझते हो?

पैसे की कमी के कारण जब वे रामकृष्ण आश्रम की जमीन बेचने को तैयार हो गए, तो फिर एक शिष्य ने पूछा-महाराज! आप गुरु स्मारक बेचेंगे क्या? विवेकानंद ने उत्तर दिया-मठ-मंदिरों की स्थापना संसार की भलाई के लिए होती है। यदि उसका उपयोग भले काम में होता है, तो इसमें हानि क्या है?

कहीं राग, कहीं द्वेष, कहीं रोष, कहीं क्लेष देखकर महर्षि पिप्पलाद का मन सामाजिक जीवन से विरक्त हो गया। वे वन में जाकर योगाभ्यास करने लगे। एक दिन वे अत्यंत अशांत चित्त बैठे थे, तभी उधर से सारसों का एक जोड़ा निकला। मादा सारस ने नर से पूछा-स्वामी! महर्षि पिप्पलाद और सुकर्मा की साधना में किसकी साधना श्रेष्ठ है? नर ने उत्तर दिया-सुकर्मा की, क्योंकि वह विरक्त होकर भी संसार की सेवा में जुटा हुआ है। भगवान भक्ति से नहीं, कर्त्तव्य पालन से कहीं अधिक प्रसन्न होते हैं।

पिप्पलाद पक्षियों की भाषा जानते थे, वे उठकर सुकर्मा के पास गए, तो देखा वह अपने माता-पिता की सेवा में तल्लीन हैं। पिप्पलाद ने सुकर्मा के मन में अद्‌भुत शांति देखी। उस दिन से उन्होंने सामाजिक कर्त्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करना प्रारंभ कर दिया।

अधिकार में कमी पड़ती हो, तो पड़े पर कर्त्तव्य पालन में अंतर न आने पाए। जीवन सादगी भरा जिएँ, जिससे उच्च विचारों को कार्यान्वित करना संभव हो जाए। जो जितना मँहगा, जितना महत्त्वाकाँक्षी जीवन जिएगा, उसकी आवश्यकताएँ उतनी ही बढ़ेंगी और उनके दावानल में ही उसकी शुभकामनाएँ समाप्त हो जाएँगी। जीवनोद्‌देश्य की पूर्ति के लिए न समय बचेगा, न श्रम, न मन और न धन। इसलिए उत्कृष्ट जीवन जीने वाले को सादगी ही वरण करनी चाहिए। अपने साधन महत्त्वाकाँक्षाओं की, संपन्नताओं की ललक में नहीं, वरन् गुण-कर्म-स्वभाव को परिष्कृत करने वाली सत्प्रवृत्तियों में नियोजित किए जाने चाहिए। नर से नारायण,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुरुष से पुरुषोत्तम, आत्मा से परमात्मा, पशु से देवता, क्षुद्र से महान् होने की महत्त्वाकाँक्षाएँ ही श्रेयस्कर हैं। दूरदर्शी दौलत जमा करने, अहंकार पुजवाने और वासना की आग में जल मरने के लिए नहीं जीते, वरन् वे ऐसे अनुकरणीय पद चिह्न छोड़ते हैं, जिन पर चलकर अंसख्य मनुष्य महानता की दिशा में अग्रसर हो सकें। ऐसा आदर्श जीवन बनाना ही कर्मयोग की साधना है।

सिखों के चौथे गुरु रामदास के अनेक शिष्य थे, वे सब एक से एक बुद्धिमान और तार्किक थे। अर्जुनदेव नाम का एक दूसरा लड़का भी था, जो केवल गुरु के आदेश पालन और उनके प्रति श्रद्धा को ही अपनी सच्ची शिक्षा व संपत्ति मानता था। उसे आश्रम के बर्तन माँजने का काम दिया गया था, इसलिए दूसरे लड़के उसे सदैव ही उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे, पर जब एक दिन उत्तराधिकार की बात आई, तो गुरु ने यह कहते हुए कि "लोकसेवक की सबसे बड़ी योग्यता श्रद्धा और अनुशासन है", उन्होंने अर्जुनदेव को ही अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। अन्य शिष्य यह देखकर आश्चर्यचकित रह गए।

स्वर्ग में तरह-तरह के सुखोपभोग मिलने पर विद्रूप प्रसन्न नहीं थे। इंद्र उनके पास गए और पूछा-महाराज! यहाँ आपको कुछ त्रुटि दिखाई दे रही है क्या? हाँ देवराज! विद्रूप ने कहा-यहाँ और सब कुछ तो है, पर यहाँ कर्म का अभाव है। बिना कर्म के मुझे स्वर्ग भी पसंद नहीं इसलिए मुझे तो कर्मलोक धरती पर ही पहुँचा दो, जहाँ लोगों की सेवा का फिर से आनंद ले सकूँ।

इंद्र बोले-सच है महाराज! जिसे कर्म से स्वर्ग मिलता है, उसे स्वर्ग से भी महान् होना चाहिए।

भक्ति का अर्थ है-प्यार, भक्तियोग का अर्थ है-प्यार का विकास। ईश्वर से प्रेम करने का, परमात्मा से भक्ति करने का उद्देश्य है, इस विराट् ब्रह्म, विश्व मानव से प्रेम करना। यह समस्त संसार ही ईश्वर का विराट् रूप है। सब में समाई हुई आत्मा का सम्मिलित रूप परमात्मा है। समष्टि-समाज एवं विश्व चेतना के रूप में हम ईश्वर का प्रत्यक्ष दर्शन कर सकते हैं। अर्जुन और यशोदा को दिव्य चक्षु देकर भगवान ने अपना वास्तविक विराट् रूप इसी प्रकार दिखाया है। हमारे दिव्य चक्षु खुलेंगे, तो समस्त संसार ईश्वर का रूप दिखाई देगा और उनके साथ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मीयता, सद्भाव, सेवा, उदारता का प्यार भरा व्यवहार करने को जी मचलेगा। वसुधैव कुटुंबकम् की भावना जागेगी। जिस प्रकार अपने परिवार के प्राणियों को समुन्नत बनाने की बात याद रहती है, उसी प्रकार समस्त विश्व को समुन्नत बनाने के लिए अपने आप को जुटा देने, खपा देने की आकांक्षा प्रबल होगी। तब लोकमंगल के लिए बहुत कष्ट, श्रम, प्रयत्न और त्याग करना जीवन की पहली आवश्यकता प्रतीत होगी और इस उद्देश्य के लिए निरंतर कटिबद्ध रहना दैनिक जीवन का एक अविच्छिन्न अंग बन जाएगा। यही भक्तियोग का वास्तविक स्वरूप है।

ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग की जीवन साधना वस्तुतः अति उच्चकोटि का सर्वसुलभ योगाभ्यास है। इस त्रिविध योग की विचारणा और कार्यपद्धति यदि हमारे व्यावहारिक जीवनक्रम में घुलमिल जाए, तो परिवर्तित कर देने का जीवन लक्ष्य सहज ही पूर्ण हो सकता है।

प्रश्न

१. योग की परिभाषा बताओ?
२. शारीरिक योग कितने है, उससे क्या लाभ मिलता है?
३. मानसिक योग कितने प्रकार के होते हैं?
४. योग का प्रयोजन और सदुपयोग क्या है?
५. ज्ञानयोग किस प्रकार बंधन खोलता है?
६. कर्मयोग की व्याख्या करो?
७. सादगी श्रेष्ठता का निर्माण कैसे करती है?
८. भक्तियोग का क्या अर्थ है?
९. वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना कैसे जागती है?
१०. आत्मा परमात्मा में किस प्रकार मिलती है?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आध्यात्मिक जीवन के पाँच कदम

अध्यात्मवादी उज्ज्वल और उत्कृष्ट जीवन की गतिविधियाँ सामान्य नर-पशुओं की तरह पेट और प्रजनन, वासना, तृष्णा पर आधारित नहीं होतीं, वरन् उच्च आदर्शवादिता ही उनकी आकांक्षाओं और प्रेरणाओं की जननी होती है। अध्यात्मवादी वह है, जो आत्मा और शरीर को एक नहीं दो मानता है। दो नहीं, एक को अधिपति और दूसरे को उपकरण समझता है। यह अतंर जिसकी दृष्टि में स्पष्ट हो गया, वह काया की सुख-सुविधा, इंद्रियों की लिप्सा और झूठी वाहवाही, शानशेखी को महत्त्व न देकर इस बात को महत्त्व देता है कि आत्मकल्याण और आत्मविकास जैसे महान् प्रयोजन कैसे करें? इसी धुरी के इर्द-गिर्द उसकी आकांक्षा, अभिलाषा, विचारणा घूमती हैं और इसी प्रयोजन के लिए उसकी क्रियापद्धति और रीति-नीति का निर्धारण होता है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए यदि शारीरिक सुविधाओं, भौतिक संपदाओं में कुछ कमी आती है, तो उसे रत्ती भर भी रंज नहीं होता, क्योंकि वह जानता है कि शरीर एक उपकरण मात्र है। इसकी सुविधाएँ घटती हैं, तो आत्मा के उत्कर्ष का द्वार खुलता है। इससे हानि कम और लाभ अधिक है। इस मान्यता से प्रेरित जीवन को अध्यात्मवादी अथवा देव जीवन कह सकते हैं।

आइजन हावर के राष्ट्रपति चुने जाने पर उन्हें बहुत से मित्रों, प्रशंसकों ने उपहार दिए। उन उपहारों की प्रदर्शनी लगाई गई। उपस्थित मेहमानों को संबोधित कर उन्होंने उपहार में मिले एक झाड़ू को हाथ में उठाते हुए कहा-यह है मेरा सर्वोत्तम उपहार, जो सदैव सेवा और कर्त्तव्य पालन की याद दिलाता रहेगा।

गेरुए वस्त्र पहने स्वामी विवेकानंद की ओर इशारा करके एक अमेरिकन स्त्री ने एक अमेरिकन से कहा-जरा इन महोदय की पोशाक तो देखो? विवेकानंद ने अंग्रेजी में ही कहा-देवी! आपके देश में सभ्यता के उत्पादक दर्जी और सज्जनता की कसौटी कपड़े माने जाते हैं, पर मैं जिस देश से आया हूँ, वहाँ के लोगों की पहचान सरलता और चारित्रिक उत्कृष्टता से की जाती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसके विपरीत भौतिकवादी पशु जीवन वह है, जिसमें सारी आकांक्षाएँ शारीरिक सुविधा और पार्थिव उपलब्धियों के लिए लालायित और नियोजित रहती हैं। हमारे पास पैसा अधिकाधिक हो, ऐश-आराम के साधन अधिक बढ़ें, इंद्रिय भोगों की पूरी छूट हो, शौक-मौज-मनोरंजन के साधनों की कमी न रहे, लोग अपना रौब मानें और वाहवाही की झड़ी लगा दें। बस, इतनी भर लालसा जिनकी है, वे इस स्तर का ताना-बाना बुनते हैं। सारा समय, सारा श्रम, सारी क्षमता, सारी योग्यता इसी गोरखधंधे में समाप्त हो जाती है। आत्मकल्याण की बात तो तब याद आए, जब आत्मा नाम का कोई अलग तत्त्व या तथ्य उनके सामने हो। शरीर ही उनके लिए आत्मा है, वही परमात्मा है, वही सर्वस्व है। शरीर और आत्मा के स्वार्थ भिन्न-भिन्न हैं और आमतौर से एक-दूसरे से टकराते हैं। जो इस रहस्य को नहीं समझता, उसे यह सोचने की फुर्सत कहाँ है कि आत्मा की आवश्यकताओं का हनन करके शरीर की सुविधाएँ बढ़ाने में बुद्धिमानी नहीं है। चंद रोज की जिंदगी में काया को क्षणिक सुख देने के प्रलोभन में जो जीवन लक्ष्य और आत्मकल्याण का उद्देश्य खो बैठेगा, उसे दुनियादारी की दृष्टि से तो बुद्धिमान न कहा जाएगा, पर जन्म-जन्मांतरों का भविष्य इतने भर के लिए अंधकारमय बना लेने की दृष्टि से तो उसे महामूर्ख के अतिरिक्त और कुछ कहा, समझा नहीं जा सकेगा।

मुगलों के साथ हुए युद्ध में मराठों की विजय हुई। उन्होंने मुगलों के खजाने के साथ उनकी बहुत-सी वस्तुएँ भी लूट लीं। सैनिक मुगल खानदान की एक रूपवती कन्या को भी पकड़ लाए। उसे शिवाजी के सामने इस ख्याल से उपहार स्वरूप प्रस्तुत किया कि उससे शिवाजी बहुत प्रसन्न होंगे और बहुत-सा इनाम देंगे, पर बात उल्टी निकली। शिवाजी ने कहा-मुगल है तो क्या, नारी सर्वत्र पवित्र है। फिर उन्होंने उस युवती की ओर देखकर कहा-तुम्हारी जितनी सुंदर मेरी माता होती, तो मैं भी कितना सुंदर होता, यह कहकर उन्होंने युवती को मुगलों के डेरे तक पहुँचा दिया।

अध्यात्मवादी जीवन मनुष्य के गौरव की दृष्टि से, उज्ज्वल भविष्य की दृष्टि से, सामाजिक सुव्यवस्था की दृष्टि से और सर्वोपरि आत्मशांति एवं आंतरिक संतोष की दृष्टि से नितांत आवश्यक और अति महत्त्वपूर्ण है। ऐसा जीवन जीने के लिए प्रेरणा हो और अभिलाषा जागे, उसे सच्चे अर्थों में सौभाग्यशाली और दूरदर्शी कहना चाहिए। ऐसा दिव्य जीवन जीने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के लिए किसी को कपड़े रंगने, घर छोड़कर भीख माँगने या देश बदलने की जरूरत नहीं है। थोड़े समय आत्मचिंतन और ईश्वरीय प्रकाश की प्राप्ति के लिए उपासना करना उचित है, पर इसका प्रभाव तो इस कसौटी पर आँका जाएगा कि अध्यात्मवाद के सिद्धांतों और आदर्शों को किस सीमा तक हमारी विचारणा, आस्था और कार्यपद्धति में कितना स्थान मिला? शरीर और मन को सुख देने वाली तृष्णाओं से मन को मोड़कर इन्हें आत्मकल्याण के प्रयोजनों में किस सीमा तक लगाया जा सका, इस मार्ग पर चलने वाले को आरंभिक कदम (१) सादा जीवन, (२) उच्च विचार की संगति मिलाते हुए चलना पड़ता है। विलास और आडंबर की पूर्ति के लिए जो ढेरों समय और ढेरों पैसा लगाता रहता है, उसे बचा कर ही आदर्शवादी प्रयोजनों के लिए अपनी क्षमता का एक अंश लगाया जा सकना संभव हो सकता है। जो जितना खर्चीला और आडंबर पूर्ण जीवनक्रम चला रहा होगा, उसकी उतनी ही आवश्यकताएँ उलझने तथा चिंताएँ तथा व्यस्तताएँ बढ़ेंगी, इसलिए दिव्यतत्त्व का आरंभ मितव्ययता से किया जाता है। उच्च विचारों का सीधा संबंध सदाचार, नम्रता, सादगी और साधना से है। औरों से अधिक अपना प्रदर्शन करने की या सुख भोगने की लिप्सा को जो जितना घटाता चलेगा, उसे अपने तथा अपने परिवार के निरर्थक खर्च और आडंबर अनावश्यक लगेंगे और आत्मकल्याण के लिए, लोककल्याण के लिए अधिक समय, मन और शक्ति लगा सकना संभव हो जाता है। यह परिवर्तन जहाँ भी दिखाई दे, वहाँ आध्यात्मिकता की प्रकाश की किरणें अवतरित होनी आरंभ हो गई, यह माना जा सकता है।

बाजीराव पेशवा और नबाव हैदराबाद के बीच युद्ध छिड़ गया। नबावी सेना हार गई और बचाव कर किले के अंदर चली गई। मराठों ने उस पर घेराबंदी डाल दी। नबाव की सेनाएँ भूख से मरने लगीं। मंत्रियों ने यह खबर बाजीराव पेशवा को दी और कहा-यह उपयुक्त समय है, हमें उन पर आक्रमण कर देना चाहिए, तो पेशवा ने उत्तर दिया-भूखों पर आक्रमण करना वीरता नहीं कायरता है। अभी तो उन्हें अन्न की जरूरत है, यह कह कर उन्होंने अपने भंडार से बहुत-सी रसद नबाव के किले में भिजवा दी। नबाव इस आत्मीयता से इतना प्रभावित हुआ कि उसने युद्ध का इरादा छोड़कर पेशवा से संधि कर ली।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इधर परीक्षाएं चल रही थीं, उधर विद्यार्थी का पड़ौसियों की चिट्ठी-पत्री लिखने का काम जारी था। एक दिन उसकी माताजी ने कहा-पढ़ाई का भी कुछ ध्यान है या यूहीं बेगार में समय बर्बाद करते रहोगे। बच्चे ने विनम्र उत्तर दिया-माँ! यदि पढ़ाई से दूसरों का कुछ हित न हुआ, तो ऐसी पढ़ाई-लिखाई से क्या लाभ? यह उत्तर देने वाला छात्र ही चलकर महात्मा हंसराज के नाम से प्रख्यात हुआ।

उपयुक्त दो चरणों के अतिरिक्त आध्यात्मिक जीवन के अगले तीन चरण और हैं, जो (३) मातृवत् पर दारेषु, (४) पर द्रव्येषु लोष्टवत्, (५) आत्मवत् सर्वभूतेषु के रूप में उठते हैं। यदि साहसपूर्वक इन्हें अपना लिया जाए, तो इस यात्रा का आगामी क्रम आसानी से चल पड़ेगा। जितनी कठिनाई है, वह उपरोक्त आरंभिक पाँच चरणों में ही है। स्त्रियों के प्रति पवित्रता की उच्च भावनाएँ रखना अध्यात्मवादी के लिए आवश्यक और स्वाभाविक है। नर और नारी में तत्त्वत: कोई अंतर नहीं। दोनों की शारीरिक, मानसिक बनावट में यत्किंचित ही अंतर है। प्रजनन की आवश्यकता पड़ने पर काम क्रीड़ा की उपयोगिता हो सकती है, पर सामान्य समय में जिस प्रकार पुरुष-पुरुषों के प्रति, नारी-नारियों के प्रति काम विचार मन में नहीं लाते, उसी प्रकार नर और नारी में भी परस्पर स्वाभाविक साधना बनी रह सकती है। कामुक दृष्टि विशुद्ध रूप से एक मनोविकार है, जो संभव-असंभव है का विचार छोड़कर उच्छृंखल मृगतृष्णा में अकारण मन को भटकाता और सारे चिंतन तंत्र को अस्त-व्यस्त एवं दूषित करके रख देता है। नर, नारी की और नारी, नर की शारीरिक, मानसिक, आत्मिक सुंदरता एवं महानता को देखे समझें और प्रसन्नता व्यक्त करें, इसमें हर्ज नहीं, पर यदि कामुकता, उपभोग, जुगुप्सा जैसी शोषक एवं पतनोन्मुख दृष्टि से एक-दूसरे को देखें, तो वह दृष्टि दोष असंख्य मानसिक एवं सामाजिक उलझनें, विकृतियाँ उत्पन्न करेगा। नारी को आयु की दृष्टि से माता, बहिन और पुत्री की दृष्टि से देखना चाहिए। अपनी पत्नी को सखा, सहचर, मित्र और भाई जैसे समता वर्ग में रखा जा सकता है। कामुकता की पाप दृष्टि नितांत अनावश्यक और अस्वाभाविक है। प्रजनन के लिए उपयुक्त अवसर पर कुछ समय के लिए अपने दांपत्य जीवन में थोड़ी आवश्यकता पड़ सकती है। उसके अतिरिक्त शेष सारा समय और मन भिन्न लिंग वाले व्यक्ति के प्रति स्वाभाविकता और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पवित्रता से ही ओत-प्रोत रहना चाहिए। यह दृष्टिशोधन ही सच्चे अर्थों में ब्रह्मचर्य है। इसका विवाहित, अविवाहित सभी पालन कर सकते हैं और अपने आत्मबल और ब्रह्मवर्चस्व को अभीष्ट मात्रा में बढ़ा सकते हैं। धन ठीकरी के समान व्यर्थ और अनुपयोगी मानना आध्यात्मिकता का चौथा चरण है। हम केवल श्रमअर्जित, ईमानदारी और उचित साधनों से कमाए हुए धन की इच्छा करें और वह जितना भी न्यूनाधिक कमाया जा सकता हो उतने में ही निर्वाह का बजट बनाएँ।

आचार्य रामानुज उपदेश दे रहे थे। भगवान् प्राणि मात्र में समाए हुए हैं, सब में अपनी ही आत्मा देखनी चाहिए। उपदेश एक चांडाल भी सुन रहा था। जैसा ही प्रवचन समाप्त हुआ, वह आचार्य प्रवर के पैर छूने को बढ़ा। आचार्य ने उसे देखा, तो क्रुद्ध हो उठे और डाँटा-मुझे छुएगा क्या? चांडाल ठिठक गया और बोला-महाराज! तो फिर आप बताइए कि मैं अपने भगवान् को कहाँ ले जाऊँ? आचार्य की आँखें खुल गईं। चांडाल को अंक में भरते हुए उन्होंने कहा-तात्? क्षमा करो। आज तुमने मेरी आँखें खोल दीं।

एक व्यक्ति तीर्थयात्रा पर जा रहा था। सुरक्षा की दृष्टि से उसने अपने पाँच हजार के सिक्के संत रैदास को सौंप दिए। रैदास ने रुपयों की पोटली वहीं छप्पर में खोंस दी। कुछ ऐसा हुआ कि वह आदमी तीर्थयात्रा से पाँच वर्ष बाद लौटा। उसने जाकर रैदास से कहा-मेरे रुपए कहाँ हैं? रैदास ने छप्पर की ओर इशारा करते हुए कहा-जहाँ तुमने रखे थे, वहीं से उठा लो। पराए धन को मिट्टी की तरह देखने वाले संत की इस सच्चाई को देखकर वह व्यक्ति दंग रह गया।

आध्यात्मिकता का पाँचवाँ चरण यह है कि हम अपने समान सब के दुःख-सुख को समझें। दूसरों के सुख में अपने सुख की और दूसरे के दुःख में दुःख की अनुभूति जोड़ें। अपना सुख बाँटने और दूसरों का दुःख बाँट लेने की आकांक्षा, हमें वसुधैव कुटुंबकम् के उच्च आत्मस्तर तक पहुँचा देती है। पीड़ित मानवता की सेवा करने की इस स्थिति में उत्कट अभिलाषा जागती है और अपने चारों ओर बिखरे पड़े पिछड़ेपन, अज्ञान, अनाचार, पाप और पतन को हटाकर उसके स्थान पर मानवीय देव आदर्शों की प्रतिष्ठा करने का उल्लास उमड़ता है। आत्मवत् सर्वभूतेषु की भावना से ओत-प्रोत मनुष्य जिस तरह अपने व्यक्तिगत कष्टों ओर अभावों को दूर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करने के लिए प्रयत्नशील रहता है, उसी तरह व्यापक क्षेत्र में मानवता पर लगे कलंक को धो डालने और धरती पर स्वर्ग अवतरण जैसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करने के लिए व्याकुल रहता है और क्षुद्र स्वार्थों की कीचड़ में से निकल कर लोकमत के लिए अपने आपको समर्पित कर देता है। आत्मिक जीवन जीने वाले को उपर्युक्त पाँच कदम उठाने का जैसे ही साहस हुआ कि उसकी अगली मंजिल सहज ही पूरी होने लगती है और आत्मा को परमात्मा के रूप में परिणत करने का प्रत्यक्ष आनंद इसी जीवन में मिलने लगता है।

प्रश्न

१. अध्यात्मवादी की आकांक्षाओं एवं प्रेरणाओं का मूल स्रोत क्या होता है?
२. आध्यात्मवादी या देव जीवन किसे कहते हैं?
३. भौतिकवादी जीवन क्यों महत्त्वपूर्ण है?
४. जीवन में सदाचार, नम्रता, सादगी एवं साधना की क्यों आवश्यकता है?
५. आध्यात्मिक जीवन के पाँच प्रमुख तत्त्वों पर प्रकाश डालिए?
६. दृष्टि दोष दूर करने के लिए क्या करना चाहिए?
७. दृष्टि शोधन से क्या समझते हो?
८. मितव्ययिता एवं ईमानदारी क्यों आवश्यक है?
९. आत्मा को परमात्मा के रूप में परिणत करने का प्रत्यक्ष आनंद कब व कैसे मिलता है?

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org